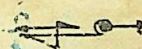


जीवन का शाप

Jeeran ka Shap

लेखक
Jeerandas
 श्री जीवनदास बी० ए०,
 हेडमास्टर ।



Sri Pratap Singh
 Library
 Srinagar.

प्रकाशक
Chodari and Son's
 चौधरी एण्ड सन्स,
 पब्लिशर्स एण्ड बुक्सेलर्स,
 बनारस सिटी । *Bemares*

मसे }
 करण }

नवम्बर

{ मूल्य
 { १॥)

१९३७

19.37

••स्केड/Scanned••

प्रकाशक

चौधरी एण्ड सन्स,
नीचीबाग, बनारस ।

Acc : no: 12197

Rs 1-8-0

26



Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

मुद्रक

मथुराप्रसाद गुप्त,
जॉब-प्रेस, कर्नघण्टा, काशी

जीवन का शाप

संध्या का समय है। एक टूटे घाट के पास बालकों का एक समूह आँख-मिचौनी खेल रहा है। समूह में पाँच-चार बालक हैं और एक कन्या। एक लड़का दूसरे लड़के की आँख मूँदता है और बाकी लड़के उसको चपत लगाते हैं। जिस लड़के की आँख बन्द रहती है, उसे बताना पड़ता है कि किसने पहले चपत लगाई। सभी लड़के खेल में इतने मग्न हैं कि उन्हें इसकी कोई चिन्ता नहीं कि घर कब जाना है। धीरे-धीरे अन्धकार ने अपना राज्य पूर्ण-रूप से जमा लिया। अबकी लड़की को चपत लगाने

एक

जीवन का शाप

की बारी थी। एक तेरह वर्ष के बालक ने उसकी आँख मूँदी, परन्तु अन्य लड़कों ने चपत लगाने से इनकार किया। सबों ने एक स्वर से कहा—कमला ही आज की चोर रही, रात बहुत हो गई है। आज का खेल यहीं से समाप्त कर दो, कल फिर इसी जगह से प्रारम्भ होगा। लड़की की आँख अभी बन्द थी। उसी अवस्था में वह बोली—मैं चोर बनकर नहीं रहूँगी। बालकों ने बहुत आनाकानी की, पर बालिका सहमत न हुई। जब बालकों ने देखा कि बालिका का मुख रोना-सा हो आया है तो खेल फिर शुरू किया गया। चपत लगी पर चोर न पकड़ा गया। फिर चपत लगाने की बारी आयी। पहले वाले लड़के ने ही कमला की आँखें मूँदी। इसी बीच बड़ा शोर-गुल मचा। कमला की आँखें खोल दी गयीं तो देखा कि एक पुरुष उन्हीं बालकों में से एक का कान पकड़े घिसियाये लिये जा रहा है और कहता जाता है—घर चला तो देखता हूँ, रात हो गयी, खेल से पेट ही नहीं भरा। इसीसे पेट भरेगा ? न पढ़ना है, न लिखना। चार लुँगाड़ों को जुटा लिया और दिन रात खेल।

बाकी सब लड़के गायब हो गये थे। वह आदमी बड़बड़ाता हुआ लड़के को खींच ले गया। कमला अकेली रह गयी। चारों ओर अन्धकार छा गया था। केवल घाट का एक दीपक टिमटिमा रहा था। अब कमला को होश हुआ। खेल का नशा उतरते ही

जीवन का शाप

उसकी समझ में आया कि मैंने कितनी बड़ी गलती की जो अब तक खेलती रही। बालक की दशा से उसे विश्वास हो गया कि मैं भी घर पर दण्ड पाऊँगी। रात्रि का समय था, घर का रास्ता ठीक से मालूम न था। नौ वर्ष की बालिका क्या करे? मोहन, मोहन कर चिल्लाने लगी। बालिका के रोने की आवाज़ सुनकर जिस लड़के ने उसकी आँख मूँदी थी और डर के मारे नीचे तट के पास छिप गया था, दौड़ा हुआ आया और बोला—
अरे ! तुम अभी तक घर नहीं गयी ?

कमला—नहीं भैरो ! मुझे छोड़कर सभी भाग गये। मैं तुम्हारा हाथ जोड़ती हूँ घर पहुँचा दो, माताजी बहुत मारेंगी। मैं नहीं आती थी। मोहन मुझे खींच लाया और छोड़कर भाग गया। माताजी बहुत मारेंगी, इतना कहकर बालिका रोने लगी। भैरो ने उसे धीरज बँधाते हुये कहा—चलो मैं तुम्हें पहुँचा दूँ।

कमला—तुम्हें डर तो नहीं लगेगा ?

भैरो—मुझे डर काहे का ? चलो जल्दी, रात होती जा रही है।

कमला—माताजी मारेंगी।

भैरो—चलो मैं बचा लूँगा।

कमला—कहीं तुम्हें भी मारने लगें तब ?

भैरो—नहीं मुझे नहीं मारेंगी। मैं तुम्हें भी बचा लूँगा। घबड़ाओ मत, जल्दी चलो। तुम्हारा मकान तो मोहन के घर से दूर है न ?

तीन

जीवन का शाप

कमला—नहीं, ठीक बगल में ।

भैरो—अच्छा तो जल्दी चलो ।

कमला—माताजी मारेंगी ।

भैरो—पगली कहीं की । मैं कहता हूँ, मैं बचा लूँगा, पर नहीं मानती । क्या यहीं बैठी रहेगी ?

कमला—कैसे बचाओगे ?

भैरो—चलो भी तो ।

कमला अनिच्छा-पूर्वक भैरो के साथ चली । मार्ग में यह निश्चय किया जाने लगा कि कमला को कैसे बचाया जाय ? भैरो ने कहा—तुम कह देना, मैं रास्ता भूल गयी थी, इसीसे देर हुई है और मैं कह दूँगा कि इसे रोती देख पूछ-ताछ कर मार्ग बताया । वस फिर नहीं मारेंगी । शीघ्र ही दोनों कमला के घर पहुँच गये । कमला की माता चन्द्रकला बहुत ही चिन्तित घर में बैठी थी, पर कोई पास न था कि लड़की का पता लगाये । कमला को आती देख चन्द्रकला की चिन्ता कम हुई, पर बाहरी रोष दिखाती हुई बोली—इतनी रात तक कहाँ घूम रही थी ?

कमला ने रोकर कहा—मैं रास्ता भूल गयी थी इसीसे देर हुई ।

चन्द्र०—तू तो यहाँ से मोहन के घर खेलने गयी थी फिर रास्ता कैसे भूल गयी ?

कमला—वहाँ से घर आने के लिए चली तो रास्ता भूल गयी ।

जीवन का शाप

चन्द्र०—भूठी कहीं की। बगल में तो मकान है और रास्ता भूल गयी, मैंने पूछा तो पता चला यहाँ से चली गयी। सच बता कहों गयी थी?

कमला—(रोकर) कहीं नहीं, रास्ता भूल गयी थी।

चन्द्रकला ने भैरो की ओर देखकर पूछा—तुम इसके साथ कैसे आये ?

भैरो—यह घाट पर खड़ी रो रही थी। मैंने घर का पता पूछ, पहुँचा दिया। अब मैं जाता हूँ। मारिणुगा नहीं, मारे डर के आती नहीं थी, मैं जबरदस्ती खींच लाया।

चन्द्र०—बेटा, ठहरो ! जाओ मत, तुमने मेरी कमला को पहुँचाकर बड़ा काम किया, नहीं तो रात को कहाँ खोजती ? कुछ मिठाई खालो।

भैरो—भूख नहीं है।

चन्द्रकला ने दो लड्डू लाकर भैरो के हाथ पर रखा और बड़े प्रेम से उसके नाहीं नाहीं करने पर भी खिला ही कर छोड़ा।

जब भैरो जाने लगा तो बोली—बेटा ! कल फिर आना तो इसके बाप से तुम्हारी भेंट करा दूँगी।

भैरो के जाने पर चन्द्रकला बोली—लड़का बड़ा सुशील मालूम देता है।

कमला—हां, मां ! भूलकर मैं गङ्गाजी के किनारे पहुँच गयी थी, मेरे रोने की आवाज़ पाकर इसने मुझे यहाँ पहुँचा दिया।



२

दूसरे दिन सबेरे ही भैरो कमला के घर गया। कमला के पिता शशिकान्त तुरन्त ही गङ्गा स्नान कर लौटे थे। भैरो का हाल रात ही सुन चुके थे। उसे देखकर बड़े प्रसन्न हुए। पूछा—
बेटा ! कहां रहते हो।

भैरो बोला—बगल के हो महल्ले में रहता हूँ।

शशि०—पढ़ते भी हो ?

भैरो—हां ! अंग्रेजी स्कूल की छठीं श्रेणी में पढ़ता हूँ।

शशि०—तुम्हारे पिता क्या करते हैं ?

छः

जीवन का शाप

भैरो—पिता नहीं हैं, माताजी की मेहनत मजूरी से हम दोनों का गुजर होता है।

शशि०—तुम्हें और कोई नहीं है ?

भैरो—नहीं, केवल हम दो ही हैं।

शशि०—तुम हमारे यहां आया करो। कमला के साथ खेला कूदा करो। मैं तुम्हें पुत्रवत् प्यार करूंगा।

भैरो की आँखों में कृतज्ञता की आभा झलकने लगी। भैरो अनाथ था। उसने पिता के प्यार का सुख कभी न देखा था। शशिकान्त पर उसे बड़ी श्रद्धा हुई। चन्द्रकला के व्यवहारों ने तो उसे पहिले ही वश में कर लिया था।

शशिकान्त ने कमला को पुकार कर कहा—देख ! भैरो तेरे साथ खेलने आया है।

कमला कल भैरो द्वारा मार खाने से बची थी। उसे भैरो पर बड़ी श्रद्धा हो गयी थी। आकर भैरो का हाथ पकड़ ऊपर ले गयी। दोनों साथ-साथ खेलने लगे।

कमला ने कहा—तुमने मुझे खूब बचाया।

भैरो—और इसके इनाम में मुझे लड्डू खाने को मिले।

कमला—मैं तुम्हारा बड़ा एहसान मानती हूँ।

भैरो—भला मुझमें क्या शक्ति है कि किसी के साथ भलाई कर सकूँ और वह एहसान माने।

सात

जीवन का शाप

कमला—अच्छा, तो तुम अब रोज मुझसे खेलने आओगे न ?

भैरो—अगर तुम चाहोगे तो जरूर आऊँगा ।

कमला—बाबूजी ने खेलने के लिए कहीं जाने की मनाही कर दी है । कहते थे, भैरो और मोहन से कह दूँगा यहीं आकर खेला करेंगे, कहीं जाना नहीं होगा ।

भैरो—तो क्या मेरे आने से तुमको खुशी होगी ?

कमला—तुम न आओगे तो किसके साथ खेलूँगी ?

भैरो—यदि तुम चाहती हो तो अवश्य आऊँगा ।

लगभग आठ बजे तक दोनों खेलते रहे । तत्पश्चात् भैरो अपने घर चला गया, उसे स्कूल जाना था ।

भैरो रोज एक बार कमला के पास आता । एक दूसरे को देखे बिना दोनों को कल न पड़ती । कभी दोनों ताश खेलते, कभी बात चीत करते । कभी भैरो गुरु बनता और कमला शिष्य । इसी प्रकार पढ़ाई लिखाई भी होती । मोहन भी दो-चार रोज शशिकान्त के आग्रह से आया, पर दीवारों के भीतर की वायु में खेलना उसे पसन्द न था, अतः उसका आना बन्द हो गया ।

भैरो और कमला को पूर्ण स्वच्छन्दता थी । दोनों की घनिष्ठता दिन पर दिन बढ़ती गयी । इसी प्रकार चार वर्ष बीत गये । अब कमला भी समझने लगी थी कि संसार केवल ताशों का खेल नहीं है और भैरो भी अपनी जिम्मेदारी समझ रहा

आठ

जीवन का शाप

था। उसे यह भी भास होने लगा था कि यह खेल अब अधिक दिन तक नहीं चल सकता।

दसवीं श्रेणी की परीक्षा पास थी। भैरो पढ़ने में तन्मय था। बराबर प्रथम आता था, पर अर्ध-वार्षिक परीक्षा में उसका स्थान द्वितीय रहा। इसी से वह इस बार जो-जान से कोशिश कर रहा था। आजकल वह कमला के पास बहुत कम बैठता, पर एक बार आता अवश्य था। बिना उसे देखे पढ़ने में चित्त ही नहीं लगता था। भैरो इस बात को समझता था कि कमला के यहाँ का आना जाना कमही करने में कुशल है। एक दिन उसने निश्चय किया कि आज न चलूँगा, देखूँ जी कैसे नहीं पढ़ने में लगता। अतः वह न गया, दूसरे दिन अंग्रेजी की परीक्षा थी, पढ़ने में ही लगा रहा। यदि चित्त न लगता तो दस पाँच मिनट के लिए पुस्तक बन्द कर देता, फिर पढ़ने लगता और इसी तरह आठ बज गये। पढ़ता तो वह दिन भर रहा पर अब जो दुहराने लगा तो मालूम हुआ कि सब भूल रहा है। बड़े असमञ्जस में पड़ा। सोचने लगा क्या करूँ? चलूँ मिल आऊँ, तब फिर पढ़ूँ। पर ऐसी मैत्री किस काम की कि एक दिन न देखूँ तो कल न पड़े। जाने की इच्छा होती थी पर अपनी आदत पर आपही क्रोध आता था। अन्त में निश्चय हुआ कि परीक्षा भर तो एक बार रोज जाना ही होगा, नहीं तो परीक्षा में उत्तीर्ण होना असम्भव है। फिर अपने मनको मना लूँगा।

नव

जीवन का शाप

कपड़े पहनकर चल पड़ा। माता ने पूछा—कहां जाते हो ?
बोला—पढ़ते पढ़ते तबीयत ऊब गयी है, जरा घूम आऊँ
तो पढ़ूँ।

माता कुछ न बोली। माता का टोकना भैरो को अच्छा न लगा
पर वश क्या था ? दो ही मिनट में कमला के घर पहुँच गया।

चन्द्रकला ने पूछा—आज बड़ी देर करके आये ?

भैरो बोला—परीक्षा की तैयारी कर रहा था।

माजूम हुआ कमला ऊपर है। धड़धड़ाता हुआ ऊपर पहुँचा। कमला
एक चारपाई के सामने लैम्प रखकर पड़ी २ एक चित्र देख रही थी। वह
चारपाई पर पड़ी थी और उसके बाल इधर उधर तकिये पर बिखरे थे।
पैरों की आहट पर कमला ने चित्र को तकिये के नीचे छिपा दिया।
भैरो ठिठक गया और कमला भी सकपकाकर देखने लगी कि कौन
आ रहा है ? एक श्वेत वस्त्र धारण किये, तकिये के सहारे चारपाई
पर बैठ कर चञ्चल नेत्रों से अगन्तुक को दृढ़ती हुई कमला भैरो को
बड़ी ही सुन्दर माजूम पड़ी। कमला की आँखें कुछ भींगी-सी
माजूम होती थीं। भैरो भीतर गया। कमला उठ बैठी और बोली—
अरे यह क्या भैरो ! इतनी रात को ! मैं तो समझती थी कि आज
न आओगे।

भैरो—मैं तो चाहता यही था कि आज टाल जाऊँ, पर न जाने
कौन-सी अज्ञात शक्ति यहाँ खींच लायी।

जीवन का शाप

कमला—शक्ति खींच लाई ? क्या तुम इतने निष्ठुर हुए जा रहे हो कि एक बार भी आने में कष्ट होता है ?

भैरो—नहीं कमला ! निष्ठुर नहीं, परीक्षा है । प्रथम आना है न ।

कमला—तो क्या मेरी परीक्षा लेकर प्रथम आओगे ?

भैरो—तुम्हारी परीक्षा कैसी ?

कमला ने कुछ उत्तर न दिया । कातर दृष्टि से भैरो की ओर देखती रही । भैरो को इस मूक-भाषण ने आवाक् कर दिया । कमला की दृष्टि ने बता दिया कि कमला भैरो के बिना उससे अधिक व्याकुल न थी । भैरो ने हाथ पकड़ कर कमला को बैठाया और पूछा—आज तुम्हें किसी ने कष्ट दिया है क्या ?

कमला—हाँ ।

भैरो—किसने !

कमला—तुमने ।

भैरो—बिलकूल झूठ । मैं तो अभी चला आ रहा हूँ । अच्छा बताओ, तुम क्या कर रही थी ?

कमला—तुम्हारी याद ।

भैरो—और चित्र किसका देख रही थी ?

कमला—किसी का नहीं ।

भैरो—अच्छा न बताओगी, तो लो जाता हूँ ।

कमला भैरो का हाथ पकड़कर बोली—जाओ नहीं, हाथ जोड़ती

ग्यारह

जीवन का शाप

हूँ। कमला की आँखों में आँसू भर आये। भैरो समझ गया कि कुछ-न-कुछ भेद अवश्य है जिससे कमला इतनी दुःखी है।

भैरो बोला—अच्छा कहो, क्या कहना चाहती हो ?

कमला रोने लगी। कुछ कह न सकी। भैरो बोला—क्या मेरे न आने से तुम इतनी दुःखी हो ?

कमला—हाँ, कृपाकर इन भिखारिन आँखों को दर्शन की भिक्षा एक बार अवश्य दे जाया करो।

भैरो ने कहा—क्या तुम्हारी आँखें इतनी कातर रहती हैं ?

कमला—सच कहती हूँ, यदि बन पड़ता तो पुतली निकाल कर दिखा देती।

भैरो—अच्छा, अब तो देख लिया, अब क्यों दुःखी हो ?

कमला पुनः रोने लगी। भैरो ने कमला को इस अवस्था में कभी न देखा था। कुछ भेद समझ में न आया। बहुत पूछा परन्तु कुछ सन्तोषजनक उत्तर न मिला। चलते समय कमला ने उसकी जेब में कागज में लपेटी हुई कोई वस्तु डाल दी। भैरो ने निकालना चाहा, पर कमला ने घर पहुँचकर खोलने का आग्रह किया।

भैरो ने घर पहुँचकर जेब से कागज का टुकड़ा निकाला। उसमें एक अठारह वर्षके बालक की तस्वीर थी और कागज पर कुछ लिखा था। भैरो कागज के टुकड़े को पढ़कर चोट खाये हुए पत्नी के समान खाट पर गिर पड़ा।

बारह

३

अर्द्ध-रात्रि का समय है । सारा संसार निद्रा के वशीभूत है । चारो ओर निस्तब्धता छाई है, कभी २ कुत्तों के बोलने की आवाज सुनाई पड़ जाती है । इसी समय शशिकान्त तथा चन्द्रकला देवी कुछ वार्तालाप कर रहे हैं । अभी इन लोगों पर निद्रा-देवी का प्रभाव नहीं पड़ा है । शशिकान्त एक कपड़े की दुकान करते हैं । नौ दस बजे सुबह भोजन कर चले जाते हैं । ग्यारह बारह बजे रात्रि में लौटते हैं । तदुपरांत भोजन करके सो जाते हैं । आज चन्द्रकला देवी ने कमला के विवाह का प्रश्न छेड़ दिया है, इसी से अभी तेरह

जीवन का शाप

तक यह दम्पति विचार-मग्न हैं ।

शशिकान्त के हाथ में एक छोटा सा चित्र है । उन्होंने चित्र की ओर देखकर कुछ चिन्तित स्वर में कहा—लड़का कुछ अस्वस्थ-सा मालूम पड़ता है ।

चन्द्र०—दुनिया में सबलोग मोटे थोड़े ही होते हैं । अभी लड़का है, कोई कमी तो है नहीं, जहाँ उसपर चार पैसे खर्चा हुए तुरन्त ठीक हो जायगा ।

शशि०—और रुपये भी पांच हजार लगेंगे ।

चन्द्र—इसकी क्या चिन्ता है, मैं अपने गहने दे दूँगी ? लड़की तो सुख में जायगी । कुछ तो खर्च करोगे ही ।

शशि—बिलायती माल के बन्द हो जाने से आज-कल चारो ओर घाटा ही घाटा है । मेरे किये तो हजार से ज्यादा न जुटेगा ।

चन्द्र—भला हजार रुपये में कहीं लड़की का विवाह हुआ है ? दो हजार तुम खर्च करो और घर के सामान तथा गहने कुल मिलाकर ३०००) की भर्ती मैं कर लूँगी । लड़की अच्छे घर पड़ेगी । जिन्दगी सुख से बीतेगी । दाने दाने को रोना तो न पड़ेगा ।

शशि—घर की सारी रकम निकाल कर लड़की व्याहने से मैं सहमत नहीं । लड़की को अच्छे घर देने के लिए हम भिखारी हो जायँ, यह भला कहाँ की बुद्धिमानी है ? विवाह, वैर और प्रीति बराबर वालों से ही करनी चाहिये । मान लिया आज तुम्हारे कहे मुताबिक हम

चौदह

जीवन का शाप

अपना सर्वस्व कन्या के विवाह में लगा दें तो क्या इतने ही से छुटकारा हो जायगा ? हिन्दू का घर है, एक बार नौ त्यौहार रोजही लगा रहता है, बाद में भी तो गङ्गा नहाना है ।

चन्द्र०—सब ईश्वर निभाता है । उसी पर भरोसा रखना चाहिये । मंजूरी दे दो सब काम बन जायगा ।

शशि०—मैं सहमत नहीं हूँ । मेरी समझ में तो भैरो कोई खराब लड़का नहीं है । पढ़ने लिखने में अच्छा है, चार दिन में कमाने लगेगा तो दिन फिर जायेंगे ।

चन्द्र०—एक लोहे का छल्ला भी तो उसके पास नहीं है, भला लोग क्या कहेंगे ?

शशि०—तब तक तुम्हारे गहनों से काम चलेगा ।

चन्द्र०—मैं अपने गहने क्यों देने लगी ?

शशि—अभी तो तुम कहती थी ।

चन्द्र—वहाँ के लिये या इस दरिद्र लड़के से ब्याह करने के लिये ?

शशि—ठीक है, मरे को ही मारना दुनियाँ का काम है !

चन्द्र—यह तो सभी करते हैं । लड़की के सुख के लिये कौन नहीं खरचता ?

शशि—वही तो मैं भी कह रहा था कि भैरो से विवाह हो तो अपनी रक्कत अपने घर में रहेगी और लड़की भी अधिक सुखी रहेगी । भैरो

एन्द्र०

जीवन का शाप

दृष्ट पुष्ट है। गरीब अवश्य है, हजार पांच सौ में ही विवाह हो जायगा। गहने अपने ही बने रहेंगे। मौका लगा तो बनवा लेगा। इस समय हमारा भी हाथ दबा है। हर समय हमसे वह दबता रहेगा।

चन्द्र—मुझे मंजूर नहीं। भैरो आता जाता है। कमला को प्यार करता है और कमला उसे प्यार करती है। मुझे भी वह अच्छा लगता है। स्वजातीय भी है पर गरीब है। पिसाई कुटाई से उसका गुजर होता है। ऐसे घर ब्याहने से मैं अपनी कमला को कुमारी ही रखना अच्छा समझती हूँ।

शशि—तुम तो बड़ी जल्दी रूठ जाती हो। यह कौन कहता है कि तुम उसी से विवाह करो, पर कुछ अपनी स्थिति भी देखनी चाहिये। हम कौन बड़े अमीर हैं जो अमीर की खोज करें? कमला चाहे जहाँ जाय, खाना कपड़ा तो मिलेगा ही। अब रह गया ऊपरी आराम सो भाग्य पर निर्भर है। जो बदा होगा वही मिलेगा।

चन्द्र—हमलोगों का जो धर्म है उसके अनुसार अच्छे घर ब्याह देना चाहिए, फिर तो जो भाग्य में होगा वह होगा ही। तुम कोई चिंता न करो, केवल मंजूरी दे दो।

शशि—तुम्हारी जैसी इच्छा हो करो।

चन्द्र—और तुम्हारी इच्छा।

शशि—कमला का मन टटोल कर निश्चय करूँगा।

चन्द्र—और क्या? कलियुग है कलियुग। लड़की से राय ली

सोलह

जीवन का शाप

जायगी कि तेरा विवाह किससे करूँ ? जाओ फिर तुम्हीं दोनो राय करके विवाह कर लेना । मैं अब किसी के बीच में दखल न दूँगी ।

चन्द्रकला ने इतना कहकर मुँह फुटा लिया और दीपक बुझाने चली । शशिकान्त ने रोककर कहा—रुट हो गयी क्या ?

चन्द्र—एक बज गया । रात भर पहरा दिया जायगा क्या ? नींद आ रही है । तुम जागो मैं तो सोने जाती हूँ ।

शशि—तुम्हीं ने तो बात छेड़ी थी ।

चन्द्र—मैं समझती थी कि घर की सालकिन हूँ !

शशि—तो अब तुम्हें दासी कौन कहता है ? जो इच्छा हो करो । मैं बीच में बोलूँ तो जीभ काट लेना ।

चन्द्रकला ने कोई उत्तर नहीं दिया । दीपक बुझाकर चारपाई की राह ली । शशिकान्त ने भी निन्द्रा देवी की शरण ली ।

४

थोड़ी देर बाद भैरो कुछ शान्त हुआ। उसने पुनः कागज के टुकड़े को पढ़ा। उसमें लिखा था—“नहीं जानती कि भाग्य किधर लिये जा रहा है, तुम्हारे सिवाय सहायता के लिये किसका मुख देख सकती हूँ?”

पुनः उसने चित्र देखा, चित्र एक बहुत ही दुबले-पतले रोगी युवक का था। भैरो को मालूम था कि कमला के विवाह की बात चीत चल रही है और वह अपने को भी एक उम्मीदवार समझता था। कमला के पत्र से उसे ऐसा मालूम हुआ कि इसी

अठारह

युवक से कमला के विवाह की बातचीत चञ्चल रही है। तभी उसने पत्र के साथ यह चित्र भी दिया है। वह मनमें विचार करने लगा—क्या कमला भी मुझे चाहती है ?

तर्क ने उत्तर दिया—इतनी सुन्दर कन्या भला मुझ गरीब को कब चाहने लगी ? तू आता-जाता है, परन्तु यह उसकी कृपा है जो तेरी आवभगत करती है। फिर यदि चाहे भी तो तुझ जैसे निर्धन के साथ उसका सम्बन्ध होना असम्भव है। भला उसके माता-पिता कब सहमत होंगे ? तब वह मुझसे क्या आशा कर सकती है ? भला मैं उसकी क्या सहायता कर सकता हूँ ? लड़का रोगी-सा मालूम होता है। शायद दूसरा वर चाहती हो और इससे जान बचाना।

बहुत देर के तर्क वितर्क पर भी यह निश्चय न हो सका कि कमला भैरो से किस प्रकार की सहायता चाहती है। न यही निश्चय हुआ कि कमला भी भैरो को चाहती है, वा नहीं। भैरो कमला को चाहता था पर इस बात को सिवाय उसके और कोई भी नहीं जानता था। यहाँ तक कि कमला भी नहीं जानती थी। भैरो ने देखा कि मेरे साथ कमला का सम्बन्ध होना असम्भव है, इसलिए उचित यही होगा कि इस झगड़े से अपने को दूर रखूँ। सोचा-सिवाय उसे गड्ढे में गिराने के मैं भला उसकी क्या सहायता कर सऊंगा ? मेरी कौन सुनेगा ?

अच्छा तो यही होगा कि वहाँ आना जाना ही बन्द कर दिया जाय। मुझे कष्ट होगा होवे, पर यदि कमला मुझे चाहती होगी तो

उन्नीस

जीवन का शाप

शीघ्र ही भूल जायगी और उसका भविष्य-जीवन सुखमय हो सकता है। फिर विचार आया—वह सहायता माँगती है, देखूँ क्या कर सकता हूँ ? इसी उधेड़बुन में रात बीत गयी। न तो नोंद आयी और न कुछ पढ़ाई लिखाई हो सकी। प्रातःकाल परीक्षा देने गया। पत्र भी बहुत अच्छा न हुआ। घर आने पर माता ने पूछा—कैसा किया ? बोला—बहुत अच्छा तो नहीं हुआ।

भैरो की माता लक्ष्मी सर खुजलाते हुए बोली—मालूम होता है आज-कल पढ़ने में ढिलाई हो रही है !

भैरो—अपने भरसक तो उठा नहीं रखता। ऊँचे दर्जे की पढ़ाई है न ?

लक्ष्मीदेवी चुप हो रहीं। उनकी अवस्था लगभग पचास वर्ष के होगी परन्तु शरीर से हट-पुट हैं। रङ्ग गोरा और मुखाकृति पर सीधेपन की झलक है। यदि वालों की सफेदी छिपा दी जाय तो इनकी अवस्था चालीस के ऊपर नहीं मालूम हो सकती।

भैरो ने माँ को तो उत्तर दे दिया पर हृदय कह रहा था कि यह प्रथम अवसर है जब उसने माता को धोखा दिया। हाथ मुँह धोकर भैरो भोजन करने बैठा। जब वह भोजन कर रहा था लक्ष्मी ने मीठे स्वर में कहा—बेटा तुम समझदार हो। परीक्षा रोज रोज नहीं होती। दो चार रोज धूमना फिरना

जीवन का शाप

छोड़ दिज लगाकर पड़े। अवश्य प्रथम आओगे। सब तुम्हारा आदर करेंगे और इनाम भी मिलेगा।

भैरो ने सिर झुका कर सुन लिया। माता की आज्ञा का उल्लंघन करना उसने नहीं सीखा था। बाहर न निकलना तो उसके वश की बात थी पर वह निश्चय न कर सका कि दिज लगेगा वा नहीं।

भोजनोपरांत भैरो ने पढ़ने के लिए पुस्तक उठाई। माता ने कहा—बेटा अभी पर्चा करके आये हो, घण्टा आराम घण्टा आराम कर लो तो पढ़ना।

भैरो ने कोई उत्तर नहीं दिया, मानों सुना ही नहीं। किताब देखता ही रहा पर उसके दिज को चैन कहाँ था जो पढ़ता। जितनाही वह कमजा को भुजाने का प्रयत्न करता उतनाही वह उसके पढ़ने में और भी बाधक हो रही थी। गत रात्रि की श्वेत-वस्त्र-धारणी कमजा की कातर सुखाकृति उसके सामने नग्न-नृत्य करने लगी। उसके बिखरे हुए काले २ बाज, उसकी अश्रु-पूर्ण आंखें, उसकी विह्वलता आदि बातों ने उसे चिन्तातुर कर दिया। इसी चिन्ता में पड़े २ वह कब सो गया इसका उसे ध्यान न रहा। निद्रा ने उसके उद्विग्न मस्तिष्क को शान्ति दी।

लगभग तीन घण्टे बाद नींद खुली। इस समय भैरो का चित्त कुछ स्वस्थ मालूम पड़ रहा था। लक्ष्मी ने कहा—खूब सोये।

एकीस

जीवन का शाप

तबीयत स्वस्थ हो गई होगी, अब चित्त लगा कर पढ़ो। कल रविवार है। देखो परसों का पत्र-पत्र न बिगड़े।

भैरो तीन चार घण्टे पढ़ता रहा मानो वह कमला और उसके पत्र को भूल गया हो। रात हुई तो पुनः कमला की याद आयी। चाहा जाकर मिल आज पर माता की आज्ञा थी कहीं जाना मत। बेचारा मन मारकर रह गया। सोचा कल रविवार है, मिल आजगा।

आज की रात कुछ अच्छी बीती। पढ़ाई भी हुई। नींद भी आई। दूसरे दिन सबेरे कमला से मिल कर कर्तव्य स्थिर करने का निश्चय कर लिया था। रविवार के दिन प्रातःकाल लक्ष्मी देवी गङ्गा स्नान को गईं। एकादशी का दिन था। भैरो जानता था कि दिना मन्दिर दर्शन किये न आयेंगी। कपड़े पहिन कर कमला के घर जाने लगा। सोचा माता के आने तक लौट आजगा, पर सीढ़ी उतर ही रहा था कि कमला आती दिखाई दी। कमला ने अकस्मात् प्रश्न किया—बाहर जा रहे हो क्या?

भैरो—तुम्हारे ही यहाँ तो जा रहा था।

कमला—मैंने तो समझा कि तुम परसों मेरे न बोलने से कुछ रुष्ट हो गये और इसीलिये कल मेरे यहाँ नहीं आये।

भैरो—नहीं परीक्षा के कारण माता जी ने घर से निकलने को मना किया था।

12197

बाइस

218

जीवन का शाप

कमला—तब इस समय कैसे जा रहे थे ?

भैरो—माता जी गंगा स्नान करने गयी हैं। भला तुम इस समय कैसे चली ?

कमला—मैं भी माता जी के साथ स्नान करने गयी थी। माताजी बोलीं तुम घर चलो। मैं विश्वनाथ का दर्शन करके आती हूँ। मैंने सोचा जरा मैं भी दर्शन कर अपने विश्वनाथ को मना लूँ।

कमला कह तो गई पर उसे अपने अन्तिम शब्दों पर कुछ लज्जा का अनुभव हुआ। भैरो से यह बात छिपी न रही। उसने लज्जा के आवरण को हटाने के अभिप्राय से कमला से पूछा—
कमला ! मैं तो तुम्हारे पत्र का कुछ अर्थ न समझ सका। चलो ऊपर। बैठकर बात चीत हो।

कमला—नहीं अब मैं जाऊँगी। माता जी भी नहीं हैं।

भैरो—थोड़ी ही देर ठहरना।

भैरो कमला का हाथ पकड़ कर ऊपर ले गया। भैरो के बहुत पूछने पर कमला ने कहा—कुछ नहीं, योंही भक में लिख गयी थी।

भैरो—और भक में वह चित्र कहाँ से रख दिया था ?

कमला निरुत्तर हो गयी। कुछ बहाना न कर सकी। बताना पड़ा कि उस लड़के से लोग मेरा विवाह करना चाहते हैं। अमोर का लड़का है। पढ़ा लिखा है। कानपुर का निवासी है, परन्तु स्वजनों से दूर है इसीलिये मैं नहीं चाहती।

तेइस

जीवन का शाप

भैरो ने पूछा—तब तुम क्या चाहती हो ? किससे विवाह करना चाहती हो और मैं उसमें तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ ?

कमला ने सिर नीचा कर धीमे स्वर में कहा—मैं तुम्हारे घर आयी हूँ, फिर भी क्या स्पष्ट शब्दों में कहना होगा कि किस-लिये ? तुम कल नहीं आये । मैं नहीं समझती थी कि तुम इतने निष्ठुर होगे ।

भैरो कमला के मन की बात ताड़ गया । सन्नत गया कमला और कुछ नहीं चाहती, केवल स्वीकृति के रूप में मेरे हृदय के भावों का जानना ही उसका उद्देश्य है ।

उसने पूछा—तो क्या तुम मुझको चाहती हो ?

कमला—तुम्हारी बात का उत्तर देने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं । अब बताओ तुम क्या चाहते हो ?

भैरो—कमला । मैं गरीब हूँ, भिखारी हूँ, तुम्हें प्रसन्न नहीं रख सकता और न संसार में किसी के सामने तुलना में ठहर सकता हूँ ।

कमला—नहीं जानती भाग्य किधर ले जायगा । हिन्दू कन्या हूँ । हृदय है परन्तु शब्द नहीं । जो सिर पड़ेगी सहना ही होगा । परन्तु आशा है तुम मुझे भूलोगे नहीं ।

भैरो—कमला, यह भी भला क्या इस जन्म में हो सकता है ?

चौबीस

जीवन का शाप

परन्तु मेरी प्रार्थना है कि तुम मुझे भूत जाओ । सब पृष्ठो तो इसीलिये कल मैं तुम्हारे पास नहीं आया । कमला मैं दीन हूँ, अनाथ हूँ, अभागा हूँ, मुझे भूलजाने में ही सुख मिलेगा और इसी में तुम्हारा सौभाग्य बना रहेगा । यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि हमारा तुम्हारा सम्बन्ध असम्भव है ।

कमला—यदि विवाह असम्भव है तो मेरा तुम्हें भूत जाना भी असम्भव है । यह मैं भी जानती हूँ कि माता जी इस सम्बन्ध को न होने देंगी और मुझे कोई अधिकार नहीं कि हस्तक्षेप करूँ, पर कम से कम शहर में तो रहूँ । अपने देवता के दर्शन से तो वंचित न होऊँ ।

इतना कहते कहते कमला की आंखें अश्रुपूर्ण हो गयीं । भैरो ने उसे समझोधन देते हुए कहा—तुम्हारी और हमारी दोनों की कुशल इसी में है कि आंखों की ओट रहे । फिर जैसा तुम चाहो मैं करने को तैयार हूँ ।

कमला ने कोई उत्तर न दिया । अधिक देर करना उचित न समझ कर चतने को उद्यत हुई । माता के आने का समय निकट जान भैरो को उसे रोकने का साहस न हुआ । जाती समय कमला भैरो की ओर कातर नेत्रों से देखती गयी ।

जाते जाते भैरो ने कहा—परीक्षा समाप्त होने पर आऊँगा ।

कमला ने कोई उत्तर न दिया । भैरो ने देखा कमला रोती

जीवन का शाप

जा रही है, उसका भी गला भर आया। चाहता था कुछ कहे परन्तु चेष्टा करने पर भी कुछ न कह सका। अपनी धोती के कोर से कमला के आंसू पोछना चाहा पर व्यवहार की अशिष्टता ने हाथों को रोक दिया। दोनों ही बिना कुछ बोले अलग हुए, पर आँखें यह स्पष्ट बता रही थीं कि यह विछोह चिरकाल तक दोनों को कष्टकर होगा।

भैरो फिर कमला से मिलने कई मास तक न गया और न कमला ने ही उसे बुलाया। परन्तु दोनों का हृदय एक दूसरे की ओर प्रबल वेग से आकर्षित हो रहा था। दोनों एक दूसरे के लिए पागल हो रहे थे।



कमला तथा शशिकान्त दोनों की अनिच्छा जान कर भी चंद्रकला-
देवी ने कमला का विवाह राधेकान्त के पुत्र श्रीकान्त से निश्चय कर
लिया । राधेकान्त कानपुर के बड़े व्यापारी हैं और उनके पुत्र
श्रीकान्त ने एफ० ए० तक शिक्षा प्राप्त कर अवरथता के कारण
पढ़ना छोड़ दिया है । लाखों की सम्पत्ति है । फिर पढ़कर नौकरी
तो करनी न थी । अवरथता के कारण श्रीकान्त का विवाह कहीं
ठीक न हो रहा था । श्रीकान्त की माता सुशीलादेवी का आग्रह
देख पुत्र का विवाह शीघ्र ही करना आवश्यक था । अतः, गरीब

सत्ताइस

जीवन का शाप

शशिकान्त के यहाँ ही सम्बन्ध होना निश्चय हुआ ।

भैरो को भी शशिकान्त ने विवाह में सहायता देने का निमन्त्रण दिया । पाँच ही सात दिनों में सब तैयारी करनी थी, क्योंकि चन्द्रकला देवी मासिक धर्म प्रारम्भ होने के पहिले ही कन्यादान का फल लेना चाहती थी । शशिकान्त अकेले थे । भैरो से उन्हें बहुत आशा थी । भग्न हृदय भैरो ने पहिले तो सोचा कि अस्वीकार कहूँ पर इतने दिन के सम्बन्ध को इस प्रकार तोड़ना उचित न समझ उसने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया । गर्मी की छुट्टी शुरू होगयी थी । भैरो निय-प्रति शशिकान्त के यहाँ जाने लगा, परन्तु कमला का साक्षात् होने से अपने को इस प्रकार बचाता रहा मानो उसने कोई बड़ा अपराध किया हो ।

पुत्री का विवाह होने वाला था । चन्द्रकला भी यह नहीं चाहती थी कि भैरो और कमला में पूर्ववत् व्यवहार बना रहे । इसी कारण उसने डाँट डपट कर कमला को भैरो से दूर ही रखा ।

निश्चित तिथि पर बारात आयी । बारात में पाँच सौ आदमी थे । खिजाते पिजाते शशिकान्त का दिवाला तंग होगया । वर बड़ा रोगी था । माजूम होता था सालों का बीमार है । ऐसे दुर्बल वर को देखते ही कमला की आँखों से अश्रु-प्रपात होने लगा, परन्तु चन्द्रकला को इससे कोई प्रयोजन न था । एक से एक बहुमूल्य अभूषण आवे थे । बारात के साथ बन्धुओं और तत्त-

अट्टाईस

जीवन का शाप

वारें थीं । पैसे की जगह रुपये लुटाये गये । रुपयों की जगह मीन्रिया खर्च की गयीं । चन्द्रकला-सी हिन्दू रमणी को पागल बनाने के लिए ये कम न थे जो वर का खयाल करती ।

कन्यादान सागन्द समाप्त हो गया । दूसरे दिन जेवनार होने वाला था । परंतु शाम के जलपान में नौकरों को मिठाई भेजने में देर होगयी, इसलिये बरातियों में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ । समधी साहेब की बड़ी बेइज्जती हो गयी । कहने लगे सब भूखे मर गये । जब पैसे की कमी थी तो इतने बरातियों को निमंत्रित करने की क्या आवश्यकता थी ? बहुत दिगड़ । विना बिदा कराये ही घर जाने के लिए तैयार हो गये । सामान स्टेशन पहुँच गया । बराती भी रफूचक्कर हुए । समधी साहेब मोटर में बैठने को तैयार हुये । शशिकान्त ने देखा मामला दिगड़ रहा है । जाकर समधी साहेब के पैर पकड़ कर बोले—इज्जत आप के हाथ है, चाहे रख या ठुकराये । राधेकान्त से कुछ जवाब देते न बना । बोले—अच्छा यदि आप चाहते हैं तो लड़की को बिदा कर दीजिये । विना किसी रीतिरस्म के लाचार होकर शशिकान्त ने कमला को लाकर मोटर में बैठा दिया । बेचारी सोचती थी दो रोज अभी रहने में आयेगा, परन्तु मारशल लॉ जारी हो चुका था । विना कुछ कहे सुने ही मोटर में ठूस दी गई । मोटर पोंपों करती स्टेशन की ओर चली । परन्तु कमला की उन्तीस

जीवन का शाप

प्यासी आँखें किसी के दर्शन के लिये शीशे में से पीछे ही को ओर झाँक रही थीं। कैदी के समान चार आदमियों से घिरी हुई कमला को इस तरह देखने की भी स्वतंत्रता न थी। चट मुख फेरना पड़ा। मोटर स्टेशन पहुँची। चार आदमियों से घिरी हुई कैदी कमला रेल के डब्बे में पहुँचाई गयी। फर्स्ट क्लास में डब्बे में बैठने का स्थान मिला। यदि कोई दूसरा अवसर होता तो कमला ऐसे सुंदर स्थान में बड़ी प्रसन्न हुई होती, पर इस समय तो अपनी स्वतंत्रता खोकर उसका हृदय रो रहा था। कमला शीशे में से बाहर की ओर बार बार घूँघट उठाकर देखती और किसी को देखकर मुख फेर लेती थी। थोड़ी देर बाद उसका पति भी उसी डब्बे में चला। कमला ने घूँघट की ओट से देखा। अत्यंत दुर्बल और सालों का बीमार माजूम पड़ता था। बीच-बीच में खँसता व थूकता जाता था। मुख बिलकुल पीला पड़ गया था। कमला ने अपने भाग्य को ठोंका। अधिक देर तक उधर देखने का साहस न हुआ। गाड़ी ने सीटी दी। कमला ने पुनः स्टेशन की ओर देखा और जन्मभूमि को प्रणाम किया। कमला सृष्टि नेत्रों से स्वजनों के दर्शनार्थ स्टेशन की ओर देखने लगी। शशिकांत अश्रुपूर्ण नेत्रों से उसके पास आये। कमला ने प्रणाम किया। शशिकांत ने अवलंब कण्ठ से आशीर्वाद दिया। कमला कुछ बोलना चाहती थी परन्तु गले

तीस

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

जीवन का शाप

ने जवाब दे दिया । गाड़ी ने झण्डी दिखाई । शशिकांत हट गये । कमला ने अंतिम बार नमस्कार किया । गाड़ी छूट गयी परन्तु कमला जिसको खोज रही थी उसके दर्शन न हुए । गाड़ी पुल पर पहुँची । कमला की आशा बिलकुल निराशा में परिणत हो गई । उसके हृदय-मंदिर से एक लम्बी आह निकल पड़ी— अंतिम बार भी दर्शन न हुए, ऐसी निष्ठुरता ?

गाड़ी हड़हड़ाती हुई पुल पर चली जा रही थी । कमला ने देखा पुलके अंतिम सिरे पर एक युवक बैठा इसी ओर देख रहा है । पहिचाना वह भैरो था । गाड़ी मंद गति से आगे बढ़ रही थी । भैरो ने भी कमला को देखा । दोनों की आँखें चार हुईं । यह मूक मिलन था वा बिछोह, कुछ कहा नहीं जा सकता । दोनों की आँखों ने एक दूसरे के हृदय में प्रवेश कर कुछ कहना चाहा । बिदाई का संदेश लेकर आँखोंने हृदय में प्रवेश किया, परन्तु गाड़ी ने उत्तर का अवकाश न दिया । आगे बढ़ती गयी । कमला ने सोचा था एकबार दर्शन कर तृप्ति होगी, परन्तु छिपी हुई प्रेमाग्नि और भी उग्ररूप से भड़क उठी । सोचने लगी यहाँ क्यों बैठा है ? परन्तु कोई उत्तर न मिला । जिस बात की आकांक्षा थी पूरी हुई, परन्तु शांति न मिली । हृदय में तूफान-सा मच रहा था । इस समय कोई दिल बहलाने वाला होता तो सांत्वना मिलती परन्तु यहाँ खजन कौन था ?

एकतीस

जीवन का शाप

गाड़ी मुगलसराय पहुँची। उबरा जोड़ कर दूसरी गाड़ी में लगाया गया। कमला ने अपने दुःख सुख के साथी पति की ओर देखा। उधर से भी साँवना के कोई लक्षण नहीं दोख पड़े। उस बेचारे को खॉसी से कहाँ फुरसत जो कमला की सुधि लेता। पड़ा पड़ा खॉसता और जब न रहा जाता तो उटकर बैठ जाता।

लगभग एक घण्टा इसी प्रकार बीता। चुनार और मिर्जापुर आदि पीछे हूट गये। कमला अपने पति का हाल देखकर घबड़ा उठी। बराबर जी चाहता था कि हाल पूछूं, परंतु लज्जा के मारे कुछ बोल नहीं सकती थी। अन्त में सोचा—जीवन संगिनी हूँ। हाल पूछने में क्या लज्जा? यदि हो सके तो कुछ सहायता करूं। पूछा—कैसा जी है? श्रीकांत ने उत्तर दिया—बड़ी तकलीफ है। इस हड़बड़ पड़पड़ में ज्वर भी हो आया, खॉसी तो पहिले से थी ही।

कमला ने मस्तक पर हाथ रखा। वास्तव में ज्वर चढ़ा था। बेचारी कमला क्या करती? बराती अपने अपने रंग में मस्त थे। यह बला उसी के गले पड़ी थी। उसी को भोगना था। फिर कोई विशेष बात चीत नहीं हुई। हाँ खॉसने के समय कमला श्रीकांत का शरीर सुहलाकर सहायता अवश्य करने का प्रयत्न करती थी।

कमला कानपुर पहुँच गयी। बड़ी आवभगत हुई। घर भी

बत्तीस

जीवन का शाप

बड़ा था। दास दासियों की कमी न थी। रिश्तेदार भी बहुत एकत्रित थे। सबप्रकार के सुख का अनुभव हुआ। नाना भौति के उत्सवों की धूम थी। कई दिनों तक भोज होते रहे। गाना-बजाना भी होता रहा। एक दिन नाच मुजरा भी हुआ। सभी प्रसन्न थे। खाते थे, पीते थे, आशीर्वाद देते और चले जाते थे। परन्तु जिनके लिये यह सब हो रहा था, वही प्रसन्न न था, श्रीकांत ज्वर से पीड़ित हो चारपाई तोड़ रहा था और कमला अपने भाग्य-परीक्षा की विवेचना में अहर्निश मग्न थी।

लोगों को जब उसवों से फुरसत मिली तो श्रीकांत की बीमारी की ओर ध्यान गया। डाक्टरी परीक्षा कराई जाने लगी। रोज नये नये हकीम डाक्टर आते। हकीम कहते दमा है, वैद्य जीर्णज्वर बताते और डाक्टरों की राय पक्की न होती। कोई कहता खून की जाँच होनी चाहिये, कोई कफ की परीक्षा कराने को कहता, कोई पाखाना देखता, तो कोई पेशाब की जाँच करता। दिन में पाँच पाँच डाक्टर आते पर राय पक्की न ठहरती। फिर इलाज कैसे हो? कोई तो मरीज को देखने के पहिले ही नुस्खे लिख देते और फीस मिलते ही घर का रास्ता लेते। किसी तरह पिशाब, पाखाने और कफकी परीक्षा हुई। हफ्तों परीक्षा के बाद निश्चय हुआ कि थाइसिस है। अब एकसरे कराने का निश्चय हुआ। पैसे वाले थे, कोई कंगाल होता तो डाक्टरी परीक्षा में ही तैतीस

जीवन का शाप

उसका दिवाला हो जाता। एकसरे कराया गया और थाइसिस होने का प्रमाण-पत्र मिल गया। पहाड़ पर ले जाने की राय डाक्टरों ने दी।

कमला को इन सब संकटों से न कोई मतलब था न इनके जानने का कोई अधिकार था। अच्छा अच्छा खाने को और पहनने को मिलता था। इतना अवश्य मालूम हुआ कि तबियत बहुत खराब है। इससे अधिक उसे कुछ भी सूचना नहीं दी जाती थी। हाँ, कभी कभी इतना अवश्य कानों तक पहुँच जाता था—न जाने किस भाग्य से आयी है कि चारपाई नहीं छूटती?

कमला को ये बातें बुरी लगतीं पर उसके साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं होता था, जिससे वह इस बात की विशेष परवाह करती।

पहाड़ की तैयारी होने लगी। घर में राधेकान्त, सुशीला श्रीकांत की विधवा बहिन सौदामिनी, श्रीकान्त तथा कमला के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति न था। नौकर चाकर बहुत से थे। निश्चय हुआ कि सुशीला देवी श्रीकांत के साथ मंसूरी जायँगी और साथ में एक पुराना मुनीब भी। राधेकांत को वहाँ के काम-काज से अवकाश ही न था, सौदामिनी पर गृहस्थी का भार था, अब रह गयी कमला। उसका जाना-आना उसी पर

चौंतीस

जीवन का शाप

छोड़ा गया। पूछने पर उसने भी पहाड़ जाने की इच्छा प्रकट की उसका भी जाना निश्चय हुआ।

विवाह के ठीक २ मास पश्चात् प्रातःकाल की गाड़ी से २ स्त्री २ पुरुष तथा १ नौकर मंसूरी के लिए रवाना हुए।

मंसूरी में तीन कमरे किराए पर लिये गये। एक में रोगी श्रीकान्त तथा दोनों स्त्रियाँ रहती थीं और दूसरे में मुनीब तथा नौकर। तीसरे में भोजनादि का प्रबन्ध था।

सुशीला किसी का हूआ भोजन नहीं करती थीं, इसीलिये स्वयं ही भोजन बनातीं और तब तक रोगी की सेवा सुश्रूषा का भार कमला पर रहता।

लगभग दो तीन घण्टे तक प्रायः निध्रुव ही कमला और श्रीकान्त को एकांतवास का अवसर मिलता। कमला बड़ा कष्ट सहकर रोगी की परिचर्या करती। इससे श्रीकान्त को बड़ा आराम मिलता और सुशीला भी कमला पर प्रसन्न रहती। कमला की अवस्था तो कम थी परन्तु उसमें गुण अधिक थे। बात-चीत में भी वह पटु थी। कभी कभी किस्से सुनाकर भी श्रीकान्त को प्रसन्न किया करती थी।

एकांत होने के कारण लज्जा स्वयं दूर हो गयी। अब वह अपने बुरे और अच्छे दिन को अच्छी तरह समझती थी।

एक दिन कमला की सेवा से प्रसन्न हो श्रीकान्त ने कहा—

पतीस

जीवन का शाप

तुमको मेरे कारण कष्ट तो अधिक होता है परन्तु सुख कुछ भी नहीं।

कमला—यदि आप को मेरे शरीर से आराम मिलता है तो इसी में मुझे सुख है। नारी-जीवन पति को सुख पहुचाने से ही सफला होता है।

श्रीकान्त—किन्तु पति को भी तो नारी के लिये सुख की सामग्री एकत्रित करनी चाहिये।

कमला—वह तो समय आने पर अवश्य होगा।

श्रीकान्त ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा—ऐसी आशा करना तुम्हारी भूल है।

कमला—ऐसे अधीर क्यों होते हैं? जाभ तो हो रहा है।

श्रीकान्त—मैं जानता हूँ कि जिस रोग ने मुझे पकड़ा है उससे छुटकारा असम्भव है। दवा के प्रभाव से हो सकता है कुछ अधिक समय तक जीवित रह जाऊँ, पर वह दिन देखना असम्भव है जब कि तुम्हारी सेवा का ऋण चुका सकूँ।

कमला—भला पत्नी भी कहीं पति की सेवा ऋणों के रूप में करती है। आप तो व्यर्थ ही अधीर हो रहे हैं। अवश्य अच्छे होंगे और शीघ्रही।

श्रीकान्त ने कमला को अपनी ओर खींचते हुए कहा—प्रिये! तुममें सरलता की मात्र अधिक है। मेरी बीमारी को नहीं समझ सकती हो। मैं नहीं जानता था कि ऐसे घातक रोग ने मेरा

छसत्ती

जीवन का शाप

पीछा पकड़ा है, नहीं तो तुम्हारे ऐसी सुशील और गुणवती युवती का जीवन कदापि नष्ट न करता। शरीर की दुर्बलता के कारण विवाह के समय मैंने विरोध किया परन्तु माता के सामने मेरी एक न चली। अब तुम्हें देखकर मुझे इस बात की अत्यधिक चिन्ता हो रही है कि अपने मस्तिष्क की दुर्बलता के कारण आज मैं तुम जैसी सुशील नारी का जीवन समाज की वेदी पर बलिदान करने जा रहा हूँ।

श्रीकांत की आँखों में आँसू भर आये। कमला की भी आँखें डबडबा आयीं। अपने अस्त्रज से श्रीकांत के अश्रुकणों को पोछती हुई बोली—इतने अधीर मत होइये। आप अवश्य ही अच्छे होंगे।

श्रीकांत—मैं और अच्छा ! अच्छा तो न होऊँगा, हाँ प्रयत्न से भोगूँगा और भोगाऊँगा। मेरा तो जो कुछ होगा होगा ही, पर यह सोचकर हृदय विदीर्ण हुआ जा रहा है कि तुम-सी एक बेगुनाह अबला की क्या दशा होगी ?

कमला—फिर वही अपशकुन की बात ! विक्षिप्त तो नहीं हो गये हैं ?

श्रीकांत—प्रिये ! विक्षिप्त नहीं, वरन जो कुछ कह रहा हूँ ध्रुव सत्य है। क्या मेरी एक राय तुम मान सकती हो ?

कमला—राय क्या आज्ञा दीजिये नाथ ! शुभ-अशुभ जो कुछ

सैंतीस

जीवन का शाप

भी हो दासी को शिरोधार्य होगा । पत्नी होकर यदि आप की आज्ञा का उल्लंघन करूँगी तो किसी लोक में भी मेरे लिए स्थान न मिलेगा ।

श्रीकान्त—तुम अभी तक अछूती हो । अधिकार रहते हुए और इच्छा होते हुए भी मैंने अपने को तुम्हारे अधर-पान से वञ्चित रखा । मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि तुम मेरी अनुपस्थिति में पुनर्विवाह कर लेना इसी में मेरी आत्मा को सुख मिलेगा । मैं जीवन भर के लिये एक हिन्दू नारी को वैधव्य की ज्वाला में जलती हुई देखकर मेरी आत्मा शान्ति नहीं पा सकती ।

कमला कुछ कहना ही चाहती थी कि सुशीला के आने की आहट पा चुप रह गयी । फिर उस दिन श्रीकान्त से बात करने का अवसर न मिला ।



७

शशिकांत ने बड़े ही कष्ट से बारात बिदा की। विवाह का हिसाब किताब होने लगा। सगे सम्बन्धियों ने खर्च करने में उन्हें खूब उत्साहित किया। फिर क्या था ? उन्होंने भी खूब पैसे व्यय किये पर आनन्द न आया। समझी नाराज होकर चले गये। उधर वर की सूरत से भी शशिकांत को प्रसन्नता न हुई। यदि प्रसन्नता की कोई सामग्री थी तो धन और घर। पर वह भी न रहा।

बारात के बिदाई के दूसरे दिन हिसाब किताब होने लगा।

उनतालीस

जीवन का शाप.

कुल ७०००) का टोटल लगा । ३०००) नकद व ४०००) गहने से २०००) के गहने घर से निकले थे । बाकी ५०००) देना था । छोटी सी कपड़े की दूकान थी । कदाचित् रघयं बिक जाने पर भी शशिकांत यह कर्ज न चुका सकते थे । मकान किराये का था । चंद्र-कला अपने गहने देकर ही निश्चिन्त थी । परन्तु अब रह गये महाजन और शशिकांत ।

एक मास पूर्व तक शशिकांत की शाख थी । आवश्यकता पड़ने पर माल लोगों से लेते और समय पर दाम चुकता कर देते । न ऊधो का लेना न माधो का देना । सादा अच्छा खाते और पहिन्ते थे । लोग आदर करते थे । समझते थे पचीस पचास हजार का असामी है । किसी ने तकाजा नहीं किया, पर शशिकांत मन ही मन इस बात पर पश्चात्ताप कर रहे थे कि क्यों स्त्री के कहने में पड़कर अपना सर्वस्व खो बैठा ?

अब धीरे धीरे तगादा होने लगा । शशिकांत छल कपट के आदमी न थे । चट कह देना पड़ा—पैसा नहीं है, दूँ कहाँ से । लड़की के विवाह में लुट गया ।

फिर क्या था ? मित्र ही शत्रु बन गये । किसी ने कहा—इसी शान पर राजा-बाबू खोजा था ? किसीने गालियाँ दीं और किसी ने फटकार भी सुनाई । पर मौन धारण करने के अतिरिक्त वह कर ही क्या सकते थे ?

चालीस

जीवन का शाप

अब महाजनों को यह चिन्ता हुई कि वसूली कैसे हो ? पूछने पर मालूम हुआ कि दूकान में ३०००) से अधिक का माल नहीं है और देना ५०००) का है । कुछ शुभचिन्तकों ने एकत्रित होकर यह निश्चय किया कि कचहरी जाने से कोई लाभ नहीं । सब लोग आधे पर मामला तै कर लेवें ।

शशिकांत को सब मंजूर था । इवते को तिनके का सहारा बहुत होता है । जीविकोपार्जन का मार्ग बन्द हो रहा था पर चारा ही क्या था ? पाप तो शशिकांत ने किया था फल कौन भोगता ?

दूसरे दिन सबेरे आठ बजे सब लोग शशिकांत के घर पर एकत्रित हुए । शशिकांत ने डबडबाई हुई आँखों से ताज़ी उठाई और कातर दृष्टि से लहनेदारों की ओर देखा । शशिकांत के ममेरे भाई सुमेरचंद के अतिरिक्त और सभी वहाँ उपस्थित थे । सुमेरचंद के ५००) बाकी थे । शशिकांत ने कहा—यदि सुमेरचंद के समान आपलोग भी धैर्य धरते तो मैं जल्दी ही सबकी पाई पाई चुका देता । दो एक को दया भी आई पर शशिकांत ने जिनको अपना समझा था वही पराये निकले । फलतः मामला तै करने का ही निश्चय हुआ ।

शशिकांत दूकान पहुँचे । पर देखा तो ताज़े पर मुहर लगी है । पता चला कि सुमेरचंद की कुड़की में ताज़ा लग गया

एकतालीस

जीवन का शाप

है । अब शशिकांत की समझ में आया कि जिसकी मैं इतनी बड़ाई कर रहा था, असल में गला बोटने वाला अपना ही ममेरा भाई सुमेरचंद निकला । शशिकांत आवाक खड़े थे मानो उनकी आत्मा कूच कर गयी हो ।

महाजनों की भी एक न चली । सभी शशिकांत तथा सुमेरचंद को गालियाँ देते हुए अपने अपने घर गये ।

दूसरे दिन शशिकांत कचहरी में पेश किये गये । उन्होंने अपना सच्चा हाल कह सुनाया । लोगों की गवाही से भी पता चला कि आदमी सच्चा है । पुत्री के विवाह से उनकी यह दशा हुई है । इंसानवेंसी मिल गयी । माज नोजाम हुआ । एक दिन द्वार पर बाजे-गाजे और वाह वाह की धुम थी और आज दुकान पर बाजे के साथ गालियों की बौछार थी । समय ही तो है । सब दिन बराबर नहीं जाते ।

कुल माल २५००) में नोजाम हुआ । खर्च-वर्च देकर चवन्नी रुपये का हिस्सा मिला । वह भी महीनों बाद ।

ममेरे भाई सुमेरचंद की करतूत ने आठ आने का माल चार आना कर दिया और शशिकांत दिवालिया करार दिये गये । भला सगे सम्बन्धियों से इससे बढ़कर और क्या आशा की जा सकती है ? सर्वस्व खोकर भग्न हृदय शशिकांत दिवालिया बने घर पहुँचे । देखा तो चंद्रकलादेवी सिर से पैर तक चादर ताने पड़ी हैं ।

बयालीस

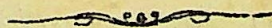
जीवन का शाप

पूछने से पता चला कि कानपुर से पत्र आया है, तभी से यह हाल है ।

बहुत आरजू मिन्नत करने के पश्चात् चंद्रकला ने चादर हटाया और आँचल से खोलकर एक पत्र सामने फेंक दिया ।

शशिकांत ने पत्र पढ़ा । लिखा था—“डाक्टरों ने श्रीकांत को थाइसिस का रोग बताया है । ईश्वर मालिक है । न जाने किस अपशकुन समय पर बारात लेकर गया था कि यह बुरे दिन देखने पड़ रहे हैं । मंसूरी की खानगी है । बहू भी जाने को कहती हैं । मिलना हो तो आकर मिल जाओ”

शशिकांत की आँखों के आगे अंधेरा छा गया । एक तरफ दिवाला, दूसरी ओर जिसके लिये इतना हुआ उसके भी वैधव्य की आशंका और उधर श्रीमती जी का यह हाल । सिर चक्कर खाने लगा । सिर थामकर वहीं जमीन पर बैठ गये । फिर पता नहीं क्या हुआ और कब तक वहीं पड़े रहे । “सुख के साथी सब हैं दुःख में कोई पूछने वाला नहीं” यह कहावत बिल्कुल सत्य प्रतीत हुई ।



८

सन्ध्या के समय अगणित भीड़ टाऊनहाल की ओर चली जा रही है, वहाँ आज एक विराट सभा होने वाली है।

सभा-भवन फूल-पत्तियों से सजाया गया है। पूछने पर मालूम हुआ कि विधवा विवाह के सम्बन्ध में सभा है।

ठीक ६ बजे सभा का कार्य प्रारम्भ हुआ। एक दीर्घकाय ३० वर्ष के पुरुष ने आकर प्रस्ताव किया कि पं० दीनानाथ जी सभापति का आसन ग्रहण करें। एक २५ वर्षीय युवक ने अनुमोदन किया। तत्पश्चात् बड़ा-सा पगड़ बाँधे हुए, एक लम्बोदर

चौवालीस

जीवन का शाप

पंडित जी उठे और कुर्सी पर आ विराजे। लोगों ने तो समझा था कि इन पगड़वाले पंडितजी का बोझ कुरसी न सँभाल सकेगी, परन्तु बेचारी ने केवल चरमरा कर ही अपनी अस्वीकृति प्रकट की। ज्यों-ज्यों पंडितजी अपना डुपट्टा समेट व साफा सीधा कर कुरसी पर डट ही गये। उस बेचारी कुर्सी पर उन्हें तनिक भी तरस न आई। सभा कार्य प्रारम्भ हुआ।

ईश-प्रार्थना के बाद सभापति जी ने बैठे-ही-बैठे श्री रजनीकांत जी को कुछ कहने का संकेत किया।

संकेत के साथ ही रजनीकांत जी मञ्च पर आ डटे। आपने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया:—

उपस्थित भाइयों तथा बहिनों !

मुझे आज यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि जिस विषय के प्रचार में मैंने हाथ लगाया है, उस विधवा विवाह सम्बन्धी प्रश्न पर भाषण सुनने के लिये इतने नर-नारी उपस्थित हैं। मैं विधवा विवाह के सम्बन्ध में आप लोगों से कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। आशा है आप लोग केवल भाषण ही सुनकर अपने कर्तव्य की इतिश्री न समझेंगे, बल्कि इस शुभ कार्य में मेरी सहायता भी करेंगे।

भाइयों ! हम हिन्दू परिवारों में शायद ही कोई ऐसा घर होगा, जहाँ एक-न-एक विधवा न हो। भला कौन ऐसा मनुष्य

पैतालीस

जीवन का शाप

है, जिसका हृदय इनकी यंत्रणा देखकर द्रवीभूत न होता हो, परन्तु हम लोगों का कोई वश नहीं चलता । हम सामाजिक बन्धनों से इतने जकड़े हुए हैं कि उन अबलाओं के आर्तनाद का हमपर कुछ भी असर नहीं पड़ता । साल-साल दो-दो साल की अवस्था वाली बालिकायें जिन्हें संसार का लेश मात्र भी ज्ञान नहीं, विधवा होकर सामाजिक दण्ड भोग रही हैं और हमारे कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती । क्या हमको इन विषयों पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है ? हम पुरुष पचास-साठ की अवस्था में भी तीसरा और चौथा विवाह कर सकते हैं, परन्तु इन कन्याओं का, जिन्होंने कभी पति का मुख भी नहीं देखा है, कुछ भी विचार नहीं करते । इसका क्या कारण है ? हमने अपने को सामाजिक बन्धनों में इस प्रकार जकड़ रखा है कि हम विवश हैं । जब ये नियम हमारे ही बनाये हुए हैं तो क्या हम इनको ढीला नहीं कर सकते ? क्या यह उचित है कि हम पुराने लकीर के फकीर बने अपनी दुर्दशा अपनी आँखों देखते रहें और कुछ प्रबन्ध न करें ? भाइयों ! हम पुरुष हैं, हमको उन्नति-पथ पर अग्रसर होना चाहिये । सारा संसार इस विज्ञान के युग में आगे बढ़ रहा है, फिर हमीं क्यों इस तरह अपनी दुर्दशा देखते रहें ? सज्जनों ! यदि हम स्वयं अपने देश की रमणियों पर दया नहीं करते तो कैसे आशा कर

छिया ?

जीवन का शाप

सकते हैं कि दूसरे हम पर दया करें। हमको चाहिये कि हम सब बन्धनों को तोड़कर अपनी दुर्दशाग्रस्त बहिनों पर दया करें और देश को उन्नतशील बनाने में सहायक हों (करतल ध्वनि)। भारत में करोड़ों की संख्या में विधवा स्त्रियाँ हैं और लाखों बाल-विधवायें। कम-से-कम इन बाल-विधवाओं पर तरस खाकर यदि हम इन्हें गार्हस्थ्य-जीवन में प्रवेश करा दें तो देश की बहुत-सी संतप्त आत्मायें सुखी हो जायँ और दिन-रात होने वाले बहुत से अत्याचारों का अन्त हो जाय। प्रति वर्ष कितनी ही हिन्दू विधवायें धर्म को तिलांजलि दे मुसलमान ईसाई हो जाती हैं। कितनी समाज की बलिवेदी पर अत्यचारियों द्वारा बलिदान होती हैं। क्या हमारा कर्तव्य नहीं है कि इनकी रक्षा करें? यदि आप इनके कष्ट-निवारण को अपना कर्तव्य समझते हैं तो आइये, आगे बढ़िये। बताइये आप लोगों में कितने लोग हैं जो हमारी सहायता करने को तैयार हैं?

लगभग आधे लोगों ने हाथ उठा दिया।

वक्ता महाशय ने पुनः कहना आरम्भ किया—आप लोगों में उत्साह की तो कमी नहीं है, परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि इस कार्य में कोई अगुआ होवे। बहुत से लोग मिलते तो हैं, पर अगुआ होने के लिये तैयार नहीं होते। बहुतों का विवाह हो गया और बहुत से यहाँ पर भी वृद्ध बैठे हैं। क्या है

सैंतालीस

जीवन का शाप

मुझे ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो मार्ग-प्रदर्शक बनकर आगे बढ़ सकें। इसके लिये ऐसे युवक चाहिये जो अविवाहित हों और विधवाओं से विवाह करना चाहते हों। ऐसे अभिभावक चाहिये जो अपनी विधवा कन्याओं को पुनर्विवाह सूत्र के बन्धन में डालने से न हिचकें। क्या यहाँ कोई ऐसे युवक और अभिभावक हैं जो इस रूप में मेरी सहायता कर सकें ?

सभा में सर्वत्र निस्तब्धता छा गयी।

फिर आप लोगों ने जो हाथ उठाये, उससे मेरी क्या सहायता हो सकती है ? क्या एक भी युवक इस शुभ कार्य में हाथ बटाने के लिये उद्यत नहीं है ?

वही पूर्ववत् निस्तब्धता बनी रही।

क्या मैंने अपना और आपका इतना समय व्यर्थ ही नष्ट किया ? यदि मैं विवाहित न होता तो मैं ही आपके सामने उदाहरण रूप में उपस्थित होता, परन्तु शोक मेरे विचारों को कार्यरूप में परिणत करने वाला कोई नहीं। सभा में सन्नाटा छा गया। वक्ता महोदय उदासीन हो बैठना ही चाहते थे कि एक अष्टादश वर्षीय युवक आगे बढ़कर बोला—मैंने तो अविवाहित ही रहने का निश्चय किया था, परन्तु यदि मेरी शरीर से समाज का कुछ भी उपकार हो सके तो मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ और अपने जीवन को धन्य समझूँगा।

अढ़तालीस

जीवन का शाप

वक्ता महोदय ने उस युवक की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—“ऐसे ही वीर भारतमाता की लौह-शृङ्खला को तोड़ने में समर्थ हो सकते हैं और देश को उन्नति-शील बना सकते हैं। बेटा ! तुम्हारा नाम क्या है ?

युवक—भैरव ।

वक्ता—धन्य है उस माता को जिसने तुम जैसे वीर युवक को प्रसव किया ।

युवक ने सिर झुका लिया । इस वक्तृता का जो अंतिम परिणाम हुआ वह अधिक आशा-जनक न था । संध्या भी हो चली थी । गैस इत्यादि का प्रबंध न था । इसलिये निश्चय हुआ कि सभापति जी की वक्तृता के बाद सभा विसर्जन की जाय ।

स्थूलकाय होने के कारण सभापति जी को खड़े-खड़े वक्तृता देने में कष्ट होता, अतः लोगों ने उन्हें बैठे-ही-बैठे बोलने को कहा । पहली ही ख़खार में सन्नाटा छा गया । पंडितजी ने पहिले अपनी पगड़ी सीधी की, दुपट्टा समझालते हुए जोर से ख़ौंस उठे, पर बोले कुछ नहीं । इसपर श्रोतागण हँस पड़े ।

तीन बार जोर से ख़ौंसने के पश्चात् पण्डित जी ने कहना प्रारम्भ किया । किसी ने कहा तीसरी घण्टी हो गयी, पर्दा उठ रहा है, ध्यान दो । किसी ने कहा, तीसरी घण्टी पर गाड़ी छूट रही है, जल्दी आगे बढ़ो, नहीं रह जाओगे, इसी प्रकार बहुत

उच्चास

जीवन का शाप

तरह की टीका टिप्पणी के बाद लोगोंने वक्तृता सुनने में ध्यान दिया। पण्डित जी तो निरे पोथी के बैठन निकले। कुछ भी न बोल सके। इतनी देर तक इधर-उधर करने के बाद भी इतना ही मुख से निकल सका कि आशा है आप श्री रजनीकांत की बातों पर ध्यान देंगे। सभा भंग हुई और श्रोतागणों ने अपनी-अपनी राह ली। पण्डित दीनानाथ को भी चार मनुष्य कंधे पर लाद कर घर पहुँचा आये।



६

तीन मास तक पर्वत की निर्मल वायु में रहने के कारण
 बुखार तो जाता रहा, परन्तु खांसी की शिकायत पूर्ववत् बनी
 रही। अब पहाड़ पर वर्षा अधिक होने लगी थी और शीत
 भी बढ़ गई थी, जिससे घर लौटना आवश्यक हो गया। नित्य
 क्रिया में विघ्न पड़ने से माता जी भी घबड़ा गई थीं। अतः
 कानपुर लौट चलने की तैयारी होने लगी। दूसरे दिन डेरा कूँच
 हुआ। रास्ते में एक दिन हरद्वार स्नान के लिए रुकने के पश्चात्
 सीधे कानपुर के लिये आगे बढ़े। कमला की इच्छा थी कि सीधे

एक्कावन

जीवन का शाप

काशी पहुँचा दी जाय पर माता जी की स्वीकृति न मिलने के कारण साथ ही जाना पड़ा ।

कानपुर पहुँचने पर श्रीकांत को देखकर राधाकांतजी बड़े प्रसन्न हुए और कई दिनों तक उत्सव होते रहे । रोज ही एक एक मित्रत मानी जाने लगी, देवी देवताओं की पूजा होने लगी परन्तु श्रीकांत का यही कहना था कि आप लोग व्यर्थ का आडम्बर कर रहे हैं । अभी रोग का जड़ नहीं गई है । कभी न कभी धोखा अवश्य देगा ।

शशिकांत भी जामाता के स्वास्थ्य लाभ का समाचार पा कानपुर देखने आये । बेचारे बीस रुपये मासिक बेतन पर एक कोठी में मुनीबी कर रहे थे । चेहरा फीका पड़ गया था और बहुत ही दुखी थे । किसी ने आवभगत न की । राधाकांत ने दो चार शब्द अवश्य पूछे । 'क्या नहीं, संसारी आदमी जो ठहरे ! शशिकांत कमला से मिले । उसका कुशल समाचार पूछने के पश्चात् श्रीकांत को देखने गये । श्रीकांत ने उन्हें नमस्कार करने के पश्चात् कहा—बाबू जी आपने बड़ी भूल की जो मुझे रोगी के मत्थे अपनी लक्ष्मी ऐसी लड़की को मढ़ दिया । मेरी भी बुद्धि पर पाला पड़ गया था, परन्तु अब पछताने से क्या होता है ? मेरे भाग्य से या दुर्भाग्य से ऐसी सुशील और गुणसंपन्न पत्नी मिली परन्तु मुझे अपने अच्छे होने की आशा नहीं ।

बावन

जीवन का शाप

शशि०—यदि लड़की पर आप की ऐसी कृपा है तो उसके सौभाग्य से आप अवश्य स्वस्थ हो जायँगे ।

दूसरे ही दिन शशिकांत लौटने के लिये उद्यत हुये । कमला भी साथ चलने का आग्रह करने लगी । निदान उन्हें उसके आग्रह से दबना पड़ा ।

विदाई होगयी । राधाकांत बहू को पहुँचाने स्टेशन तक गये । वह चाहते थे कि कम से कम सेकण्ड क्लास में बहू बैठ कर जाय परन्तु शशिकांत के पास इतने रुपये न थे कि सेकण्ड क्लास का टिकट खरीदते और संकोच से कुछ कहते भी नहीं बनता था । राधाकांत को उनके मनोभावों को जानने में देर न लगी । अपनी मानमर्यादा का प्रश्न था । नौकर को संकेत किया और टिकट आगया । शशिकांत झेंपते हुए गाड़ी में बैठे मानो घड़ों पानी किसी ने उड़ेल दिया हो । हृदय ने कहा—बराबरी का सम्बन्ध न होने का यही परिणाम होता है । गाड़ी छूटी । समधी साहब ने दण्ड प्रणाम किया । शशिकांत ने भी सर झुकाकर उत्तर दिया, परन्तु लज्जा के मारे दृष्टि ऊपर न उठी ।

कमला मायके पहुँची । पर घर बदल गया था । अब जिस घर में वह पहुँचायी गयी वह साफ सुथरा दो मंजिला मकान न था, बल्कि एक आँगन में केवल दो कोठरियाँ थीं । माता की सूरत देखकर भी वह चकपका गयी । कुछ ही महीनों के विछोह में

तिरपन

जीवन का शाप

मालूम होता था वह एक दम वृद्धा हो गयी हैं। पहले के सब सामान भी गायब थे और दास दासी का पता न था।

माता कमला से बड़े प्रेम से मिली पर घर में जलपान के लिये ऐसी कोई वस्तु न थी जिसे कमला के सामने ला रखती। चंद्रकला ने संकोच के साथ सूखी रोटी ही उसके सामने ला रखा। थोड़ी देर बाद कहीं से थोड़ी चीनी लाकर दिया। घर की दशा कमला से छिपी न रही। उसने उसी भोजन को अमृत समझ कर खाया और जल पीकर उठ गयी।

दो ही चार दिनों में कमला को घर की रत्ती रत्ती बात मालूम हो गयी। उससे यह बात छिपी न रही कि मेरे ही कारण घर की यह दुर्दशा हुई। उसने स्वतः कहा—मैं जन्म लेते ही मर क्यों न गयी जो माता पिता को यह कष्ट भोगना पड़ रहा है। यदि अपने विवाह का यह परिणाम जानती तो विष खा लेती। माता पिता को ये बुरे दिन तो न देखने पड़ते। जिस सुख के लिये माता-पिता को अपना सर्वस्व स्वाहा कर देना पड़ा, वह सुख भी चिरस्थायी होगा या नहीं परमात्मा ही जानें।

कमला ने देखा कि पिता जी सुबह जाते हैं और रात को आते हैं। फिर भी भोजन पूरा नहीं मिलता। कोई मिलने जुलने भी नहीं आता। एक दिन माता से पूछा—क्यों मां भैरो तो अच्छा है? चंद्रकला ने कहा—क्या पता बेटी? इधर आया तो नहीं।

चौवन

जीवन का शाप

तुम्हारे पिता तो घर रहते ही नहीं, आये किसके पास? फिर आता ही कौन है? सभी अपने पराये हो रहे हैं, फिर भैरो कौन अपना सगा सम्बन्धी है?

कमला—नहीं मां! भैरो से ऐसी आशा नहीं है। वह जब अज्ञात लोगों की सहायता करता है, फिर हमलोगों से तो उसका स्वजनों का सा व्यवहार था।

चंद्र—बहुत स्वजनों को देखा है। सगे ममेरे भाई ने ही सब से पहले कुड़की कराई। सगे सम्बन्धी तो और गला काटते हैं।

कमला—एक बार भैरो की परीक्षा करो तो मालूम होगा।

चन्द्र—मैं बहुतों की परीक्षा किये बैठी हूँ। तुम्हारी इच्छा हो बुला भेजो।

कमला ने भैरो को बुलवाया, परन्तु भैरो न आया। माता के मना करने पर भी दो दिन और राह देखने के बाद कमला ने भैरो के यहाँ स्वयं जाकर मिलने का निश्चय किया। उसी दिन न जाने क्या सोचकर भैरो कमला के यहाँ आ पहुँचा।

भैरो प्रातःकाल ऐसे समय आया जब कि शशिकांत के मिलने की आशा थी। भैरो शशिकांत से बीच-बीच में बराबर मिलता रहता था और उनके दुःख-सुख की खबर लेता रहता था, परन्तु चंद्रकला से नहीं। भैरो को इतने तड़के आया देख शशिकांत ने पूछा—कहो बेटा! इतने तड़के कैसे चले?

पचपन

जीवन का शाप

भैरो—कई दिनों से आपके दर्शन न हुए थे इसलिये चला आया ।

शशि०—और सब तो कुशल है न ?

भैरो—सब आपकी दया है ।

शशि०—कमला आयी है, इच्छा हो तो ज़रा मिल लो ।

भैरोने कुछ उत्तर न दिया । शशिकांत ने कमला को पुकारा । कमला शीघ्र शशिकांत की कोठरी में आ धमकी, पर भैरो को देख कुछ सकपकाई । सिर की साड़ी कुछ आगे खींचकर शशिकांत के पीछे खड़ी हो गयी । शशिकांत बोले—बेटी भैरो घर का लड़का है, तुम्हारे साथ खेलता था । लज्जा कैसी ? बातचीत करो ।

इतना कहते हुए शशिकांत चिलम लेकर पार्श्व की कोठरी में चले गये । भैरो ने कमला से पूछा—कहिये अच्छी हैं ?

कमला जहाँ खड़ी थी वहीं बैठ गयी । बोली—आप तो अच्छे हैं न ! इसी समय शशिकांत कुछ काम से बाहर चले गये । कमला ने फिर कहा—आप तो मुझे भूत ही गये थे । क्यों ? बात ठीक है न ?

भैरो—भूल जाने में ही मैंने भविष्य को उज्ज्वलमय देखा ।

कमला—ठीक है, माताजी ठीक कहती थीं, गरीबों को कोई नहीं पूछता । पिताजी सब कुछ खो बैठे फिर हम सब की याद कौन कर सकता है ?

भैरो—नहीं यह आप अनुचित कह रही हैं । ऐसी बात नहीं

छप्पन

जीवन का शाप

है। पिता जी से तो मैं बराबर मिलता रहता हूँ और यदि आप अपने लिये कहें तो आप गरीब तो हैं नहीं, फिर आप पर यह बात कैसे लागू हो सकती है। मैं तो आपके पैरों की धूल भी नहीं हूँ।

कमला—आप और हम साथ-साथ खेतते थे। आपका इस तरह बात चीत करना आपको शोभा नहीं देता। फिर आप मुझे आप कहकर पुकार रहे हैं। इससे हम दोनों में कितनी दूरी पड़ी हुई मालूम पड़ती है, यह आप स्वयं समझें।

भैरो—कमला देवी ! यदि आपको आप कहना खटकता है तो न कहूँगा। परन्तु दूरी तो वास्तव में पड़ गयी है और संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं जो हम दोनों के पूर्व व्यवहार को पुनः स्थापित कर सके। फिर श्रीमती जी ने भी तो आप ही से शुरू किया था।

कमला—अब मैं भी न कहूँगी। हम लोगों को तुम शब्द प्रयोग करना ही शोभा देता है। पूर्व व्यवहार तो वास्तव में स्थापित होना असम्भव है, परन्तु यथाशक्ति हम लोगों में सद् व्यवहार रहना उचित है।

भैरो—भला इसके लिये मैं कब नहीं कहता हूँ। तुम्हारे विवाह में ही मैंने कौनसी बात उठा रखी थी ? अच्छा जाने दो, अब मूल विषय पर आओ ! यह बताओ कि श्रीकांत जी का स्वास्थ्य अब कैसा है ?

सत्तावन

जीवन का शाप

कमला—(कुछ शर्माकर) हाँ, अच्छे तो हो रहे हैं, पर मूल रोग का अस्तित्व जाता नहीं दीखता ।

भैरो—ठीक हो जायँगे । रोग जरा कठिन है, कुछ रुपया लगेगा । ईश्वर उनको दीर्घायु करें ।

कमला—इसके लिये तुम्हें धन्यवाद है ।

भैरो—अच्छा ! सास तो प्यार करती हैं न ?

कमला वद तो कुछ नहीं कहती, पर ननद जी का स्वभाव कुछ तीखा है ।

भैरो—यह भी हम हिन्दुओं के पारिवारिक जीवन में एक भारी कष्ट है । कोई कुटुम्ब ऐसा नहीं जहाँ एक-दो ऐसे लोग न हों जो सबको कष्ट न देते रहें, क्या तुम्हारी ननद तुम्हारे ही यहाँ रहती हैं ?

कमला—हाँ ! जीजी बाल-विधवा हैं और उन्हें कोई है भी नहीं ।

भैरो—विधवाओं की संख्या भी भारत में अगणित है । समाज के अत्याचारों को सहते-सहते इनका स्वभाव अत्यंत कटु हो जाता है, इसीलिये ये स्वयं कष्ट सहती हैं और दूसरों को भी कष्ट देती हैं ।

कमला—तुम तो बड़ा ज्ञान छांटने लगे ।

भैरो—तुम्हीं बताओ क्या मैं झूठ कहता हूँ ?

कमला—परन्तु इसकी कोई दवा भी तो नहीं । ईश्वर ने जिसके भाग्य में जो लिख दिया है, भोगना ही पड़ता है । उसका निवारण कौन कर सकता है ?

अट्ठावन

जीवन का शाप

भैरो—वैवाहिक नियम ईश्वर ने नहीं बनाये हैं। समाज के बनाये हुए हैं, यदि समाज उनमें सुधार करे तो ईश्वर बाधक नहीं हो सकता।

कमला—समाज क्या किसी मरते मनुष्य को रोक सकता है जो स्त्री विधवा न हो ?

भैरो—नहीं, जिस तरह पुरुष अपने कई विवाह कर सकते हैं, उसी तरह स्त्रियों के भी पुनर्विवाह हो सकते हैं।

कमला—फिर गृहस्थ और वेश्याओं में अन्तर ही क्या रह जायगा ? आज एक की है तो कल दूसरे की।

भैरो—गार्हस्थ्य-जीवन और वेश्या-वृत्ति में बहुत अन्तर है। गृहणी सुख-दुःख की संगिनी होती है और वेश्या पैसे की। क्या विधवायें सुगृहणी नहीं हो सकतीं ?

कमला—पर विधवाओं के साथ विवाह कौन करेगा ? यदि उनके भाग्य में सुख रहे तो पति की अकाल मृत्यु क्यों हो ?

भैरो—यदि किसी पुरुष की एक स्त्री मर जाती है तो क्या दूसरी भी नहीं जीवित रहती ? उसी तरह यदि एक पुरुष मर जाय तो क्या दूसरे से भी सुख नहीं मिल सकता ? विधवा विवाह अवश्य होना चाहिये। हाँ अभी कुछ ऐसे युवकों की आवश्यकता है जो समाज की वेदी पर बलिदान होने की क्षमता रखते हों।

उन्सठ

जीवन का शाप

कमला—तो पहिले तुम्हीं रास्ता क्यों नहीं दिखाते ?

भैरो—मैंने तो निश्चय किया था कि विवाह ही न करूँगा, परन्तु यदि समाज को मेरी आवश्यकता पड़ेगी तो मैं सबसे पहले अपने स्वार्थों का बलिदान करने के लिये तैयार होऊँगा।

कमला—इसका अर्थ यह है कि तुम विधवा-विवाह करोगे ?

भैरो—इसमें कोई हर्ज नहीं।

कमला कुछ कहना ही चाहती थी कि शशिकांत के पैरों की आहट से दोनों को मौन धारण करना पड़ा। शशिकांत हाथ में गुड़-गुड़ी लिये खौंसते हुए कोठरी में आ विराजे और भैरो को कुछ जलपान कराने के लिये कमला से कहा।

भैरो के नाहीं नाहीं करने पर भी कमला जलपान लेने गयी, पर घर में कुछ था ही नहीं उसे बड़ा संकोच हुआ। कमला के आने में विलम्ब होने का कारण भैरो समझ गया, उसने शशिकांत से आग्रह-पूर्वक कहा—आज चमा कीजिये, फिर कभी जलपान कर लूँगा। आज एक मित्र के यहां जाना है।

शशिकांत ने भी अधिक जोर देना उचित न समझा। उन्होंने कहा—अभी कमला यहीं रहेगी। आते-जाते रहना।

भैरो—जैसी आपकी आज्ञा। कहकर उसने प्रणाम किया और घर की राह ली। शशिकांत भी नोकरी पर जाने की तैयारी करने लगे।

जीवन का शाप

भैरो के चले जाने पर कमला ने शशिकांत से कहा—बाबू जी, आप बिना सोचे समझे जलपान की फर्माइश कर बैठे, परन्तु यह नहीं सोचा कि घर में रखा ही क्या है ?

शशि०—बेटी तुमको और भैरो को साथ देख अपनी दशा भूल गया था और पुरानी स्थिति की याद ने ऐसी भूल होने का अवकाश दिया ।



१०

लगभग छः महीने तक कमला पिता के घर सुख से रहो।
 भैरो अब पूर्ववत् ही स्वच्छन्दता से मिलने के लिये आने
 लगा था। कोई रुकावट न थी। परन्तु पूर्ववत् एकान्त
 स्थान न था कि स्वच्छन्दता पूर्वक बात चीत होती। घर में
 इनी गिनी दो-तीन कोठरियाँ थीं और चंद्रकला घर में वर्तमान
 रहती थीं। फाल्गुन का महीना बीत गया। चैत्र में कानपुर से
 पत्र आया 'तबियत बहुत खराब है, खून का वमन शुरू हो गया
 है, बहू को भेज दो।

बासठ

जीवन का शाप

यदि किसी को थोड़ी सहानुभूति होती तो कहता कि इस उमर में यह दुःख कैसे सहेंगी ? किन्तो तरङ्ग मर भी जाती तो अच्छा होता ।

कमज़ा सोचती क्या मैं संसार के लिये इतनी भार-स्वरूप हूँ । माना कि पति मर गया, पर इससे क्या होता है ? संसार में कितनी ही विधवाये पड़ी हैं । वे हँसती-बोलती हैं, खाती-पीती हैं, मर थोड़े हो जाती हैं । फिर मैंने ही कौन-सा ऐसा पाप किया है जो लोग मुझे कोस रहे हैं ।

दस दिनों तक लगातार सगे सम्बन्धी तथा इष्ट-मित्र आते रहे । दिन भर तांता लगा रहता था । पैसे बाज़ों के यहाँ कोरी सहानुभूति की कमी नहीं । दिन रात घर में कुड़राम मचा रहता और रात भी आहें भर-भरकर कटतीं । धीरे-धीरे क्रिया-कर्म समाप्त हो गया । लाज़ाजी भी अपने काम पर गये । पेट नहीं मानता चाहे अमीर हो या गरीब । आँखें रोती हैं, हृदय कलपता है, पर पेट अपने काम से नहीं बाज़ आता । दो-एक रोज़ कृपा कर दी तो हृद हो गयी । श्रीकांत चले गये तो क्या हुआ, संसार अपने निश्चित मार्ग पर चलने लगा । जहाँ काम-काज की मंफ़्ट पड़ी, लाज़ा जी भी ससदुःख भूज गये । हाँ, माता का हृदय इस शोक को इतनी जल्दी नहीं भूल सकता था । तिसपर शोक की मूर्तिमान-कमज़ा, वैधव्य के रूप में प्रतिबल पुत्र विछोह की याद दिलाया करती थी ।

सरसठ

११

कमला की अवस्था लगभग चौदह वर्ष की होगी। इच्छा न रहते हुए भी उसे संसार से विरक्त रहने का पाठ पढ़ाया जाने लगा। सांसारिक सुख किसे कहते हैं, इसका अनुभव करने के पहले ही भाग्य ने उसका सर्वस्व हरण कर लिया। संसार में अब उसके लिये कहीं स्थान न था। दो, रोटी खाना, दस बात सुनना और मंलीन वेष में पड़ी रहना, यही उसकी जीवन-चर्या थी। ईश्वर ने सर्वदा के लिये उसे एक अनमोल रत्न से वंचित कर दिया था, पर समाज इतने पर सन्तुष्ट न था। सौभाग्य का

अद्वैत

जीवन का शाप

सिन्दूर, हाथ की चूड़ी, नाक की नथ आदि उतार लिये जाने पर भी उसे चिन्ता नहीं थी। परन्तु लोगों की जज़ी-कटी, डाइन है, अभागिनी है, पति को आते ही चवा गयी, बुड्ढों की बुढ़ीती चौपट कर दी, न जाने कैसे मुँह दिखाती है, लज्जा नहीं आती, दूसरी कोई होती तो साल-दो-साल किसी को मुँह न दिखाती, आदि बातें उसके हृदय में भूकम्प जैसा कम्पन पैदा कर देते। दास-दासी सभी को ऐसी बातें कहने का अधिकार था। फिर सौदामिनी तो उसकी ननँद थी। उसे कौन रोक सकता था? खबर लेने वाला यदि कोई था तो केवल उसकी सास। उसे उसकी दशा पर तरस आती थी। एक बार बेटी को समझाया था—इसका इसमें क्या दोष? भगवान की ऐसी ही इच्छा थी। हम सभी अंधे हो गये थे। ऐसी असाध्य बिमारी होगी यह किसी को मालूम नहीं था, नहीं तो यह अवसर ही क्यों देखने को मिलता? कितने ही डाक्टर विवाह के पहिले भी देख चुके थे, पर सबकी आँखों पर परदा पड़ गया था। इस बेचारी को कोसने से क्या लाभ? हम सभी के भाग्य फूट गये थे, नहीं तो हममें-से किसी एक के भाग्य से तो बच जाता। इसने तो अपनी शक्ति भर सेवा करने में कुछ नहीं रख छोड़ा। मुख्य बात तो यह है कि मृत्यु से बचा ही कौन सकता है? सिवाय उस जन्मदात के।

सौदा०—यदि इसके भाग्य अच्छे होते तो भैया अवश्य अच्छे

उन्हतर

जीवन का शाप

हो गये होते। सौभाग्यवती स्त्रियों के भाग्य से मुर्दे भी जीवित हो जाते हैं। सावित्री को देखो, यम से लड़कर पति को बचा जाई। आज अगर यह न आयी होती तो जो होना था सो तो होता ही पर कसक तो न होती।

सुशीला—कुछ अपने से तो आई नहीं, जब हमलोगों ने बुलाया तब आयी। बड़े बड़े पण्डितों ने जन्मपत्री देखी थी उन्होंने कहा कि बहुत लक्ष्मी है, तब विवाह किया।

सौदा०—पण्डित तो अपने पैसे सीधा करना जानते हैं। उन्हें किसी के मरने जीने से क्या प्रयोजन? विवाह हुआ, सैकड़ों की गोटी हाथ लगी। मरनी हुई तो भी लाभ ही लाभ! उनके तो दोनों हाथ में लड़कू रहते हैं? चाहे कोई मरे वा जीये। मेरे ही विवाह में क्या कम लिया था? बाबूजी ने छान-बीन में कौन सी कोर-कसर छोड़ रखी थी? छः छः बार जन्मपत्री दिखाई पर उसका क्या फल हुआ?!

सु०—बेटी तुम्हीं सोचो। इसी प्रकार तुम्हें कोई दोष दे तो कितना बुरा लगेगा? ईश्वर की जैसी मरजी होती है होकर रहता है। क्या करेंगे पण्डित और क्या करेंगे माता-पिता? विधि का लिखा कौन मेट सकता है, इसलिये किसी को दोष देना उचित नहीं।

सौदा—यह तो ठीक है, पर मैंने किसी को दो साल तक

सत्तर

जीवन का शाप

मुँह नहीं दिखाया था । कुछ लज्जा भी तो होनी चाहिये । हँसना बोलना तो सदा है ही । यह भी तो सोचना चाहिये कि दुनिया क्या कहेगी ?

सु०—अभी लड़कपन है । भले बुरे का अभी उसे ज्ञान नहीं ।

सौदा०—मैं तो बुढ़िया हो गयी थी ?

सु०—अपनी बात जाने दो । हमलोगों का यही कर्तव्य है कि जहाँ तक हो सके उसके दुख को कम करें । और याद दिलाना उचित नहीं ।

सौदा०—वह खुद ही भूली हुई है । अपने रङ्ग में मस्त है । उसे किसी के जीने मरने की क्या चिन्ता ? मैं इतना डाटे न रहूँ तो और न जाने क्या करे ? मां तुम तो सिर चढ़ाती जाती हो । अभी से डाट में रखना चाहिये नहीं तो पीछे पड़ताना पड़ेगा । उलटे मुझी को डाँटती हो ।

सु०—नहीं बेटी, डाटती नहीं समझाती हूँ ।

सौदा०—तो उसके सामने कहकर उसे शह देने से क्या लाभ ?

सु०—अच्छा अब न बोलूँगी । जो तेरी इच्छा हो कर ।

सौदा०—मुझे किसी की बहू से बोलने का क्या अधिकार ? बुरी चाल सभी को खटकती है । घर के नौकर आदि भी मुँह खोल देते हैं, फिर मैं तो चौबीस घण्टे छाती पर रहती हूँ । क्या

एकहतर

जीवन का शाप

करूँ ? मुँह नहीं मानता । ईश्वर ने तुम लोगों के आश्रित बना दिया है, नहीं तो ऐसी बातें बहू की ओर; से न कहतीं ।

इतना कहकर सौदामिनी ने रोना-सा मुँह बना लिया । सुशीला ने देखा कि व्यर्थ ही बात बढ़ती जा रही है, चुप हो रही । सुशीला रसोई घर में चली गयी । सौदामिनी इधर से छुट्टी पा दास दासियों पर गुस्सा उतारने लगी । बेचारी कमला एक अन्धकारपूर्ण प्रकोष्ठ में जाकर दोँ आँसू गिराने लगी । सोचने लगी, इसमें इन लोगों का क्या दोष ? मैं ही अभागिनी हूँ । मेरे ही कारण दो घरों का सत्यानाश हुआ । एक तरफ अत्यधिक व्यय से पिता का सर्वनाश हुआ और दूसरी तरफ श्वसुरालय अशान्ति का घर बन रहा है । लोग कहते हैं कि ईश्वर कर्मानुसार फल देता है पर मैंने न जाने कौन सा अपराध किया है जिससे यह फल मिल रहा है । सर्वस्व छिन जाने पर भी भर पेट भोजन बिना दो आँसू बहाये नहीं मिलता । पृथ्वी माता फट जाती और मैं उसमें समा जाती तो मेरे दुखों के साथ साथ घर की अशान्ति की भी इतिश्री हो जाती । अब यह दुःख असहनीय होता जा रहा है । यहाँ परदेस में कोई अपना भी नहीं है जिसके सामने दो मिनट रोकर दिल को हल्का करती । मैं कोअप निराश्रय समझ कमला फूट-फूटकर रोने लगी । उसे एक-एक कर अपने सभी स्वजनों की याद आने लगी । भैरो की निराशापूर्ण

बहत्तर

जीवन का शाप

मुखाकृति भी आँखों के सामने नाचने लगी। वही राजघाट के पुल के पत्थर पर बैठी हुई नैराश्य की मूर्ति थी, मानों संसार से विरक्ति हो गयी हो। उस क्षणिक दर्शन में कितना आनन्द था—कितनी अवृत्त लालसा थी ! यदि वह मिलाप चिरकाज के लिए होता तो कितना सुख मिलता पर यह दुख भोगने यहाँ कौन आता ?

कमला की आँखें भैरो की उसी मूर्ति की विवेचना करती हुई बन्द हो गयीं। उसे निद्रा ने धर दबाया। दुख की सच्ची संगिनी निद्रा है। वह धनी से लेकर दरिद्र तक पर दया करती है। मनुष्य को जब कहीं सहारा नहीं मिलता तो निद्रा देवी की गोद में ही आश्रय खोजता है। इसी निद्रावस्था में कमला ने स्वप्न देखा—

मैं मर गयी हूँ। घर के सभी लोग बड़े प्रसन्न हैं। वह भी प्रसन्न है और इसलिए कि इस दुखी संसार से छुटकारा तो मिला। इसी समय सौदामिनी के कर्कश स्वर ने उसकी निद्रा भंग कर दी। स्वप्न का सारा सुख क्षण भर में स्वप्नवत् हो गया।

सौदामिनी कह रही थी—तुम्हीं जाकर अपनी दुलारी बहू को जगाओ। बज्जर की नींद है बज्जर की। न घर से काम न गृहस्थी से। भोजन के लिये बीस बार मनाने की जरूरत पड़ती है। मेरी बहू होती तो मैं उसका मुँह न देखती।

तिहत्तर

जीवन का शाप

इसी समय दासी ने आकर पुकारा—बहू भोजन कर लो, फिर जी भर कर सोओ। यह भी कोई सोने का समय है। यह सब धंधा कुलच्छनियों का है।

कमला को ये शब्द तीर की तरह लगे। जहाँ के दास-दासियों में उसका यह सम्मान, वहाँ एक क्षण रहना भी मरण-यंत्रणा से कम नहीं। पर कोई वश न था। हिन्दू विधवा थी। उसके लिये नर्क में भी स्थान न था। जी चाहा कि कह दूँ भूख नहीं है, पर यहाँ कौन किसको पूछता है? कोई अपना तो है नहीं। कितने दिन तक भूखी रहूँगी।

उठकर मुँह धोया। वस्त्र बदल ही रही थी कि पुनः सौदामिनी के वही कर्कश स्वर सुनाई पड़े—जाने दो, नहीं आती न सही। जिसको भूख लगेगी आप आयेगी। खुशामद करने की क्या आवश्यकता है? ऐसी ही शान है तो बाप के यहाँ क्यों नहीं चली जाती? यहाँ यह नखड़ा कौन बर्दाश्त करेगा?

यह सब सुनकर भी कमला ने जाकर भोजन किया। फिर अन्य-मनस्क होकर पुनः बिस्तर पर पड़ रही। सोचा—आज ही यहाँ से चली जाऊँ, पर जाऊँगी कहाँ? उसके लिये संसार में कहीं स्थान नहीं। हाँ गंगा माता की गोद में तो स्थान है? क्यों न उन्हीं की गोद में आत्म-समर्पण कर दूँ? नहीं, नहीं, आत्म-हत्या को भी शास्त्रों ने पाप कहा है, तो फिर क्या करूँ?

चौहत्तर

जीवन का शाप

इन्हीं सब विचारों में वह घण्टों डूबती उतराती रही, परन्तु कोई मार्ग निश्चित न हो सका । सब अत्याचारों को सहते हुए रुदन करने के अतिरिक्त उसने और कोई दूसरा रास्ता अच्छा नहीं समझा ।



१२

लाला राधेकान्त पुत्रशोक से संतप्त तो रहते ही थे, साथ ही साथ घर की अशान्ति उन्हें और भी व्याकुल करने लगी। उनका हृदय बड़ा खिन्न रहता। दिन भर व्यापार में लगे रहते और रात्रि में घर आते, घर में विचित्र ही दृश्य दिखाई देता। जिसको देखो वही कोने में मुँह फुलाये बैठा रहता और पूछने पर मालूम होता कि नित्यप्रति घर में इसी तरह झगड़ा होता है। सौदामिनी दिन रात कमला को बुरा-भजा कहती, परन्तु कमला इतना ही कहकर शान्त हो जाती कि मैं क्या करूँ ? भाग्य के आगे

छिहतर

जीवन का शाप

मेरा क्या वश ? अथवा इसी प्रकार कोई सीधा उत्तर दे देती । कमला का इतना कहना भी सौदामिनी के लिए असह्य हो जाता । वह रोती, चिल्लाती, बिगड़ती और कहती इतनी हिम्मत कि मुँह पर जबाब देती है ? बिना खाये पिये सो रहती । लोग उसकी खूब मनौनी करते । माता मनाती, कमला हाथ जोड़ती और चमा-याचना करती तो कहीं देवी सन्तुष्ट होती, पर मनोमालिन्य न जाता । महीने दो महीने तक यही रूपक चलता रहा । अन्त में कमला ने भी एकदिन अपनी शान में आकर चमा नहीं मांगी । उस दिन किसी ने घर में भोजन नहीं किया । कमला के इस हठ पर सुशीलादेवी को भी कुछ क्रोध हो आया, परन्तु दबकर रह गयी । दोनों को अपनी शक्ति भर समझाने का प्रयत्न किया, परन्तु सब उल्टे घड़े पर पानी की तरह हुआ । न तो कमला ही पिघली और न सौदामिनी ने मान तोड़ा । बात केवल इतनी ही थी कि पीसते समय कुछ नमक कमला से जमीन पर गिर गया था । इस-पर सौदामिनी ने दो-चार जली-कटी बातें सुनादीं । कमला ने इसका प्रतिवाद किया और इतनाही कहा कि कोई जान-बूझकर थोड़े ही नुकसान करता है । बस फिर क्या था ? बाप दादे तक बखान कर गई । अन्त में कोप-भवन की लीला प्रारम्भ हुई । दासी ने बहुत मनाया, माता ने प्रेम से समझाया, पर सब विफल हुआ । कमला के हाथ जोड़ने की बारी आयी, पर उसने ऐसा हठ

सतहत्तर

जीवन का शाप

पकड़ा कि सौदामिनी के पास तक न फटकी । लाजा जी तो भोजन कर कोठी जा चुके थे । बाकी सब लोग भूखे हो रह गये । रात को आने पर लाजा जी को माजूम हुआ कि आज सभी सोलहो दण्ड एकादशी मना रहे हैं । कारण जानकर क्रोध आया, परन्तु क्रोध करें भी तो किसार ? बहू अभी नादान है, हठ कर गयी । आखिर कोई कहीं तक बरदाश्त करेगा ? बहुत सोच विचार के पश्चात् सौदामिनी को ही समझाना उन्होंने उचित समझा । उसके पास जाकर उन्होंने कहा—बहू अभी दुखी और अवोध है । बेटी ! हम तुम न बरदाश्त करेंगे तो कौन करेगा ? ऐसा कार्य करो जिससे वृद्धावस्था में मुझे कष्ट के दिन न देखने पड़ें ।

सौदामिनी की भृकुटी चढ़ गयी वह तड़फती हुई उठ बैठी और बोली—बहू अवोध है और आप लोग हैं वृद्ध, तो क्या मैं ही कोल्हू की बैल की तरह दिन-रात गृहस्थी में पिसा करूँ ? समझी ! मेरा अब इस घर में निर्वाह न होगा, दिन भर काम करती हूँ तो दो रोटि खाती हूँ । किसी को दबैल नहीं हूँ जो इसकी बरदाश्त करूँ । आप लोगों की तो बरदाश्त की ही नहीं इसकी कौन करेगा ? अवोध है तो अवोध की तरह रहे । यहाँ मालिकाना न चलेगा । अपनी समझ कर रखियेगा तो पड़ी रहूँगी, नहीं जहाँ कहीं भी इतना काम करूँगी माथे पर चढ़ी रहूँगी ।

अठहत्तर

जीवन का शाप

राधे—तुमसे तो हमलोग सभी डरते रहते हैं । कोई चू तक नहीं करता । बाल-हठ प्रसिद्ध है । बहू ने यदि हठ पकड़ लिया है तो इतना बुरा नहीं मानना चाहिये । लड़की है एक बार चमा करनी चाहिये ।

सौदा०—प्रतिदिन की तो यही लीला है । आज ही से समाप्त थोड़े हैं । इसके मुँह में लगाम नहीं है । तड़ातड़ उत्तर देती है । मुझसे तो यह कदापि नहीं सहा जायगा । तुम्हारी लड़की है सहो । मेरा तो सोने का घर इसने खाक में मिला दिया ।

इतना कहकर वह जोर-जोर से रोने लगी—‘हाय भैया, आज तुम न हुए नहीं तो मुझे कोई आधी बात कहता तो देख लेती । इसी प्रकार भाई को सम्बोधन कर सौदामिनी ने खूब रोने का जाल फैलाया । राधेकांत की भी आँखों में आँसू आ गये ।

राधेकांत के बहुत समझाने पर सिसकियां भरती हुई वह बोली—अब मैं इस घर में जल न पीऊँगी । मुझे संसार से क्या करना है ? काशी चली जाऊँगी । वही काशीवास करूँगी । कहीं न भोजन मिलेगा तो भीख माँगकर खाऊँगी । यदि मेरे भाग्य में सुख हो बदा होता तो ईश्वर मेरी यह दुर्गति क्यों करते ?

राधेकान्त ने भी अन्यमनस्कता प्रकट करते हुए कहा—मुझे भी क्या करना है । जब अपना कोई है ही नहीं तो दिन भर हाय हाय क्यों करूँ ? कौन रोने वाज़ा बैठा है ? जो कुछ करता

उन्यासी

जीवन का शाप

हूँ तुम्हीं लोगों के लिये, पर जब तुम्हीं लोग प्रसन्न नहीं तो मुझे संसार को लेकर क्या करना है ? मैं भी तीर्थयात्रा कर अपना जीवन सफल करूँगा ।

यह सब सुनकर सुशीला से न रहा गया । उन्होंने कहा—
बहु ऐसा हठ किस काम का ? स्वयं रोती हो दूसरों को भी रुलाती हो । घर तो मिट्टी में मिल ही गया । अब जो बचे हैं उनपर तो दया करो ।

कमला ने देखा, सौदामिनी का अपराध उनलोगों की दृष्टि में नहीं के बराबर है । सभी मुझको ही दोषी समझ रहे हैं । किसी तरह से छुटकारा नहीं । निदान सौदामिनी से चमा मांग राधे-कांत से हाथ जोड़कर बोली—पिता जी ! मुझ अभागिनी के कारण आप लोगों को अत्यधिक कष्ट हो रहा है । मैं इस योग्य नहीं कि आप लोगों की कुछ भी सेवा कर सकूँ । अज्ञानता में जो कुछ मुझसे अपराध हुआ हो चमा कीजिये । आप ही अब मेरे सर्वस्व हैं । बहुत दिनों से यहाँ रहने के कारण तबियत कुछ ऊँब गयी है । इसीलिए कभी कभी ऐसी भूल हो जाती है और आप लोगों के लिए कष्टदायक होती हूँ । मेरे अपराधों को आप न चमा करेंगे तो कौन चमा करेगा ?

राधे—अच्छा बेटी ! जो हुआ सो हुआ । कोई चिन्ता नहीं । अब सम्हल कर रहो । क्या करूँ ? सौदामिनी जैसी मेरी बेटी

अस्सी

जीवन का शाप

है वैसे ही तुम भी हो। वह भी विधवा है। ईश्वर ने उसे दुखी कर दिया है, फिर तुम्हीं बताओ उसका मन कैसे मैला करूँ ?

तुम्हीं छोटी बनकर रहो। हाँ, तबीयत घबड़ाती अवश्य होगी। बंद वायुमण्डल में अवश्य जी घबड़ा जाता है। हमलोग बाजार में बैठते हैं। फिर भी कभी कभी चित्त खिन्न हो जाता है, तुम तो घर में ही पड़ी रहती हो ! न कोई बोलने वाला न बात चीत करने वाला, तिसपर संसार का कोई सुख नहीं देखा। पर क्या करूँ ? लोकलज्जा तो देखनी पड़ती है। इसीलिए कहीं जाने की अनुमति नहीं देता ; कहो तो तुम्हारे पिता को पत्र लिख दूँ, कुछ रोज के लिये वहाँ हो आओ, चित्त बहल जायगा।

कमला—आपकी जैसी आज्ञा होगी शिरोधार्य है

सौदा०—अभी सालभर न हुआ और घूमने का भूत सवार हो गया। लज्जा नहीं आती। भला लोग क्या कहेंगे ? सारा जीवन घूमने के लिए है ही।

राधे—पिता के घर जाने में कौन बोल सकता है ? तुमको तो मैं १५ दिन बाद ही बुला लाया था।

सौदा—बुला नहीं लाते तो क्या करते ? क्या मुझे उसी अकेले घर में छोड़ देते। वहाँ कोई रोने हंसने वाला भी तो नहीं था, पर यहाँ तो मनोरञ्जन की सभी सामग्रियाँ उपस्थित हैं। कमला के चले जाने से नाम में धब्दा लगेगा।

एक्यासी

जीवन का शाप

राधे—अच्छा फिर देखा जायगा ? इस समय सब कोई चल कर पहिले भोजन करो, फिर नाम के लिए मरना ।

सौदामिनी का क्रोध रफूचकर होगया । यह सोचकर हृदय को शान्ति मिली कि कुछ दिनों के लिए इस अभागिनी से छुटकारा हुआ । कमला ने हाथ जोड़कर सौदामिनी से भोजन करने की प्रार्थना की । सबों ने जाकर भोजन किया और अपने-अपने कमरे में चले गये । कमला की वह रात्रि रुदन करते करते ही व्यतीत हुई । अपने दुर्भाग्य पर नाना प्रकार के तर्क वितर्क करती कलपती रही, पर यहाँ कोई ऐसा न था जो सांत्वना के दो शब्द कहता । ईश्वर न जाने इस नारकीय । कारागृह से कब मुक्त करेगा । सोचने लगी—किसी समय स्त्रियाँ पति के साथ चिता की अग्नि में भस्मसात् हो जाती थीं । वह कैसा स्वर्ण-युग था ? प्रज्वलित अग्नि-शिखा के साथ साथ वैधव्य जीवन में आने वाले सारे दुखों का अन्त हो जाता था, परन्तु आज-कल का वैधव्य जीवन ऐसी अग्नि-शिखा है जो सर्वदा उसी प्रकार बनी रहती है और उसमें बेरी जैसी अगणित असहाय विधवायें प्रतिक्षण दग्ध हुआ करती हैं ।



बयास

१३

आज शशिकांत के यहाँ बड़ा कुहराम मचा हुआ है। मालूम होता है कोई भारी विपत्ति आई है। एक आता है और एक जाता है। सभी आने जाने वाले रोते ही निकलते हैं। शशिकांत एक कोने में मुँह लटकाये बैठे हैं। इस शोर-गुलका कारण विधवा कमला का ससुराल से प्रथम आगमन है। ऐसा मालूम होता है कि आज ही उसके पति का अन्तकाल हुआ है। बेचारी मलीन श्वेत वस्त्र पहिने, लट छिटकाये, अशुभ वेश में एक कोने में बैठी है। किसी को मुँह नहीं दिखाती मानों कोई बड़ा

तिरासी

जीवन का शाप

पाप किया हो। लोग आते हैं, मौखिक सहानुभूति प्रकट करते हैं और अन्तमें उसके भाग्य को दोष देते हुए चले जाते हैं। जिस कठिन रोग से कमला पीड़ित है उसकी दवा इस संसार में किसी के पास नहीं ! जिस बन्धन में वह बँध गयी है उससे मुक्त करने का साहस किसी को नहीं ! घर से निकलने पर कोई चन्द्रकला को दोष देता और कहता कि चली थी दड़ा घर खोजने, यह नहीं जानती कि भाग्य सर्वत्र साथ रहता है। कोई शशिकांत की बुद्धि को दोष देता कि आप जानते हुए भी एक रोगी वर को कन्या दी। कोई केवल कमला के भाग्य को कोसता कि अभागिनी न होती तो ऐसा क्यों होता ? दिन भर इस तरह आना जान लगा रहा। किसी के मुँह में अन्न तक न गया। मौखिक सहानुभूति प्रकट करने वालों को संसार में कमी नहीं। संध्या समय घर में शान्ति हुई तो सबने भोजन किया। चन्द्रकला और शशिकांत के पास अब ऐसे कोई शब्द न थे जिससे कमला को सान्त्वना देते। उसकी वैधव्य अवस्था देखकर दोनों की आँखें रह-रहकर सजल हो जाती थीं। गला रुँध जाता था।

दूसरा दिन पहले दिन से कुछ शांति-पूर्वक बीता। तीसरे दिन सभी इस नयी स्थिति से अभ्यस्त हो गये और आने-जाने वालों का भी अन्त हुआ। अभी तक भैरो नहीं आया था। कमला के आगमन का समाचार उसे मिल चुका था, पर न जाने क्यों उसके

चौरासी

जीवन का शाप

पास जाने में भैरो के पैर कांपते थे। अन्त में तीसरे दिन वह हृदय को कठोर बना शशिकांत के घर पहुँचा। शशिकांत कहों बाहर गये थे। कमला ने ही दरवाजा खोला। नौ मास पश्चात् भैरो को कमला के दर्शन हुए। कमला की वह मुस्कराती हुई सुखा-कृति इस समय श्री-हीन हो गयी थी। दुर्बलता ने तो मानो उसके शरीर को घर बना लिया था। कमला की यह दयनीय अवस्था देखकर भैरो की आँखों में आँसू आ गये। कमला भैरो के सामने खड़ी न रह सकी। रोती हुई एक ओर भाग गयी और कोने में मुँह छिपा सिसकियाँ भरने लगी। चन्द्रकला को भैरो ने प्रणाम किया। उन्होंने कमला को समझाते हुए कहा—बेटी ! देखो भैरो आया है। तीन दिन तो रोते हो गया, थोड़ा इनसे बात चीत करो तो चित्त बहल जाय। यह तुम्हारे लड़कपन के साथी हैं इनसे लज्जा कैसी ?

कमला भैरो के सामने आयी, परन्तु दोनों में से किसी के मुँह से शब्द नहीं निकलते थे, मानो पत्थर की दो मूर्तियाँ खड़ी कर दी गयी हों। थोड़ी देर तक इसी अवस्था में रहने के पश्चात् इस मूक मिलन का अन्त हुआ।

शशिकांत के आग्रह से भैरो नित्य प्रति आने लगा। वह घण्टों कमला के पास बैठता, उसकी करुण कहानी सुनता और उसके दुःखी जीवन पर समवेदना प्रकट करता। कमला कहती—मुझे

पच्चासी

जीवन का शाप

वैधव्य का उतना कष्ट नहीं है जितना सौदामिनी के व्यवहार से खिन्नता रहती है। घर धन-धान्य से परिपूर्ण है। दास-दासियों की कमी नहीं। सास ससुर भी सम्मान करते हैं, पर इस सौदामिनी ने सारे घर को स्मशानतुल्य बना दिया।

भैरो—क्या करोगी ? हिन्दू परिवार में यही बुराईयाँ जीवन को कष्टमय बनाये रहती हैं। इनका क्रुद्ध अनुभव सभी को करना ही पड़ता है। कोई घर इससे बचा नहीं है। सहन-शक्ति से काम लो।

कमला—मेरे लिये तो वहाँ यन्त्रणा का गहरा कूप है। मेरी इच्छा अब उस घर में पैर रखने की नहीं करती।

भैरो—परन्तु कमला ! दूसरा उपाय ही क्या है ? कुछ दिनों में तुम्हीं उस अतुल सम्पत्ति की अधिकारिणी होगी, फिर कोई तुम्हारी ओर आँख उठाकर भी न देख सकेगा। सन्तोष का फल मीठा होता है। घदराओ नहीं, सास-ससुर की सेवा करो। अन्त में सुख की प्राप्ति होगी।

भैरो की नम्र बातों से कमला को बड़ी शान्ति मिलती और जब तक भैरो घर में रहता कमला अपना दुःख भूल-सा जाती थी।

चन्द्रकला पुराने विचार की स्त्री थी। यद्यपि उसने भैरो तथा कमला को सब तरह की स्वतन्त्रता दे रखी थी, तथापि अकेले में नहीं छोड़ती थी। दोनों घण्टो हँसते बोलते, ताश-शतरंज खेलते

छियासी

जीवन का शाप

और बातें करते, पर एकान्त न पाते। चन्द्रकला प्रहरी की भाँति सदा उनपर तीक्ष्ण दृष्टि रखती।

अब शशिकांत की साम्पत्तिक अवस्था कुछ बदल गयी थी। मालिक ने प्रसन्न होकर वेतन पचास रुपये कर दिये थे। इसलिये पैसे का विशेष कष्ट न था। मकान भी दस रुपये महीने का पूरा का पूरा ले रखा था। खाने-पीने की कमी न थी। कमला भैरो का साथ पाकर, धीरे-धीरे अपने ससुराल के कष्ट को भूल चली थी।

१४

आज चन्द्रकला और शशिकांत किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हैं। कमला भी एक ओर मुँह लटकाये बैठी है। उसको आये छः मास हो गये थे, परन्तु अभी तक ससुराल से बुलावा नहीं आया था। सबको यही चिन्ता व्यग्र कर रही थी कि कहीं ससुराल वालों ने उसे अभागिनी समझ उसका परित्याग तो नहीं कर दिया ? संसार में उसके लिये और कहाँ अवलम्ब है। पिता के घर कब तक निर्वाह होगा ? इसी उधेदबुन में दोनों पड़े हैं।

अट्टासी

जीवन का शाप

इसी समय डाकिये ने लाकर एक पत्र दिया । राधेकान्त महीने-दो-महीने पर कुशल समाचार लिख दिया करते थे । पत्र के ऊपर की लिखावट से ही निश्चय हो गया कि यह लाला राधेकान्त के यहाँ से आया है । उसुकतापूर्वक पत्र खोला गया । उसे पढ़कर शशिकांत की सुखाकृति मलीन पड़ गयी । चन्द्रकला ने पूछी—क्या इसमें भी बुलाने के विषय में कुछ नहीं लिखा है ?

शशि०—नहीं ।

चन्द्र०—तब पत्र में क्या लिखा है ?

शशि०—मेरी तबीयत बहुत खराब थी । परमात्मा की दया से अब सुधर रही है । बचने की कोई आशा न थी, पर मालूम होता है अभी दिन पूरे नहीं हुए हैं । कुछ और देखना बाकी है । न जाने इस संसार से कब छुटकारा मिलेगा ।

चन्द्र०—तबीयत खराब थी, बचने की आशा नहीं थी, फिर भी बहू की याद न आयी । इससे तो मालूम होता है कि अब कभी याद न आयेगी ।

शशि०—तो अब इसका बेड़ा पार कैसे लगेगा ?

कमला सुनते-सुनते ऊब गयी थी । बोली—मेरे दुखी जीवन की नैया कौन पार लगा सकता है ? एक हिन्दू विधवा के भविष्य को उज्ज्वल-मय बनाना मनुष्य की शक्ति के बाहर है ।

नवासी

जीवन का शाप

जिस ईश्वर ने यह दिन दिखाये हैं वही भविष्य की भी चिन्ता करेगा ।

कमला स्वभावतः ही बुद्धि की प्रखर थी और वाक्पटु थी । आकस्मिक दुःख ने उसकी ज्ञान-शक्ति को और भी प्रखर कर दिया था । केवल सौदामिनी के व्यवहार ने उसके हृदय में घृणा की एक धूमिल रेखा खींच दी थी ।

चन्द्रकला ने धैर्य देते हुए कहा—बेटी ! ऐसी अधीर न हो । जिस ईश्वर ने तुम्हें यह दिन दिखाया है वही तुम्हारी सहायता करेगा । काम तो उसी घर से है । फिर चाहे वह बुलावे वा न बुलावे, जाना ही होगा ।

कमला—किसके लिये ? वहाँ अपना कौन है जिसके पास जाऊँ ?

चन्द्र०—तो क्या मेरे घर में तुम्हारा निर्वाह हो जायगा ? हमलोग चार दिन में मर जायँगे, फिर यहाँ तुम्हारी देख-रेख कौन करेगा ?

कमला—तो वहीं कौन बैठा रहेगा ? एक जीजी हैं भी तो उनको मेरा मुँह फूटो आँखों नहीं सुहाता ।

चन्द्र—खैर, कोई नहीं, परन्तु धन तो है । भूखी तो न मरोगी ?

कमला—ऐसे पेट भरने से तो भीख माँगना अच्छा है । पेट तो किसी तरह सभी का भर जाता है ।

चन्द्र०—तो क्या रुग्नावस्था में भी देखने न जाओगी ? परस्पर

नब्बे

जीवन का शाप

प्रेम सम्बन्ध इसी तरह बना रह सकता है । सामना होने से लोगों को कहाँ तक दया न आयेगी ?

कमला—मेरा तो उस घर में निर्वाह होना नितान्त असम्भव है ।

चन्द्र०—न सही । दो-चार दिन पश्चात् चली आना । दुःख में न जाओगी तो कहीं मुँह न दिखाते बनेगा ।

कमला निरुत्तर हो गयी । सास-ससुर से उसे कोई घृणा न थी । यदि था तो केवल सौदामिनी से । फिर श्वसुर की बीमारी में उपेक्षा करना उसने उचित नहीं समझा ।

शशिकान्त ने पूछा—तो क्या पहुँचा आया जाय ?

चन्द्र—हाँ आज ही की गाड़ी से ।

शशि—बिना बुलाये पहुँचाना क्या ठीक होगा ?

चन्द्र—भेजना तो जरूरी है । अशिष्टता का व्यवहार देखना तो लिवाते आना ।

इसी समय बाहर से किसी ने पुकारा । शशिकान्त ने द्वार खोला । दो व्यक्ति उनसे मिलने आये थे । एक तो हमारे पूर्व परचित रजनीकांत थे और दूसरा एक पच्चीस वर्ष का युवक था ।

शशिकांत ने इन लोगों को सम्मानपूर्वक बैठाया । रजनीकांत बात चीत करने में पटु थे । कुशल समाचार के पश्चात् शशिकांत से बोले—कहिये आपकी कन्या यहीं है वा ससुराल ?

शशि०—नहीं अभी तो छः महीने से यहीं है ।

एक्यानवे

जीवन का शाप

रजनी—माजूम होता है ससुराल वाजे उसकी अपेक्षा कर देते हैं ?

शशि—नहीं आज जाने वाजी है, पर आप अपने अकस्मात् आने का अभिप्राय तो कहिये । आपको मेरी घर गृहस्थी से क्या प्रयोजन ?

रजनीकांत ने एक छग हुआ कागज शशिकांत के हाथ में दिया । शशिकान्त ने अद्योपान्त पढ़कर कहा—तो क्या आप उसके पुनर्विवाह की बातचीत करने आये हैं ?

रजनी०—जी हाँ ! इसपर आप की केवल सम्मति लेने आया हूँ ।

शशि—आप को यह विदित है कि हमलोग उच्च वंश के हैं । भला यह कभी सम्भव है ? मैं मान भी जाऊँ तो क्या समाज इसके लिये आज्ञा देगी ।

रजनी०—समाज के भय से एक बालिका के जीवन का बलिदान कहाँ तक उचित होगा ?

शशि०—जो बात आज तक नहीं हुई उसपर मैं कैसे सहमत हो सकता हूँ ? कोई छोटी जाति का तो हूँ नहीं कि एक वर नहीं तो दूसरा तैयार है ।

रजनी०—बाबू साहब ! यह जाति-पांति का समय नहीं और न पुरानी लकीर के फकीर रहने का । जिसमें अपना भला दिखाई दे चही करना चाहिये ।

बानवे

जीवन का शाप

शशि०—यह असम्भव है ।

रजनी०—अच्छा अपनी पत्नी और कन्या से भी इस बात की जिज्ञा कीजियेगा । कोई जल्दी तो है नहीं । मैं फिर मिलूँगा । अवकाश के समय विचार कीजियेगा ।

शशि०—आपका कष्ट करना व्यर्थ सिद्ध होगा । कोई भी इसके लिये तैयार नहीं हो सकता ।

रजनीकान्त निराश न हुआ । पुनः मिलने का सन्देश देते हुए उनसे विदा ली ।

शशिकांत जब बैठक से भीतर गये तो चन्द्रकला ने पृच्छा—
कौन महाशय थे ?

शशि०—एक महाशय कमला के पुनर्विवाह का आदेश देने आये थे ।

चन्द्र०—कौन ऐसा नीच था जिसे ऐसी बात कहते लज्जा न आयी ? मेरे सामने आता तो मुँह झुलस देती । तुमने फटकारा नहीं ?

शशि०—घर आये हुए अतिथि का असत्कार करना उचित न समझ मैंने केवल सर हिलाकर अपनी अस्वीकृति प्रकट कर दी है ।

चन्द्र०—तुम बड़े दबू हो । मुझसे कहते तो मारकर निकाल देती । वेश्या का घर समझ रखा था, जो चले थे लड़की को खराब करने । नहीं जानते कि हमलोग ऊँचे वंश के हैं । अब देखो

तिरानवे

जीवन का शाप

तो बिना लथेड़े न छोड़ूँ। अब तो नहीं आवेंगे न ?

शशि—फिर आने के लिये कह गये हैं।

चंद्र०—अच्छा ! अबकी तुम मेरे सामने कर देना। मैं समझ लूँगी। शशिकांत हँसकर चुप होगये। कानपुर के प्रस्थान की तैयारी होने लगी।

कमला अन्यमनस्क हृदय से धीरे-धीरे अपने कपड़े-लत्ते ठीक करने लगी। उसे माबूम हो रहा था कि वह किसी महान अपराध के कारण कारागृह भेजी जा रही है।



चौरानवे

१५

लाला राधेकान्त के स्वस्थ हो जाने से घर में आज बड़ा समारोह है। लाला जी से ही सुशीला देवी के सौभाग्य और घर की शोभा थी। चाहे वृद्ध हो वा तरुण जब उन्हीं पर गृहस्थी निर्भर हो तो उनका आरोग्य लाभ किसको सुखद न होगा ? सुशीला देवी ने सभी देवी देवताओं की मित्रता मान रखी थी और अब उनके अच्छे हो जाने से मानता उतारने का समय आ गया था। सारे घर में डेढ़ वर्ष से जो विपत्ति के बादल मँढ़रा रहे थे, अब छिन्न भिन्न होता मालूम पड़ रहा था। घर

पञ्चानवे

जीवन का शाप

साफ कराया गया। सत्यनारायण की कथा और विरादरी को भोज देने का एक दिन निश्चित हुआ। आज उसी के लिये उनके घर में यह समारोह दिखाई दे रहा है। एक कमरे में लाला जी एक पलङ्ग पर तकिये के सहारे बैठे हैं। पर अभी मुखाकृति से दुर्बलता का अस्पष्ट झलक दिखाई दे रही है, परन्तु प्रसन्नता में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं है। सुशीलादेवी तथा सौदामिनी पास ही बैठी बैठी निमंत्रण देने की सूची बना रही हैं। अकस्मात् सुशीलादेवी से लाला जी ने प्रश्न किया—और बहू को बुलाया जायगा वा नहीं ?

सौदा०—उस अभागिनी के कारण ही तो यह सब दिन देखने पड़े हैं। जिस दिन से घर में पैर रखा सोने का महल मिट्टी होता गया।

सुशी०—ऐसे अवसर पर न बुलाना उसे बहुत खटकेगा। लोगों के लिये अपवाद का कारण बन जाऊँगी।

सौदा०—बीमारी में भी कुछ खबर ली थी जो भोज ही में न बुलाने से अपवाद फैलेगा। क्या हमलोगों के पास उत्तर देने के लिये शब्द नहीं हैं ?

सुशी०—उसे बीमारी का पता क्या था ? कोई पत्र भी तो नहीं गया था।

सौदा०—क्यों ? पत्र तो अभी परसों ही गया है।

ख्यातवे

जीवन का शाप

राधे०—बीमारी का तो नहीं, अच्छे होने का गया है ।
फिर उसमें तुमने बुलाने को भी तो लिखने नहीं दिया ।

सौदा—समझदारों के लिये उतना ही पर्याप्त है । उसे हमसे कुछ प्रेम होता तो दौड़ी आती । कौन ऐसा सुनहरा भाग्य लेकर आयी है कि सत्तर चिट्ठी लिखकर बुलाया जायगा ?

राधे—एक पत्र तो लिखही देना चाहिये । आये वा न आये उसकी इच्छा !

सौदा—मैं उसका मुँह नहीं देखना चाहती । बहुत खुशामद करोगे तो मैं घर छोड़कर चली जाऊँगी, फिर बहू को लेकर सुख से घरमें रहना ।

लाला जी से कुछ उत्तर न देते बना । सुशीला देवी भी चुप बैठी रहीं । पर दोनों का हृदय कह रहा था कि ऐसे अवसर पर जबकि हजारों आदमी आयेंगे अपनी बहू को न बुलाना बड़ा अन्याय होगा । फिर भी बेटों के आगे एक न चलती थी । सौदामिनी का चेहरा तम-तमाया हुआ था, मालूम होता था कि जो कुछ कह रही है उसपर वह ध्रुव की तरह अटल है ।

सौदामिनी के मुख से अन्तिम वाक्य अभी कठिनता से निकलने पाये थे कि द्वार पर किसों के पैरों की आहट सुनाई पड़ी । निमेष-मात्र में एक युवती ने घर में प्रवेश किया ।

सत्तानवे

जीवन का शाप

सर्वोत्तम देखा वह कमला थी। उसने सजल नेत्रों से लालाजी के पैर छूकर अभिवादन किया। क्रमशः सौदामिनी और सुशीला देवी को भी प्रणाम किया।

कमला ने सौदामिनी के अन्तिम शब्द सुने थे और उसकी मुखाकृति से यह स्पष्ट झलक रहा था कि उसके हृदय में घोर असन्तोष की ज्वाला अब भी धधक रही है।

सौदामिनी को भी यह ताड़ते देर न लगी कि कमला ने मेरी बातों का कुछ अंश सुन लिया है। इससे वह कुछ लज्जित हुई। अपने कहे हुए शब्दों पर पानी फेरने के विचार से उसने उठकर स्वयं कमला की चादर उतारी और बोली—बहू रोती क्यों हो? बाबू जी अब अच्छे हैं। कोई चिन्ता की बात नहीं। हाथ मुँह धोकर जलपान करो। यात्रा में थक गयी होगी। मालूम होता है पत्र पाते ही चली हो?

कमला—आप लोगों ने मुझे पहिले ही सूचना क्यों नहीं दी? मैं भी कुछ सेवाकर कृतार्थ होती।

कमला के वाक्यों में वात्सल्य था। राधिकांत की रुग्नावस्था में सेवा करते सौदामिनी झुँझला उठती थी। सुशीला देवी की एक तो वृद्धावस्था थी, दूसरे गृहस्थी से अवकाश नहीं मिलता था। कमला के वाक्यों ने लालाजी पर भी जादू का असर किया। उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि कमला खी नहीं, घर की लक्ष्मी है।

अट्टानवे

जीवन का शाप

श्रममिश्रित शब्दों में बोले—बेटी ! सेवा कराने के लिये ही तो अच्छा हुआ हूँ । बढाती क्यों हो ?

कमला को लालजी के वाक्यों में बड़ी ही आर्द्रता दिखाई दी । मालूम हुआ कि अपना पिता ही बोल रहा है । उसका हृदय भर आया । अवरुद्ध कण्ठ से उसने कहा—पिताजी ! अब तो मेरे जीवन का यही ध्येय है और इसी में अपना जीवन सफल समझूँगी ।

इस समय कमला सभी को देवी मालूम हुई । सौदामिनी को भी कुछ क्षणों के लिये उसपर दया आ गयी और अपने कटु-व्यवहारों पर उसे पश्चात्ताप हुआ ! उसने पूछा—बाबूजी के साथ आई हो न ?

कमला—नहीं ! बाबूजी ही आ रहे थे, पर कोठीवालों ने स्टेशन पर आदमी भेजकर उन्हें बुलवा लिया । कोई जरूरी मुकदमे की तारीख थी ।

रा०—तो क्या अकेली चली आई ?

कमला—जीं नहीं ! मेरे एक बचपन के साथी मुझे स्टेशन तक पहुँचाने आये थे । बाबूजी ने उनके ही साथ भेज दिया ।

राधे०—नौकरी भी बड़ी बुरी होती है । मालिक ने स्टेशन से खींच मँगवाया । अच्छा तुम आ गयी, बड़ा अच्छा हुआ । परसों सत्यदेव का पूजन व भोज है । मैं तुम्हें बुलाने ही वाला था !

निन्यानवे

जीवन का शाप

सौदा०—तुम्हारे साथ जो आदमी आया है वह कहाँ है ? उसके लिये कुछ जलपान भेज दो । बेचारा लम्बी यात्रा से थक गया होगा ।

कमला—कोई जल्दी नहीं । घर ही का आदमी है और अपना स्वजातीय है । चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं ।

सौदा०—तुम्हारा यही अलहदपन तो मुझे बुरा लगता है । कोई आये तो उसके सत्कार क्यों करना ?

सौदामिनी की इस बात से कमला कुछ लज्जित-सी हुई ।

सौदा०—उसका नाम क्या है ?

कमला—भैरो ।

सौदामिनी की आज्ञा से भैरो को पार्श्व के एक प्रकोष्ठ में बुलाकर बैठाया गया । उसने अपने हाथों से जलपान की तदतरी सजाई और दासी के हाथ भेजा । कमला की इच्छा थी वह स्वयं भैरो के लिये जलपान ले जाय, पर संकोचवश कुछ कह न सकी । वह दूर्वाजे के पास से भैरो को देख रही थी । भैरो खदर का वस्त्र धारण किये हुए बड़ा ही हृष्ट-पुष्ट मालूम पड़ रहा था । उसे उसपर बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हुई । सौदामिनी ने कमला को उद्देश्य कर कहा—बहू तुम तो बड़ी निष्ठुर मालूम देती हो । अपने साथी के पास जाकर उसे ठीक से जलपान क्यों नहीं कराती ? बेचारा नये घर में संकोच करता होगा । सौदामिनी के इन वाक्यों में कृत्रिम दिखावटीपन था, जिसे भोली-भाली कमला न समझ सकी ।

सौ

१६

थोड़ी देर बाद लालाजी ने भैरो को अपने पास बुलाया ।
 भैरो को देखकर लालाजी बड़े प्रसन्न हुए और बोले—कदाचित्
 मैं तुमको पहिले भी देख चुका हूँ । विवाह में तुम बड़े परिश्रम
 से कार्य कर रहे थे । तुम्हारा शशि बाबू से क्या सम्बन्ध है ?

भैरो—कुछ नहीं । बाल्यावस्था से उनके घर आया-जाया
 करता हूँ । वह मुझे पुत्रवत् प्यार करते हैं ।

राधे०—तुम्हारे पिता क्या करते हैं ?

भैरो—मेरे माता-पिता आदि कोई नहीं हैं ।

एक-सौ एक

जीवन का शाप

राधे०—तब क्या तुम अकेले ही हो ?

भैरो—जी हाँ ! मुझ अभागे को और कोई नहीं ।

राधे०—बेटा ऐसा न कहो । तुम बड़े भाग्यवान मालूम होते हो । तुम्हारी मुखाकृति यह बतला रही है कि तुम होनहार युवक हो । तुम क्या करते हो ?

भैरो—कुछ भी नहीं ।

राधे०—तो तुम्हारा निर्वाह कैसे होता है ?

भैरो—सरकार से वृत्ति मिलती थी, उसीसे पढ़ता था । इस वर्ष इन्टरडियेट पास हुआ हूँ । आगे पढ़ने का कोई साधन न होने के कारण पढ़ाई समाप्त कर देनी पड़ी । एक जगह लड़का पढ़ाता हूँ, आठ रुपये मिलते हैं । उसीसे निर्वाह करता हूँ । कुछ अध्ययन भी करता रहता हूँ । किसी अच्छे काम की खोज में हूँ ।

राधे०—कौन सा काम चाहते हो ?

भैरो—जिससे किसी तरह अपना निर्वाह हो सके ।

राधे०—मेरे यहाँ काम करोगे ?

भैरो को मानो मुँह माँगी मुराद मिल गयी । उसने मुरकारते हुए पूछा—क्या बेतन देंगे आप ?

राधे०—भोजन कपड़े के अतिरिक्त पन्द्रह रुपये महीने और दे दूँगा ? यदि चाहोगे तो रहने का स्थान भी मिल जायगा ।

भैरो—काम क्या करना होगा ?

एक-सौ दो

जीवन का शाप

राधे—मैं वृद्ध हो चला हूँ। जो काम मैं स्वयं करता हूँ वही तुमसे लूँगा। निरीक्षण करता रहूँगा। यदि काम सन्तोषजनक होगा तो आगे के लिए तुम्हारा भविष्य उज्ज्वलमय बना दूँगा।

भैरो ने अपनी स्वीकृति दे दी। वेतन कम था परन्तु मालिक बन कर रहना था, नौकर नहीं। भैरो जानता था कि समय बढ़ा खराब है। जल्दी नौकरी नहीं मिलती। पन्द्रह रुपये कम नहीं हैं।

भोजन का समय हो गया था। राधेकान्त ने सौदामिनी से भोजन लाने के लिये कहा। भैरो की थाल दासी ने और राधेकांत की सौदामिनी ने ला रखी। सौदामिनी कुछ सकुचाती हुई उन-लोगों के सामने आयी। लालाजी ने उसे उद्देश्य कर कहा—मैंने भैरो को अपने साथ काम करने के लिये रख लिया है और यदि ठीक से काम किया तो मेरे पुत्र के समान रहेगा नौकर की तरह नहीं। यह भोजन यहीं किया करेगा। तुमलोग भी इससे घरके ही व्यक्ति की तरह व्यवहार करना।

सौदामिनी के हृदय में इस बात से एक गुदगुदी-सी मालूम हुई। सुशीलादेवी को भी यह समाचार दिया गया। अपनी स्वीकृति प्रकट करते हुए उन्होंने कहा—वृद्धावस्था में एक सहायक होना चाहिये। लड़का सच्चरित्र है। कमला की प्रसन्नता का तो कोई अन्त न था। उसे विश्वास था कि भैरो को जो काम दिया जायगा उसमें वह आशातीत योग्यता दिखजायेगा।

एक-सौ तीन

जीवन का शाप

और सब को प्रसन्न रखेगा ।

भोजनोपरांत भैरो ने रात भर आराम किया । प्रातःकाल उसने राधेकांत से काशी जाने की आज्ञा माँगी ।

राधेकांत ने समझ लिया कि वह अपने कपड़े-जुत्ते लाने के लिये एकबार जाना चाहता है । अतः उन्होंने कहा—कल मेरे यहाँ बरादरी का भोज है । उसके समाप्त हो जाने पर जाना ।

उसने भी आनाकानी नहीं की । उसने काशी जाने का विचार स्थगित कर दिया और शशिकांत के पास यहाँ का सब समाचार लिख भेजा । घर में एक कमरा उसे रहने के लिये दे दिया गया । वह राधेकांत की रसोई में ही भोजन करता । दिन भर दूकान पर काम करने जाया करता ।

महीने भर बाद राधेकांत आज दूकान जाने वाले थे । भैरो भी साथ ही गया । राधेकांत ने भैरो को अपनी गद्दी के बगल में बैठाया । भैरो के सरल-तेजस्वी और गम्भीर मुख-मण्डल का सभी नौकर-चाकर तथा मुनीम गुमास्तों पर आतंक छा गया ।

भैरो ने दिन भर काम किया । राधेकांत को जो कुछ करना होता भैरो को समझा देते । वह सभी काम को इस योग्यता से करता, मानो वह इस कार्य में पहिले ही से पटु हो । सभी भैरो की इस कार्य-पटुता पर मुग्ध हो गये । राधेकांत को विश्वास हो गया कि यह लड़का होनहार है, व्यापार सम्बन्धी सभी कार्य

एक सौ चार

भली प्रकार सहाज लेगा ।

संध्या को भैरो के साथ राधेकांत शीघ्र ही घर लौट आये । घर आकर भैरो की कार्य-दक्षता की ऐसी भूमिका बँधी कि सुशीला व सौदामिनी बड़ी प्रसन्न हुईं । सुशीला ने प्रेम-पूर्वक भैरो को भोजन कराया । भैरो को आज के भोजन में वैसा ही आनंद आया, जैसा साल भर पहिले माता के सामने भोजन करने में आता था । भैरो को ऐसा प्रतीत हुआ, मानो उसकी स्नेहमयी माता ही पूर्वजन्म धारण कर उसे भोजन करा रही है ।

तीसरे दिन संध्या समय सत्यदेव का पूजन था । बहुत से लोग निमंत्रित थे । लालाजी बेचारे तो निर्बलता के कारण एक कोने में बैठे थे । आगंतुकों का स्वागत भैरो ने ही किया । उनमें से बहुतों को भैरो ने एकबार पहिले बारात में भी देखा था और वे भी भैरो को पहिचानते थे । पूजन के बाद कुछ गान-वाद्य हुआ । भैरो ने अन्य कर्मचारियों की सहायता से सबको भोजन कराया । किसी बात में त्रुटि न हुई । सबका ऐसा सत्कार हुआ मानो घर का मालिक ही उनका स्वागत कर रहा है । मालूम होता था श्रीकांत ही दूसरा शरीर धारण कर भैरो के रूप में सब की आवभगत कर रहा है । सबने लालाजी से भैरो के व्यवहार की बड़ी प्रशंसा की । लालाजी भैरो की तत्परता देखकर फूले न समाते थे ।

एक-सौ पाँच

जीवन का शाप

उत्सव समाप्त हो गया। सब लोग भैरो की प्रशंसा करते अपने-अपने घर गये। अन्त में राधेकांत ने भैरो को छाती से लगाकर कहा--बेटा ! आज तुमने बड़ा परिश्रम किया। सभी तुमसे प्रसन्न थे। मैं भी बहुत प्रसन्न हूँ। तुम अपने को अब से नौकर मत समझना। मैं आज से तुमको पुत्रवत् मानूँगा।

इतना कहते-कहते लालाजी की आँखों में प्रेमाश्रु आ गये। भैरो ने लालाजी के चरणों पर सिर रख दिया। प्रेम से उसकी भी आँखें डबडबा आयीं। लालाजी ने भैरो को आशीर्वाद दिया।



१७

भैरो को कानपुर आये लगभग तीन मास हो गये । इस बीच में वह एकबार भी काशी न जा सका । ताली शशिकांत के पास भेज दी गयी थी और भैरो के आवश्यक समान कानपुर पहुँच गये । भैरो ने दूकान का सम्पूर्ण कार्य भार अपने ऊपर ले लिया है । अब लालाजी अपना अधिकांश समय ईश्वर की वन्दना में लगाते हैं । भैरो अब भृत्य नहीं पुत्र है । मुख्य गद्दी पर बैठने का उसे अधिकार है । भाई-दन्धु नौकर-चाकर सभी उसे राधेकांत का दत्तक-पुत्र समझते हैं ।

एक-सौ सात

जीवन का शाप

भैरो किसी से कटु-शब्द नहीं बोलता, इसीलिये सब उसकी प्रशंसा करते हैं। भृत्य उसकी आज्ञा-पालन में सदा तैयार रहते हैं। मिष्ट-भाषिता के कारण व्यापार में पहले से अधिक वृद्धि हो गयी है। लालाजी को सबसे अधिक प्रसन्नता हुई, कारण उन्हें सांसारिक संकटों से अवकाश मिल गया।

भैरो का घर से कोई विशेष प्रयोजन नहीं था। प्रातःकाल का भोजन दूकान पर हो जाता। रात्रि में दस बजे घर पहुँचता। उस समय का भोजन सौदामिनी अपने हाथ से उसे कराती। सौदामिनी का व्यवहार सबके प्रति कड़ा था, परन्तु न जाने क्यों भैरो पर उसकी विशेष कृपा रहती।

कमला भैरो के पास विशेष नहीं जा-पाती। कभी-कभी दो-चार बातें हो जाती थीं, परन्तु विशेष महत्त्व की नहीं। सौदामिनी छुआ के समान भैरो के साथ लगी रहती। फलतः कमला को विशेष बातचीत करने का अवसर नहीं मिलता।

प्रयाग में माघ मेला था। महाकुम्भ का स्नान था। करोड़ों की भीड़ होने वाली थी। सौदामिनी ने कुम्भ स्नान का प्रस्ताव उपस्थित किया। मालिक-मालकिन बहुत कुम्भ नहा चुके थे, श्रद्धा न थी। बहुत वादाविवाद के पश्चात् भैरो के साथ सौदामिनी को दो-दिन के लिये प्रयाग जाने की अनुमति मिली। कमला भी साथ जाना चाहती थी, पर सौदामिनी ने साफ नहीं कर

एक-सौ आठ

जीवन का शाप

दिया। बोली—तुम्हीं जाओ या. मैं ही। उस अपार जन-समूह में अपनी ही जान बचाना कठिन हो जाता है, फिर तुम्हें कहाँ-कहाँ लिये फिरेगी।

बेचारी जी मसोस कर रह गयी। कोई बश न था। कुम्भ के पहिले दिन भैरो और सौदामिनी स्टेशन के लिये खाना हुए। मेले के लिये स्पेशल गाड़ियाँ छूट रही थीं। संयोग से तुरन्त ही गाड़ी मिल गयी, परन्तु अत्यधिक भीड़ हो जाने के कारण गाड़ी मन्द गति से चलती रही। बारह घंटे में प्रयाग पहुँची। स्टेशन पर नर-मुण्ड के अतिरिक्त और कुछ न दिखाई देता था। सौदामिनी इस धक्कम-धुक्का में गिर पड़ी।

यदि भैरो ने शीघ्रता-पूर्वक गोद में उठा न लिया होता तो सम्भव था कुचल गयी होती। यदि एक धक्का और लगता तो भैरो भी उसी जगह धाराशायी हो जाता और दोनों में से किसी का पता भी न लगता। परन्तु भैरो की तत्परता ने इस आपत्ति से मुक्ति दिलाई।

सौदामिनी इक्के पर धर्मशाला पहुँचाई गयी। स्वयं लालाजी की यहाँ एक धर्मशाला थी। पूरा खंड-का-खंड मालिक के लिये खाली रखा गया था। सौदामिनी भीड़ देखकर व्याकुल हो गयी थी। यहाँ एकांत पा कुछ स्वस्थ हुई।

सौदामिनी के मस्तक में कुछ दर्द होने लगा था। भैरो एक-सौ नौ

जीवन का शाप

भैरो किसी से कटु-शब्द नहीं बोलता, इसीलिये सब उसकी प्रशंसा करते हैं। भृत्य उसकी आज्ञा-पालन में सदा तैयार रहते हैं। मिष्ट-भाषिता के कारण व्यापार में पहले से अधिक वृद्धि हो गयी है। लालाजी को सबसे अधिक प्रसन्नता हुई, कारण उन्हें सांसारिक संकटों से अवकाश मिल गया।

भैरो का घर से कोई विशेष प्रयोजन नहीं था। प्रातःकाल का भोजन दूकान पर हो जाता। रात्रि में दस बजे घर पहुँचता। उस समय का भोजन सौदामिनी अपने हाथ से उसे कराती। सौदामिनी का व्यवहार सबके प्रति कड़ा था, परन्तु न जाने क्यों भैरो पर उसकी विशेष कृपा रहती।

कमला भैरो के पास विशेष नहीं जा-पाती। कभी-कभी दो-चार बातें हो जाती थीं, परन्तु विशेष महत्त्व की नहीं। सौदामिनी छाय्या के समान भैरो के साथ लगी रहती। फलतः कमला को विशेष बातचीत करने का अवसर नहीं मिलता।

प्रयाग में माघ मेला था। महाकुम्भ का स्नान था। करोड़ों की भीड़ होने वाली थी। सौदामिनी ने कुम्भ स्नान का प्रस्ताव उपस्थित किया। मालिक-मालकिन बहुत कुम्भ नहा चुके थे, श्रद्धा न थी। बहुत वादाविवाद के पश्चात् भैरो के साथ सौदामिनी को दो-दिन के लिये प्रयाग जाने की अनुमति मिली। कमला भी साथ जाना चाहती थी, पर सौदामिनी ने साफ नाहीं कर

एक-सौ आठ

दिया। बोली—तुम्हीं जाओ या. मैं ही। उस अपार जन-समूह में अपनी ही जान बचाना कठिन हो जाता है, फिर तुम्हें कहाँ-कहाँ लिये फिरेगी।

बेचारी जी मसोस कर रह गयी। कोई बश न था। कुम्भ के पहिले दिन भैरो और सौदामिनी स्टेशन के लिये रवाना हुए। मेले के लिये स्पेशल गाड़ियाँ छूट रही थीं। संयोग से तुरन्त ही गाड़ी मिल गयी, परन्तु अत्यधिक भीड़ हो जाने के कारण गाड़ी मन्द गति से चलती रही। बारह घंटे में प्रयाग पहुँची। स्टेशन पर नर-मुण्ड के अतिरिक्त और कुछ न दिखाई देता था। सौदामिनी इस धक्कम-धुक्का में गिर पड़ी।

यदि भैरो ने शीघ्रता-पूर्वक गोद में उठा न लिया होता तो सम्भव था कुचल गयी होती। यदि एक धक्का और लगता तो भैरो भी उसी जगह धाराशायी हो जाता और दोनों में से किसी का पता भी न लगता। परन्तु भैरो की तत्परता ने इस आपत्ति से मुक्ति दिलाई।

सौदामिनी इक्के पर धर्मशाला पहुँचाई गयी। स्वयं लालाजी की यहाँ एक धर्मशाला थी। पूरा खंड-का-खंड मालिक के लिये खाली रखा गया था। सौदामिनी भीड़ देखकर व्याकुल हो गयी थी। यहाँ एकांत पा कुछ स्वस्थ हुई।

सौदामिनी के मस्तक में कुछ दर्द होने लगा था। भैरो

एक-सौ नौ

जीवन का शाप

ने तेज मंगवाया और सौदामिनी के सिर पर स्वयं अपने हाथों से मलना आरम्भ किया ।

सर पर भैरो का हाथ लगते ही सौदामिनी के शरीर में विद्युत्-रेखा दौड़ गयी । उसने अधरोष्ठ पर अकट हास्य लाते हुए कहा—तुम इतनी तकलीफ क्यों करते हो ? मैं स्वयं अपने सिर में तेल मल लूँगी ।

भैरो—इसमें कष्ट किस बात का ? तुम मेरी मालकिन हो । कष्ट में तुम्हारी सेवा करना मेरा धर्म है । क्या तुम्हें कुछ कष्ट हो रहा है ?

सौदामिनी को ऐसे सुख का अनुभव कभी न हुआ था । वह रोमांचित हो उठी, बोली—विवाह हो तो मालिश करना, भला हम विधवाओं के भाग्य में ऐसा सुख मिलना कब सम्भव हो सकता है ? हाँ, कष्ट तो तुम्हें अवश्य होता होगा !

भैरो स्वभाव का बड़ा ही सरल था । संसार का उसे विशेष ज्ञान न था, न यही जानता था कि स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये । उसे सौदामिनी की बातों में सरलता-पूर्ण बातें होती थीं । वह सौदामिनी को भगिनी की तरह तयार करता था और उसकी सेवा करना अपना धर्म समझता था । सौदामिनी के मुख से अपने विवाह की बात सुन लज्जित हुआ । उसने सिर हिलाकर अपनी अनिच्छा प्रकट की ।

एकसौ दस

सौदामिनी चिहूँक उठी, परन्तु अपने आभ्यन्तरिक भावों को छिपाते हुए बोली—देखूँगी तो कि ऐसे ही रहोगे। बहुतों को देखा, केवल तुम बाकी रह गये हो। लोग पचास-पचास वर्ष की उमर में विवाह करते हैं और तुम अल्पवयस्क होकर विवाह ही न करोगे।

भैरो ने उसी प्रकार सर दवाते हुए ही कहा—पुरुष पचास की अवस्था में पुनर्विवाह कर सकते हैं और स्त्रियों को दस की अवस्था में भी यह अधिकार नहीं, यह अन्याय है। इन्हीं सब अन्यायों के प्रतिकार स्वरूप मैंने विवाह न करने का निश्चय कर लिया है। मुझसे विधवाओं की यह नर्क-यन्त्रणा देखी नहीं जाती।

सौदामिनी उठ बैठी और भैरो के मुख की ओर देखने लगी। उसके मुख पर उसे विषाद की धुँधली रेखा दिखाई पड़ी। सौदामिनी को मालूम हुआ कि भैरो का हृदय विधवाओं पर किये गये अत्याचार के कारण अत्यन्त दुखी है। सौदामिनी ने व्यंग-पूर्वक कहा—बड़ी दया आती है तो किसी विधवा से विवाह कर लो ?

भैरो—विचार तो ऐसा ही है।

सौदामिनी ने आश्चर्य से भैरो के मुख की ओर देखा। उसकी सुखाकृति से हृदय की दृढ़-प्रतिज्ञा प्रकट हो रही थी।

सौदामिनी फिर कुछ न बोली। पुनः भैरो सौदामिनी का

एक-सौ ग्यारह

जीवन का शाप

सिर दाबने लगा । सौदामिनी ने धीरे-धीरे अपनी लटें खोल दीं । भैरो ने उनमें भी तेल मलना प्रारम्भ किया । सौदामिनी के हृदय में एक तरह की गुदगुदी उठी, परन्तु वह जानती थी कि भैरो सरल हृदय का युवक है । सेवा भाव से ऐसा कर रहा है । यह सब मेरे कष्ट निवारणार्थ है ।

थोड़ी देर मौन रहने के पश्चात् सौदामिनो ने कहा—इन बालों की सेवा से क्या लाभ ? आज हैं कल न रहेंगे । हम विधवाओं को इनसे क्या प्रयोजन ?

भैरो ने कोई उत्तर न दिया । लटों को छोड़ वह मस्तक दबाने लगा ।

सौदामिनी को भैरो की सरलता पर हँसी आयी, दया आयी और झुझलायी भी । वह भैरो से कुछ सन्तोष-जनक उत्तर की आशा रखती थी । भैरो को इतना नीरस देख अपने मस्तक पर से उसका हाथ हटाकर स्वयं दबाने लगी ।

भैरो ने पूछा—नाराज हो गयीं क्या ?

सौदा०—तुमसे और नाराज होऊँगी ? जाओ, भोजन की सामग्री एकत्रित करो । भूख मालूम हो रही है ।



एक-सौ बारह

१८

भैरो भोजन-सामग्री लाने गया । सौदामिनो अकेली रह गयी । थोड़ी देर आराम करने से उसके सिर का दर्द क्रमशः अच्छा हो गया था, थकावट भी मिट गयी थी । जाकर पुनः लेट गयी । आँखें बन्दकर सोचने लगी—क्या भैरव का कहना ठीक है ? हम विधवाओं के लिये भी संसार में स्थान हो सकता है ? हम सभी जगह तिरस्कृत और ठुकरायी जाती हैं । हमारा जीवन कुत्तों से भी गया बीता है । फिर हमको संसार में कौन पूछ सकता है ? भैरव एक सुन्दर युवक है, यदि वह चाहे तो मेरे जीवन को एक-सौ तेरह

जीवन का शाप

सरस बना सकता है, परन्तु है सरज और स्पष्टवक्ता । इसे अपने अधिकार में लाना सरल बात नहीं ।

सौदामिनी के हृदय में आशा तथा निराशा में घोर युद्ध छिड़ गया । बालविधवा थी, कोई सुख नहीं देखा था । सुख भोग की अतृप्त लालसा ने उसे विचलित कर दिया । आशा की ही विजय हुई । मुखाकृति पर मुस्कुराहट की रेखा दौड़ गयी । भैरो को अपनी ओर आकर्षित करने का निश्चय किया और परिणाम को भविष्य पर छोड़ अपने विचार को कार्यरूप में परिणत करने के अवसर की प्रतीक्षा करने लगी ।

प्रसन्नता के आवेश में उसने बालों में कंधी की । मुँह धोया । भोजन बनाने के लिए बर्तन आदि निकालने लगी । इतने में भैरो भी बाजार से सामान लेकर आगया । देखा सौदामिनी के मुख पर इस समय एक तरह की विचित्र स्निग्धता है । उसके हृदय की कठोरता जिसकी कथा वह पहिले कमला से सुना करता था और जिसे वह भी सर्वदा लक्ष्य किया करता था, इस समय लुप्तप्राय थी । सौदामिनी ने आज विचित्र रीति से केश-विन्यास किया था, श्वेत-वस्त्र पहने हुए उसके मुख-मण्डल पर आज पहले से अधिक सौन्दर्य झलक रहा था । भैरो तीन मास से नित्यही सौदामिनी के पास घण्टों बैठता, बात चीत भी करता पर उसे कभी इसका ज्ञान नहीं हुआ था कि सौदामिनी का रूप

एक-सौ चौदह

इसप्रकार चित्ताकर्षक है ।

भैरो के आते ही सौदामिनी ने एक हलकी मुस्कान के साथ साथ सामान लेकर यथास्थान रख दिया । धर्मशाला अपना था । इसलिये जल बगैरह का प्रबन्ध जमादार ने पहले ही कर दिया था । भैरो ने कहा—तुम्हारी तबीयत अच्छी नहीं है, आज भोजन मैं ही बनाऊँगा ।

सौदामिनी ने कोई उत्तर नहीं दिया । आँटा गूँधने लगी । भैरो ने अग्नि प्रज्वलित करते करते सौदामिनी से कहा—रहने दो आँटा मैं गूँध लूँगा । तुम्हारे सर में कहीं फिर दर्द न होने लगे ।

भैरो के शब्दों में सौदामिनी को बड़ा स्नेह मालूम पड़ा । सोचने लगी—मेरे लिये इतनी चिन्ता संसार में किसको होगी ? पिता के घर भी दो काम करती हूँ तो भोजन पाती हूँ । कोई बात पूछने वाला नहीं । बोली—नहीं अब तबीयत अच्छी है ।

भैरो—क्या मेरा बनाया भोजन करोगी ?

सौदा०—करूँगी क्यों नहीं । तुम तो स्वजातीय हो । खाऊँगी क्यों नहीं ! परन्तु तुम्हें कष्ट होगा ।

भैरो—मैं तो घर पर रोज ही अपने हाथ से पकाता था । यहाँ कौन मुझसे बात पूछने वाला था ? मैं इस कार्य में दक्ष हूँ !

सौदा०—अच्छा आँटा गूँध लूँ तो हटूँ ।

एक-भौ पन्द्रह

जीवन का शाप

आँटा गूँधते गूँधते सौदामिनी के सिर की साड़ी खसक गयी । बाल भी खुलकर पीठ पर दिखर गये । सौदामिनी ने कहा—जरा मेरी साड़ी मरतक पर कर दीजिये । कदाचित् जमादार वगैरह न आ जायँ । भैरो ने थोड़ी देर पूर्व उसके मरतक पर तेल की मालिश की थी, पर इस समय न जाने क्यों उसे भिन्नक मालूम हुई । सौदामिनी के पुनः कहने पर भैरो ने उसका मरतक ढँक दिया ।

इतनी देर में आग तैयार हो गयी । भैरो ने सौदामिनी को भोजन नहीं बनाने दिया । उसने खयं बनाया । सौदामिनी जब भोजन करने बैठी तो उसके बनाये हुए भोजन में बड़ा स्वाद आया । बोली—मैं नहीं जानती थी कि तुम हरफन मौला हो । भोजन बनाने में तो स्त्रियों के कान काटते हो ।

भैरो ने केवल मुस्करा दिया । इस मुकान में एक विचित्र जादू था । सौदामिनी के हृदय में विद्युत-रेखा दौड़ गयी । वह एक एक ग्रास खाती और भैरो के पाकचातुर्य की प्रशंसा करती जाती ।

भोजन पूरा तैयार हो चुका था । सौदामिनी ने भैरो को भी साथ ही भोजन करने का अनुरोध किया । भैरो ने कहा—रसोई-दार को अन्त में भोजन करना उचित है ।

सौदा०—मैं जानती तो कदापि पहिले भोजन करने न बैठती ।

एक-सौ सोलह

जीवन का शाप

भैरो—यदि तुम्हारा ऐसा ही अनुरोध है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं ।

भैरो अपने लिये एक थाल परोसने लगा । बीच ही में सौदामिनी ने रोकते हुए कहा—आओ, इसी थाल में बैठ जाओ ।

भैरो कुछ झिझका सौदामिनी ने हास्य करते हुए पूछा—क्या मेरे अवशिष्ट से घृणा करते हैं ?

भैरो—घृणा नहीं पर मैं अपना अवशिष्ट किसी को नहीं खिजाना चाहता ।

सौदा०—तो क्या मैं कोई दूसरी हूँ ?

भैरो—नहीं नहीं ! तुम्हारे ही अन्न से तो इस शरीर का पोषण हो रहा है ।

सौदामिनी ने अपने हाथ का ग्रास भैरो के मुख की तरफ बढ़ा दिया । भैरो ने मुख खोल दिया । सौदामिनी के प्रसन्नता की सीमा न रही ।

दोनों भोजन करने लगे । भोजन के सिजसिले में ही सौदामिनी ने पूछा—क्या वास्तव में तुम विधवा विवाह करोगे ?

भैरो—इच्छा तो ऐसी ही है ।

सौदा०—इसमें तुम्हें क्या लाभ होगा ?

भैरो—संसार के एक नीरस जीवन को सरस बनाने का सौभाग्य

एक-सौ सत्रह

जीवन का शाप

प्राप्त होगा । दूसरों के लिये भी एक उदाहरण उपस्थित हो जायगा ।

सौदा०—विधवाओं के जीवन को ईश्वर ने नीरस बना दिया है, उसे भला कोई सरस क्या बना सकता है ?

भैरो—ईश्वर ने कोई ऐसा विधान नहीं बनाया है । यह विधान मनुष्य-कृत है और पुरुषों के स्वार्थ का एक जीता-जागता स्वरूप है ।

सौदा०—स्वार्थ कैसा ?

भैरो—क्यों ? पुरुषों ने तो अपने लिए ऐसा नियम बनाया है कि दस स्त्रियों के मर जाने पर भी ग्यारहवीं बार भी विवाह कर सकते हैं, पर स्त्रियाँ यदि पाँच वर्ष की अवस्था में भी विधवा हों तो उनके लिये त्याग के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं, जो पुरुष जाति स्वयं भोग-विलास में लिप्त है, उसे क्या अधिकार है कि स्त्रियों को त्यागी बनने का पाठ पढ़ाये ?

सौदा०—तुम्हारा कहना ठीक है पर तुम्हारे इस विधान को मानेगा कौन ?

भैरो—कोई न माने तो मैं तो मानूँगा । एक से दस और दस से सौ होते हैं । प्रारम्भ तो हो फिर पञ्चपाती बहुत से निकल आयेंगे ।

सौदा०—जानते हो कि समाज ऐसे लोगों की कितनी अवहेलना करता है ?

एक-सौ अट्ठारह

जीवन का शाप

भैरो—अपने ध्येय के आगे मुझे समाज की कोई चिन्ता नहीं। समाज हमीलों से बनता है और जब हम नवयुवक समाज को उचित मार्ग पर न लायेंगे तो कौन लायेगा? जहाँ हममें से सौ पचास युवक निकल आये कि समाज का मुख आपही आप बन्द हो जायगा।

भोजन समाप्त होने पर सौदामिनी ने भैरो को पान देते हुए कहा—भला कहीं ठीक भी किया है?

भैरो ने उत्तर दिया—जिस देश में साल में लाखों विधवाओं के सतीत्व का अपहरण होता हो, उस देश में मुझे विशेष खोज नहीं करनी पड़ेगी।

रात हो गयी थी, भैरो को नींद आरही थी। उसने सौदामिनी से कहा—थक गयी होगी। जाकर सो रहो। सबेरे जल्दी उठना है। तीन ही बजे त्रिवेणी स्नान के लिए चलना होगा, नहीं तो बहुत भीड़ हो जायगी।

सौदा०—तुम्हें मेरे कारण बहुत कष्ट हो रहा है। आज तुम मेरी रक्षा न करते तो स्टेशन पर ही प्राणान्त हो गये होते। बहुत थक गये हो। जरा तुम्हारा शरीर दबा दूँ तो सो जाँ।

भैरो के सतत मना करने पर भी सौदामिनी ने माना और भैरो के मस्तक में तेल लगाने लगी। भैरो दिन भर का थका था। निद्रा आ गयी।

एक-सौ अन्तीस

१६

प्रातःकाल लगभग तीन बजे भैरो की नोंद खुली। देखा सौदामिनी चारपाई के नीचे बैठी ही बैठी सो गयी है और उसके लम्बे-अमर सरीखे काले २ बाल चारपाई पर बिखरे पड़े हैं। भैरो ने उठकर दीपक जलाया। प्रकाश में देखा तो निद्रावस्था में भी सौदामिनी का मुख देदीप्यमान था। उसका वस्त्र शरीर पर से हट गया था। भैरो का मन सौदामिनी के इस अलौकिक सौन्दर्य को देखकर मुग्ध होगया। कुछ क्षणों तक वह अनृप्त नेत्रों से मंत्र-मुग्ध सा उसकी ओ देखता रहा।

एक-सौ बीस

जीवन का शाप

सौदामिनी ने एक दीर्घ निश्वास के साथ करवट बदली। भैरो की समाधि भङ्ग हुई ! संभव था करवट बदलने में सौदामिनी का मस्तक पृथ्वी पर गिर पड़ता और चोट आती, पर भैरो ने चट उसे अपने हाथों से रोक लिया। सौदामिनी की निद्रा भङ्ग हो गयी। अपने मस्तक को भैरो के सहारे पाकर उसे अपार आनंद का अनुभव हुआ। बोली—क्या तुम अभी उठे हो ?

भैरो—हाँ तीन बज गया। तुम तो रात को सोयी ही नहीं।

सौदा०—मुझे यहीं नींद आगयी। कष्ट तो बहुत हुआ होगा।

भैरो—कष्ट किस बात का ? अब जल्दी चलना चाहिये, नहीं तो बड़ी भीड़ हो जायगी।

सौदा०—कोई नाई मिले तो यहीं मुण्डन करा लिया जाय। वहाँ ठीक न होगा।

भैरो—तो क्या तुम इन वालों को कटा दोगी ?

सौदा०—तो किसके लिये रखूँ ?

भैरो—यदि ऐसा ही था तो कल इनको इतना सँवारा क्यों था ?

सौदा०—अन्तिम बार इच्छा हुई कि जरा मन की साध पूरा कर लूँ।

भैरो—मुझसे तुम्हारा यह कार्य देखा नहीं जायगा।

सौदा०—प्रयाग से मैं इन्हें वापस नहीं ले जा सकती। बड़ी बड़-

एक-सौ एड़ीस

जीवन का शाप

नामो होगी और घास की तरह तो ये बढ़ते हैं। कुछ दिनों में पूर्ववत् हो ही जायेंगे।

भैरो ने जमादार से नाई बुलाने के लिये कहा। नाई आ गया। दोनों ने मुण्डन कराया। ज्यों-ज्यों सौदामिनी के केश पृथ्वी पर गिरते थे, उसकी आँखों से आँसू भी गिरते जाते थे। भैरो से उसका यह दुःख देखा न गया। समाज की यह कठोर व्यवस्था भैरो के हृदय में काँटे की तरह चुभने लगी।

अब संगम की ओर प्रस्थान हुआ। एक नौका की गयी। नाविक पूरी नौका का बीस रुपया माँगता था। अतः एक भरी हुई नौका पर ही दो रुपये देकर दोनों बैठे। थोड़ी दूर आगे बढ़े तो पता चला कि नौका में दो मनुष्य अधिक हैं। मल्लाह ने भैरो व सौदामिनी से उतरने को कहा, क्योंकि अन्य यात्रियों के साथ पाँच-पाँच सात-सात व्यक्ति थे। नाव वाले ने एक दल-दल की जगह दोनों को उतार दिया। सौदामिनी तो कुछ कड़ी जमीन पर, उतरी और केवल पैर के नीचे का हिस्सा कीचड़ में गया, पर भैरो का पूरा पैर दलदल में फँस गया। नाव वाले ने हँसते हुए नाव बढ़ा दी। सौदामिनी को नाव वाले पर बड़ा क्रोध आया और गाली भी दी, पर कौन सुनता है? हँसता हुआ नाव बढ़ाये चला गया। लाखो नर-मुण्ड थे। सौदामिनी का पैर तो तुरंत निकल आया, पर भैरो लाख प्रयत्न करने पर

एक सौ बाईस

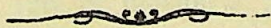
जीवन का शाप

भी न निकाल सका । और भी फँसता ही जाता था । सौदामिनी ने कई मनुष्यों से भैरो को निकालने की प्रार्थना की, पर किसी ने न सुना । अन्त में एक व्यक्ति ने आकर भैरो को खींचा और वह बाहर निकला । भैरो ने पहिचाना यह रजनीकांत थे, कुम्भ स्नान को आये थे ।

सूर्यदेव निकल आये थे । भीड़ बहुत बढ़ गयी थी । पैदल स्नान करने की हिम्मत न पड़ी । निदान बीस रुपये पर दूसरी नौका की गयी । रजनीकांत भी साथ गये ।

आनन्द-पूर्वक संगम स्नान हुआ । अच्युत का दर्शन किया गया । नागाओं की सवारी देखी गयी । सौदामिनी को बड़ा आनन्द आया । साधु-सन्तों का दर्शन करते-कराते तीन बज गया ।

दो ही दिन के लिये अनुमति थी । आज ही लौटना था । धर्मशाले आकर भोजन-पानी से निवृत्त हो दोनों स्टेशन की ओर रवाना हुए । टिकट पहिले ही से दोनों ओर का ले लिया था ।



एक-सौ तेईस

२०

कुछ ही दिनों में सौदामिनी के स्वभाव में अन्तर पड़ गया । कटु-भाषिणी सौदामिनी मिष्ट-भाषिणी हो गयी । पहले उसे कमला को रूझाने में आनन्द आता था, परन्तु अब वह कमला को सर्वदा प्रसन्न रखने का प्रयत्न करने लगी । भैरो के साथ तो उसका एक तरह का अपनापन-सा हो गया था । भैरो के प्रसन्नता के लिये वह अपनी जान तक देने को तैयार रहती थी । अब भैरो को भी घर पर पहिले से अधिक आनन्द मिलने लगा था । दोपहर को भी रसोई घर पर ही खाता । रात को

एक-सौ चौबीस

जीवन का शाप

घण्टों शतरंज व ताश की बाजियाँ लगतीं । खुब कहकहे उड़ते । कमला भी कभी-कभी सम्मिलित हो जाती, पर उसे सौदामिनी का भैरो पर आधिपत्य फूटी आँखों न सुहाता । जब भैरो सोता तो सौदामिनी कभी-कभी उसके सर पर तेल दवाती, कभी पंखा झलती, कभी बैठकर मीठी-मीठी बातें करती । दोनों में एक तरह का सौहार्द्र-सा हो गया था । सौदामिनी को भैरो एक तरह का रत्न मिला था जिसे वह मलीनता से मलीन नहीं होने देना चाहती थी । वह जानती थी कि वासना-रहित प्रेम उसके तेज को बढ़ाता रहेगा और वासना की कालिमा लगते ही संभव है किसी अर्थ का न रहे ।

कमला को सौदामिनी के प्रेम में संदेह हो रहा था, पर उसे भैरो पर विश्वास था । उसे यह निश्चय था कि भैरो पर अब मेरा कोई अधिकार नहीं, परन्तु फिर भी वह यह सहन नहीं कर सकती थी कि दूसरा कोई उसकी आँखों में मुझसे बढ़कर हो । वास्तव में सौदामिनी को सेवा तथा वाक्-पटुता ने भैरो पर पूरा जादू डाल दिया था ।

इसी तरह दो-तीन मास और बीते । एक दिन एक सम्बन्ध के यहाँ विवाहोत्सव पड़ा । मालिक व मालकिन ने सब जगह आना-जाना बन्द कर दिया था । सौदामिनी व कमला को जाना था, दोनों ही गयीं । विवाह के पश्चात् बहू आने वाली थी ।

एक-सौ पच्चीस

जीवन का शाप

नयी बहू को देखने की लाजसा सभी को होती है। सौदामिनी सामाजिक नियमों से परिचित थी, हट गयी, पर कमला नयी बहू के सामने द्वार पर ही पड़ गयी। लोग उसपर बहुत बिगड़े, सभी उसको कोसने लगे। उसे समाज की इस अशिष्टता पर बड़ी घृणा हुई और साथ-ही-साथ लज्जा हुई। बिना कुछ कहे वह अकेले ही घर चली आयी।

संध्या समय सौदामिनी लौटी। कमला तो चली आयी थी, पर लोगों ने सौदामिनी को सुना-सुनाकर कमला को खूब कोसा था। सौदामिनी के कान सुनते-सुनते पक गये थे। घर आते ही उबल पड़ी—विधवाओं का यह कोई लक्षण है। कहने से बुरा लगता है। आगे-आगे कूदने की क्या आवश्यकता थी। माजूम न हो तो पूछ लेना चाहिये।

कमला सौदामिनी से ऊबती हुई थी। इसके अतिरिक्त भैरो पर सौदामिनी का स्वत्व प्राप्त करना उसे और भी अस्वर रहा था। बोली—तुम्हें माजूम था तो बता देतीं। लज्जा की क्या बात है? कोई चोरी तो की नहीं। लज्जा आवे उसे जो दिन रात पर-पुरुषों से घुसुर-घुसुर बातें करती हैं।

लक्ष्म भैरो पर था। सौदामिनी के शरीर में अग्नि की ज्वाला भस्मक उठी। आज कमला ने भी युद्ध की पूर्णाहुति कर देने का निश्चय कर लिया था। सभी बातों का जबाब देती गयी। यद्यपि

एक-सौ छब्बीस

ऐसे ही झगड़े आज से दो मास पूर्व नित्यही हुआ करते थे परन्तु अब कमला ने इस घर पर स्वत्व प्राप्त कर लिया था और उसे किसी का एक शब्द भी असह्य था। फिर भैरो पर सौदामिनी का अधिकार प्राप्त करना उसे बहुत खटक रहा था। इसे वह अपनी आँखों नहीं देखना चाहती थी। उसने निश्चित किया कि या तो मैं ही रहूँ या यही रहे। एक भ्यान में दो तलवार का रहना असम्भव है।

खूब वाग्युद्ध हुआ। कुशल इतनी ही थी कि घर बहुत बड़ा था और जिस भाग में इन दोनों में वाग्युद्ध छिड़ा था वह सुशीला देवी के कमरे से दूर था। इसीसे किसी को इस झगड़े का पता न चला। सौदामिनी को जब पता चला कि कमला को मेरे आचरण पर सन्देह है तो वह बहुत रोयी गायी और गङ्गा में डूब मरने की धमकी दी।

कमला—अगर ऐसा समय आयेगा तो मैं ही डूब मरूँगी। तुम राज्य करना। मेरा संसार में कौन है?

सौदामिनी को यहाँ तक बात बढ़ने की आशा न थी पर अब क्या हो सकता था? कमला ने चुभती हुई बातें कही थीं, जिसकी फरियाद पिता तक भी नहीं हो सकती थी। कारण जो बातें उसने कही थीं, वास्तव में उससे उसका पलड़ा बड़ा हलका पड़ रहा था।

अन्तमें मौन धारण करने के अतिरिक्त और कोई उपाय न था।

एक-सौ सत्ताईस

जीवन का शाप

रात्रि को भैरो के लौटने पर सौदामिनी ने कहा—अब मेरा इस घर में निर्वाह नहीं हो सकता।

भैरो—क्यों क्या हुआ ?

सौ०—बहू मुझे लांछन लगाती है और साथ ही तुम्हें भी सानती है । क्या हम विधवाओं को दो-अक्षर बोलने का भी अधिकार नहीं ?

भैरो ने आश्चर्य से पूछा—मैंने तो कोई ऐसा काम नहीं किया जिससे किसी को शिकायत करने का मौका मिले ।

सौदा०—मैंने ही कौन-सा ऐसा काम किया ? तुमसे थोड़ा हँस-बोल लेती हूँ तो क्या यह भी दुनिया नहीं देख सकती ?

भैरो सब कुछ समझ गया । हृदय ने कहा कि जो कमला उसे प्राणों से भी अधिक चाहती है, भला यह कब सम्भव हो सकता है कि वह सौदामिनी को इस प्रकार स्वच्छन्दता-पूर्वक बातचीत करते देख सके । प्रकट रूप में उसने सौदामिनी से कहा—मेरी भूल थी । यदि संसार नहीं देख सकता तो मैं दूर ही रहा करूँगा ।

सौदा०—दूर क्यों रहोगे ? जो नहीं देख सकता उसे अपनी आँखें बन्द करनी होंगी इतना कहाँ तक डरा जायगा ?

भैरो—तो क्या करने को कहती हो ?

सौदा०—मेरा इस घर में निर्वाह न होगा ।

एक-सौ अट्ठाइस

जीवन का शाप

भैरो—यह तो सुन चुका, पर मुझे क्या करना होगा ?

सौदा०—कैसी बच्चों की-सी बातें करते हो ? तुम पुरुष हो पढ़े-लिखे हो, क्या तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते ?

भैरो—तो क्या तुम मुझे अपने साथ ले जाना चाहती हो ? कहाँ जाने का विचार है ?

सौदा०—जहाँ ले चलो । मैं तो प्रयाग में ही आत्म-समर्पण कर चुकी हूँ । अब तुम चाहे जैसे रखो, तुम्हारी होकर रहूँगी ।

भैरो का हृदय सौदामिनी के शब्दों से काँप उठा । उसे सौदामिनी से ऐसे शब्द सुनने की आशा न थी । थोड़ी देर तक, किंकर्तव्य विमूढ हो मौन रहा, फिर बोला—तो क्या भागना चाहती हो ? यह असम्भव है । स्वामी के साथ विश्वासघात करना मेरे लिये मृत्यु के समान है । मैंने कभी तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जिससे तुम्हारे हृदय में ऐसे विश्वासों का आरोप हो । मैं तुम्हें अपनी धर्म-भगिनी समझता हूँ और इसी प्रकार के व्यवहार की तुमसे आशा रखता हूँ । तुमसे केवल इसी विचार से हँस-बोल लेता था कि संतप्त हृदय को यदि इसमें सुख है तो मेरी क्या हानि ? इसके अतिरिक्त मेरा और कोई तात्पर्य न था । यदि तुमने मेरे इस कार्य से कुछ और अभिप्राय निकाल लिया हो तो चमा करो ।

सौदामिनी के हृदय पर मानो वज्राघात हुआ । वह आसीमान एक-सौ उन्तीस

जीवन का शाप

पर हवाई किले की नींव डाल रही थी, पर भैरो के एक शब्द ने नींव को भूमिस्थ कर दिया। उसने आज अपने हृदय का पट खोल दिया था, इसका उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। उसकी आँखें सजल हो आयीं। लज्जा से मुख नत हो गया।

उधर सौदामिनी की पीठ फिरी और उधर भैरो को द्वार पर कुछ शब्द सुनाई पड़ा। देखा तो द्वार खुला है और एक स्त्री आगे-आगे चली जा रही है।

भैरो पहिचान गया कि वह कमला है। इतनी रात को कमला कहाँ जा रही है? भैरो को महान् आश्चर्य हुआ।



एक-सौ तीस

२१

सन्ध्या समय कमला और सौदामिनी में खूब वायुद्र हुआ ।
 उसने निश्चय किया था कि आज इस नाटक का अन्तिम अंक
 समाप्त करके ही छोड़ूँगी । रात्रि में जब सौदामिनी भैरो के
 कमरे की ओर चली तो वह भी पीछे-पीछे चली । द्वार पर यह
 देखने के लिये ठिठकी कि दोनों में क्या बातें होती हैं ? उसने
 यह जान लिया कि इन दोनों की प्रयाग यात्रा में कुछ भेद है । सौदा-
 मिनी के आत्म-समर्पण के शब्द उसके कानों में तोर की तरह लगे ।
 उसका हृदय विध गया और वह गिरा ही चाहतो थी कि उसने
 एक-सौ एकतीस

जीवन का शाप

अपने को सम्हाला। भैरो का फैसला सुनने का उसे साहस न हुआ। उसे भैरो पर बड़ा विश्वास था, पर अब निश्चय हो गया कि भैरो का मुझपर वह प्रेम न रहा। अब संसार में ऐसा कोई नहीं जिसे मैं अपना कहकर गर्व करूँ। माता जाह्नवी की गोद में आत्म-समर्पण करने का निश्चयकर वह बाहर निकली,

कमला तीव्रवृत्ति से गङ्गा-तट की ओर चली जा रही थी। भैरो भी उसके पीछे चला। आज कमला के पैरों में मानों मवीन-शक्ति आ गयी थी। भैरो को इस तेजी की चाल पर आश्चर्य हो रहा था। चाहा कि दौड़कर पकड़ लूँ, पर दौड़ने से किसी के आकर्षित होने का भय था। बारह बज गये थे, फिर भी मार्ग में इक्के-दुक्के मनुष्य दिखाई पड़ ही जाते थे। ये दोनों सबकी दृष्टि बचाते चले जा रहे थे। दो-एक बार भैरो ने पुकारा भी, पर कमला अपनी धुन में मस्त थी। उसके कानों तक ये शब्द न पहुँचे।

कमला गङ्गा-तट पर जाकर रुकी। भैरो भी उसके पीछे खड़ा हो गया। कमला इस समय आपे में न थी। कमला को ऐसा मालूम होने लगा, मानो तरंगों उसे चिढ़ाने के लिये अठखेलियाँ कर रही हैं। उसे अपनी विवशता पर तरस आई। ऊपर देखा तो आकाश में तारे झॉक-झॉककर उसे घूर रहे थे, मानों उसकी विवशता पर मुस्करा रहे हों।

कमला हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी—मातु गंगे ! तुम्हारा

एक-सौ बत्तीस

जीवन का शाप

वचस्थल विशाल है । नित्य ही अगणित प्राणियों को शरण देती हो । न जाने कितनी लहरें तुम्हारे वचस्थल पर अठखेलियाँ किया करती हैं । तुम्हारा हृदय उदार है, पतितों को भी तुम अपने उदर में स्थान देती हो । मैं भग्नहृदया तुम्हारी शरण में आयी हूँ । संसार में मेरा कोई नहीं । मुझे शरण दो ।

इतना कहकर वह जल में कूदना ही चाहती थी कि किसी ने पीछे से पकड़ लिया । फिरकर देखा तो वह भैरो था ।

कमला ने रौद्ररूप धारणकर कहा—भैरो मुझे छोड़ दो ।

भैरो—मुझे तुमसे कुछ कहना है ।

कमला—पर मुझे सुनने का अवकाश नहीं ।

भैरो—तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकती ।

कमला—तुम्हें मुझसे क्या प्रयोजन ? इस समय तुम्हारा दूसरी ही आत्मा पर अधिकार है ।

भैरो—कमला, तुम भूत कर रही हो ।

कमला—ऐसा ही सही । मुझे छोड़ दो, इसी में मुझे शांति मिलेगी ।

भैरो ने कमला को बाहु-पाश में कसकर आबद्ध कर लिया । कमला जाल छूटपटाई, पर भैरो हट-पुट था, छुड़ा न सकी । अन्त में थककर बोली—कहिये, आप क्या सुनाना चाहते हैं ?

भैरो—सुनाना ही नहीं, वरन जो सुनाऊँगा, उसे मानना भी एक-सौ तैंतीस

जीवन का शाप

होगा । प्रतिज्ञा करो तो सुनाऊँ ।

भैरो की वाणी में कहणा थी । कमला पर पूर्व-प्रेम ने विजय पायी, उसने प्रतिज्ञा की कि जो कहोगे सुनूँगी और मानूँगी ।

भैरो—अच्छा, यह बताओ कि तुम्हें ऐसा क्षोभ क्योंकर हुआ ?

कमला—संसार से जी उचट गया है ।

भैरो—किसके कारण ?

कमला ने कोई उत्तर न दिया । भैरो ने पुनः पूछा—क्या तुम्हें मेरे आचरण पर सन्देह है ? क्या सफाई चाहती हो ?

कमला—मुझे इसकी क्या आवश्यकता ? हिस्सा थोड़े ही लगाना है । जहाँ रहो, जिसके साथ रहो, अच्छी तरह रहो, बस यही मेरी कामना है । प्रतिदिन एकवार रोज दर्शन हो जाते थे, इसी में अपने को भाग्यशाली समझती थी । यह तो जानती ही हूँ कि मेरा अब अपने ही शरीर पर कोई अधिकार नहीं, फिर दूसरे पर कैसे आशा कर सकती हूँ ? जिस रोज भाँवरें पड़ी थीं, उसी घड़ी देवता को खो बैठी, फिर भी हृदय नहीं मानता था । आखें सर्वदा दर्शन के लिये प्यासी रहती थीं । जिस दिन सुना कि अब यहीं रहना होगा, समझा था स्वर्ग मिल गया । दर्शन तो होंगे । पर मालूम हुआ कि उससे भी वंचित होने का समय आ गया । फिर इस जीवन में अब कौन-सी लालसा शेष रह गयी, जिसके लिये जीवित रहूँ । कुत्तों की तरह जीवन व्यतीत

एक-सौ चौतीस

जीवन का शाप

करने से क्या लाभ ? यह तो जानती ही हूँ कि दर्शन के अतिरिक्त न तो अधिक सुख प्राप्ति का मुझे अधिकार है और न आशा । पर जब इतने से भी वंचित की गयी तो मेरे लिये जाह्नवी की गोद के अतिरिक्त और कौन-सा समुचित स्थान था ? तुम चले जाते, फिर मैं किसके आधार पर जीवित रहती ?

भैरो—यह तुमसे किसने कहा कि मैं कहीं जा रहा हूँ ?

कमला—भैरो ! छिपाने से काम न चलेगा । सच कशो, तुम जीजी के साथ कहीं जाने का विचार नहीं कर रहे थे ?

भैरो—नहीं ।

कमला—तुमने उनके प्रति प्रयाग में कोई ऐसा कार्य नहीं किया था, जिसमें उन्हें तुम्हारी ओर से बहुत कुछ आशा बंध गयी ?

भैरो—यदि वह ऐसा समझती हैं तो उनकी यह गलती है ।

कमला—ये बातें निराधार नहीं हो सकतीं ।

भैरो—कमला तुम्हें मेरा विश्वास नहीं है क्या ?

कमला इसका कोई उत्तर न दे सकी ।

भैरो ने पुनः कहा—कमला ! मेरा तुमपर न कोई अधिकार नहीं, न कभी तुम्हें पाने की स्वप्न में आशा कर सकता हूँ, फिर भी तुम यह विश्वास रखो कि देवी के समान मैंने सदा के लिये अपने हृदय में तुम्हारी स्थापना कर रखी है । क्या तुम्हें वह समय याद नहीं, जब कि तुमने मुझे एक चित्र दिया था ?

एक-सौ पैंतीस

जीवन का शाप

कमला—हाँ याद है ।

भैरो—बस ! वही मूर्ति मेरे हृदय में विराजमान है । वही मेरे निराशापूर्ण हृदय की आशा है, मुझ निःसहाय की सहायक है, मुझ निर्बल का बल है । कमला तुम मेरे हृदय-मन्दिर की देवी हो और मैं उसका पुजारी ।

भैरो के प्रेम-मिश्रित शब्दों को सुनकर कमला का हृदय-भर आया । आनन्दाश्रु बहने लगे, उसने कहा—भैरो मुझे जमा करो, तुम देवता हो ।

भैरो—फिर तो ऐसा अन्याय नहीं करोगी न ?

कमला ने भैरो के कन्धे पर मस्तक रख दिया । उसके आँसू भैरो के वक्षस्थल को तर करने लगे ।



एक-सौ छत्तीस

२२

सौदामिनी ने आवेश में भैरो के सामने अपने हृदय के अभ्यक्त मनोभावों को प्रकट कर दिया था, पर भैरो की अस्वीकृति मिलते ही होश में आयी और मारे लज्जा तथा दुःख से अपने कमरे में भाग गयी। चादर खींचकर पलंग पर पड़ रही। सारा शरीर पसीने से तर हो गया। सोचने लगी—भैरो सरज हृदय का युवक है। मैंने उससे ऐसी बातें कहकर बड़ा अनुचित किया। उसे रह-रहकर कमला पर क्रोध आता। सोचती—इसी के कारण आज ऐसी घटना हुई। मैंने तो किसी के बीच में बोलना ही एक-सौ सैंतीस

जीवन का शाप

छोड़ दिया था, पर आज न जाने कहाँ की शामत सवार हुई। कमला मुझे कलंकिनी समझती है। भैरो का अब मुझपर से विश्वास उठ जायगा। दास-दासियों की भी न जाने क्या धारणा होगी। भला अब मैं अपना मुख किसी को कैसे दिखाऊँगी ?

इसी प्रकार तर्क-वितर्क करते-रात के दो बज गये। सौदामिनी को नींद न आयी। अन्त में उसने यही निश्चय किया कि मैं अपना मुख किसी को न दिखाऊँगी। रात अँधेरी थी। सौदामिनीने सोचा घर से निकल भागने का अच्छा मौका है। सोचने लगी, कहाँ जाऊँ ? ऐसी जगह जाना चाहिये कि फिर किसी परिचित से भेंट न हो। प्रतिदिन होने वाले अशान्ति-मय वातावरण में रहना अच्छा नहीं। अभी तक सबको दबाये रहती थी, पर अब तो यह भी नहीं कर सकती। कमला से सदा दबना पड़ता है।

सौदामिनी के पास लगभग दस हजार के गहने थे। उन गहनों की याद आई। सोचा किसी के आधीन होकर क्यों रहूँ ? जहाँ जाऊँगी रानी की तरह सुख से रहूँगी। सौदामिनी ने उठकर एक चादर ओढ़ी और गहने की सन्दूक निकालकर बगल में दबाई। धीरे से द्वार खोलकर स्टेशन की ओर चली। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। किसी तरह धड़कते हुए हृदय से स्टेशन पहुँची। सोचने लगी अब कहाँ जाऊँ ? चिन्ता ने कहा— संसार से क्या काम ? काशीवास करना चाहिये। काशी का

एक सौ अड़तीस

जीवन का शाप

टिकट खरीदना निश्चय किया, पर रुपया न था। यह समय गहने बेचने का न था, अब कैसे काम चलेगा ? यदि बिना टिकट चली चलूँ और पकड़ जाऊँ तो अपमान होगा। गाड़ी में आध घण्टे की देर थी। दूसरे दर्जे का जनाना मुसाफिर खाना खाली था, उसी में घुस गयी। गहनों की सन्दूक सिर तले रखकर लेटी ही थी कि उसे एक बात की याद आ जाने से प्रसन्नता हुई। प्रथम दर्शन के समय पति ने ५) दिये थे, वह इसी में अब तक पड़े थे। वह उसे व्यय नहीं करना चाहती थी, पर इस आपत्तिकाल में अपनी रक्षा करने का अन्य उपाय न था। रुपये निकालकर तुरन्त काशी का टिकट ले लिया।

दिन ही को काशी पहुँचने की आशा थी, पर राह में इञ्जन के दिगड़ जाने से गाड़ी लेट हो गयी। नौ बजे रात्रि में काशी पहुँची। एक अनजान स्थान में रात्रि के समय उतरकर सौदामिनी सोचने लगी—अब कहाँ जाऊँ ? यहाँ अपना कोई नहीं। सुनती हूँ यहाँ गुण्डे बदमाशों की कमी नहीं, फिर मेरे पास आभूषण हैं। बड़ी विपत्ति का सामना है।

सौदामिनी स्टेशन के बाहर निकल आयी। गाड़ीवाले ने पूछा—बहूजी कहाँ जाना होगा ? सौदामिनी कुछ उत्तर न दे सकी। गाड़ी वाले ने कोई उत्तर न पा दूसरे व्यक्ति को पुकारा—बाबूजी इधर आइये, मैं ले चलूँगा। मुसाफिर गाड़ी के पास एक-सौ उन्तालीस

जीवन का शाप

आया। साथ में एक स्त्री भी थी। बोला दशाश्वमेध चलूँगा, क्या लोगे ?

सौदामिनी ने यात्री को देखा तो पूर्व परिचित मालूम हुए। यह रजनीकांत थे, अपनी सहधर्मिणी के साथ ससुराल लौटे थे। रजनीकांत आगे बढ़कर गाड़ीवाले से मोल-चाल करने लगे। सौदामिनी उनकी धर्म-पत्नी गंगादेवी के पास जाकर बोली—क्या आप दशाश्वमेध पर रहती हैं ?

गंगा०—हाँ, मायके से आ रही हूँ। आपको कहाँ जाना है ?

सौदा०—मैं यात्रा करने चली थी, घरवालों का साथ छूट गया। रात भर के लिये कहीं ठहरने का स्थान चाहती हूँ।

गंगा०—तो मेरे साथ चलिये, रात को अकेली कहाँ जाइयेगा ?

हूत्रते को तिनके का सहारा बहुत होता है। रजनीकांत की प्रयाग वाली सहायता से उसे विश्वास हो गया था कि वह सज्जन पुरुष है। गाड़ी ठीक हो गयी थी। गंगादेवी ने रजनीकांत से सौदामिनी का समाचार कहा। रजनीकांत उसे घर लिवा चञ्चने के लिये सहमत हो गये।

रात्रि में रजनीकांत सौदामिनी को पहिचान न सके थे। प्रातःकाज देखते ही बोले—आपतो भैंरो के साथ प्रयाग में मुझसे मिली थीं न ? आपके साथ और कौन था ? जरूरत हो तो घर तार दे दिया जाय।

एक-सौ चालीस

जीवन का शाप

सौदा०—जी नहीं, मैं अब घर नहीं जाना चाहती, वहाँ अब मेरा कोई नहीं है। आप यहीं कहीं मकान ठीक कर दीजिये। काशीवास करने की इच्छा है।

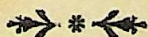
रजनी०—आप अभी युवती हैं। आपसे यह कठिन तपस्या क्योंकर हो सकेगी? और फिर आपका खर्च कैसे चलेगा?

सौदा०—खर्च की चिंता न कीजिये। मेरे पास आभूषण हैं, उन्हीं से निर्वाह हो जायगा।

रजनी०—मेरे घर में बहुत स्थान है, कष्ट न हो तो यहीं रहिये। आप ही का घर है।

सौदामिनी ने कोई उत्तर न दिया। गंगादेवी इस घर में अकेली ही रहती थी। सौदामिनी की शिष्टता पर मुग्ध थी। बोली—हर्ज ही क्या है? मैं भी दुकेली हो जाऊँगी।

सौदामिनी यही तो चाहती ही थी। कोई सहारा तो चाहिये ही था? फिर इससे बढ़कर सुयोग कहाँ मिल सकता था? तुरन्त सहमत हो गयी।



एक-सौ एकतालीस

२३

सौदामिनी को एक साफ-सुथरी कोठरी मिल गयी । नित्य गंगा स्नान और विश्वनाथ का दर्शन कर भोजन करती और सो रहती । न ऊँचो का लेना, न माधो का देना । गंगादेवी से भी उसकी खूब पटती थी । उसने अपने गहनों को बेचकर अपनी जीविका चज्जानी आरम्भ की । रजनीकान्त ने उससे घर पत्र लिखने का बहुत आग्रह किया, पर सौदामिनी बराबर अस्वीकर करती गयी । एक दिन तो उसने कह दिया कि यदि आप मुझे इसके लिये विवश करेंगे तो मुझे दूसरा स्थान ढूँढना पड़ेगा ।

एक-सौ बयालीस

अभी सौदामिनी को यहाँ आये तीन ही मास हुए थे कि गंगा-देवी को कठिन रोग ने ग्रस लिया। पूरे एक मास तक चारपाई पर पड़ी रही। रजनीकांत के पास धन न था, सौदामिनी ने तन मन धन से उसकी सेवा की, पर बचा न सकी। बेचारी काल-कवलित हो गयी।

अब सौदामिनी के लिये इस अकेले मकान में रहना एक कठिन समस्या थी। रजनीकांत ने समझाया—मकान बहुत बड़ा है। कोई किरायेदार रख लिया जायगा, फिर किसी को कुछ कहने का अवकाश न मिलेगा।

सौदामिनी परदेस में थी। न वह किसी को जानती थी, न उसे कोई जानता था। उसे रजनीकांत के चरित्र पर विश्वास था। विशेष वादा-विवाद करने की आवश्यकता न थी।

रजनीकांत ने किरायेदार ढूँढ़ा, पर कोई मिला नहीं। दोनों के बीच में जो लोक-लज्जा की दीवाल खड़ी थी, वह भी महीने-दो-महीने के पश्चात् भूमिसात हो गयी। फिर सौदामिनी ने जाने का न कोई प्रश्न ही उठाया और न उसे इतनी फुरसत ही थी कि इसपर विचार करे। दिन के दस बजे तक तो गंगा नहाने और विश्वनाथ के दर्शन में ही बीत जाता फिर भोजन बनाती, पश्चात् थोड़ा आराम करती और फिर किसी मन्दिर में जाकर कथा-वार्ता में समय बिताती।

एक-सौ तैंतालीस

जीवन का शाप

अब सौदामिनी और रजनीकांत में एक प्रकार का सौहाद्र हो गया था। दोनों एक दूसरे को अपने दुःख का साथी समझते थे। एक दिन भोजन करते समय सौदामिनी ने पूछा—घर कब बसाओगे ?

रजनीकांत ने उत्तर दिया—घर उजड़ा ही कब था कि बसाऊँ ?

सौदा०—तो क्या विवाह न करोगे ?

रजनी०—विवाह की आवश्यकता ही क्या है ? फिर तुम तो जानती ही हो कि मैं विधवा विवाह का प्रचार करता हूँ।

सौदा०—जैसे भी हो घर तो सूना नहीं रहना चाहिये।

रजनी०—मुझे तकलीफ काहे की है। भोजन पकापकाया मिल ही जाता है। क्या विवाह ही करने से घर बसता है।

सौदा०—मैं तुम्हारा भोजन न बनाऊँगी तब तुम्हें घर बसाने की चिन्ता होगी ?

रजनी०—मैं तो विधवा विवाह करूँगा।

सौदा०—तो तुम्हें मना कौन करता है ? पर जब तक अक्षत-योनिकी स्त्री मिले तब तक यह बला क्यों सर पर मोल लेते हो। समाज में विप्लव मच जायगा, यह जानते हो न ?

रजनी०—खूब जानता हूँ।

सौदा०—तब खोजो।

रजनी०—मैंने खोज लिया है।

सौदा०—अच्छा इतने गुप्त रूप से ? विवाह कब होगा ? मुझसे

एक-सौ चौवालीस

जीवन का शाप

कहा तक नहीं ?

रजनी०—मैंने संकल्प कर लिया है कि जब तुम्हारी अनुमति होगी विवाह करते देर न लगेगी ।

सौदा०—विवाह तुम करोगे, मेरी अनुमति की क्या आवश्यकता ? तुम्हारे अधीन हूँ, रखोगे रहूँगी नहीं चली जाऊँगी ।

रजनी०—जाने के लिये कहता कौन है ?

सौदा०—वास्तविक बात यह है कि गंगा बहिन से मेरी पटती थी, पड़ी थी । अब न जाने कैसी से पाला पड़े ? तुम्हारे रखने और न रखने से होता ही क्या है ? जब मालकिन रहने देंगी तब न ।

इतना कहते-कहते सौदामिनी की मुखाकृति मलीन पड़ गयी । जिस घर पर इस समय उसका आधिपत्य था, उससे हटाये जाने की भावी आशंका ने उसके चित्त को व्यग्र कर दिया । रजनीकांत नारी-हृदय की परख में चतुर था, मन की बात ताड़कर बोला—
तुम अपना पुनर्विवाह क्यों नहीं कर लेती ?

सौदामिनी के मुखमण्डल पर लाली दौड़ गयी, परन्तु हृदय के मनोवेग को छिपाती हुई बोली—भला यही मेरा काशोवास होगा ?

रजनी०—अभी तुम कोई बुड्ढी तो हुई नहीं हो । संसार के सुख को इस तरह ठुकराना उचित नहीं ।

सौदा०—मैं इसे पाप समझती हूँ ।

एक-सौ पैंतालीस

जीवन का शाप

रजनी०—तस्हीं तो मेरा दूसरा विवाह करा रही थीं। यदि तुम पुनर्विवाह को पाप समझती हो तो मुझे उस पाप की ओर क्यों अग्रसर करती हो ?

सौदा०—पुरुषों को पुनर्विवाह करने की समाज आज्ञा देता है।

रजनी०—तो स्त्रियों के लिये पाप कैसे कहा जा सकता है ? ईश्वर की सृष्टि में स्त्री पुरुष समान हैं, फिर जो बात एक के लिये अच्छी है दूसरे के लिये बुरी नहीं हो सकती।

सौदामिनी ने कोई उत्तर न दिया। रजनीकांत ने 'मौनं स्वीकृति लक्षणं' समझा।

रजनीकांत ने सौदामिनी का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींच लिया। सौदामिनी ने कोई आपत्ति न की, केवल अंचल से अपना मुख ठक लिया।



एक-सौ छियलीस

२४

सौदामिनी अपने को सौभाग्यवती समझती है, परन्तु दुनियाँ उसे कुत्ता के नाम से पुकारती है। राह चलते लोग उसपर फव-
तियाँ कसते हैं। इसलिये साल भर से उसने घर से निकलना बन्द
कर दिया है। उसे मनुष्यों की सूरत से घृणा हो गयी है, अपने
घर में बैठी रहती। रुखा-सूखा जो कुछ मिलता खाती और सुख
की नींद सोती। समाज की व्यंगोक्तियों की उसे परवाह न थी।
जब तक उसके देवता सीधे हैं, कोई उसका क्या बिगाड़ सकता था।

नित्य नये-नये शृङ्गार करती, आभूषणों की कमी तो थी ही नहीं।

एक-सौ सैंतालीस

जीवन का शाप

उन्हें पहिनकर अपनी साध पूरी करती, शीशे में अपना सौन्दर्य देख स्वयं ही प्रसन्न होती । कोई देखने वाला नहीं था न सही, उसके देवता तो प्रसन्न होते थे । बस इसी में उसे सन्तोष था और था सुखका भण्डार । यदि कभी किसी बात पर उसे चिन्ता होती तो केवल इस बात की कि रजनीकांत ने अभी तक अपनी पतिज्ञा पूरी नहीं की थी । वैदिक रीति से विवाह होने की बात निश्चित हुई थी, पर अभी तक वह कार्य सम्पन्न नहीं हुआ । जब कभी सौदामिनी प्रस्ताव करती तो रजनीकांत हँसी में टाल देता । सौदामिनी स्नेह की भूखी थी, वह उसे मिल गया । वचपन में पति के साथ रहने पर उसने सुख भोग की अभिलाषा की थी, परन्तु मन ही में रह गयी । एक-एक कर वह भी पूर्ण हुई । विवाह आदि तो सामाजिक ढकोसले हैं । बार-बार याद दिलाकर वह रजनीकांत को कैसे कष्ट दे सकती थी ? फिर भी उसका हृदय कभी-कभी आन्दोलन करने लगता, और वह इस सम्बन्ध में रजनीकांत से उलझ पड़ती ।

सौदामिनी नित्य नये प्रकार के स्वादिष्ट भोजन तथा नवीन नवीन शृङ्गार से रजनीकांत को मुग्ध करती रहती । गृहस्थी का स्वर्च भी अपने पास से चलाती, रजनीकांत निश्चिन्त था । खुले साँड़ की तरह घूमा करता, जब इच्छा होती घर पहुँचकर भोजन कर लेता । दो-बार मीठी बातें करता और अपनी वासना की तृप्ति ।

एक-सौ अड़तालीस

जीवन का शाप

सारांश यह कि सौदामिनी रजनीकांत को अपना देवता, अपना प्रभु और अपना सर्वस्व समझती थी। परन्तु रजनीकांत उसे अपनी वासना का साधन, उदर पूर्ति का आधार और संसार का खिलौना समझता था। सौदामिनी को उस पर प्रेम और भक्ति थी, परन्तु इसके विपरीत रजनीकांत को उसके सौन्दर्य पांन की असुर लाजसा थी। एक त्याग की मूर्ति थी तो दूसरा लिप्सा का उपासक।

रजनीकांत सौदामिनी के हृदय को समझता था, पर सौदामिनी रजनीकांत के खोखले हृदय को न समझ सकी। रजनीकांत को अवज्ञाओं से निर्य काम पड़ता था, परन्तु सौदामिनी का भैरो के बाद रजनीकांत से ही सम्पर्क हुआ था। चतुर होती हुई भी रजनीकांत के कुत्सित भावों को न समझ सकी।

सौदामिनी को रजनीकांत पर पूर्ण विश्वास था। वह नहीं जानती थी कि वह मुझे किस ओर लिये जा रहा है? जिस बात से रजनीकांत को सुख हो, उसी में वह अपना सुख और जिपमें उसे दुःख उसी में दुःख समझती थी।

इधर चार-पाँच दिन से सौदामिनी कुछ अन्यमनस्क रहने लगी थी। कारण रजनीकांत उसने कुछ खींचा रहता था। सौदामिनी गर्भवती थी। उसे परिश्रम करने में कष्ट होता था। फिर भी रजनीकांत की सेवा में किसी बात की त्रुटि न होने देती थी।

एक-सौ उन्चास

जीवन का शाप

रजनीकांत के खिंचे रहने का कारण वह समझ नहीं पाती थी ।

प्रातःकाल का समय था । सौदामिनी उठकर खिड़की पर खड़ी थी । अभी सूर्योदय नहीं हुआ था । इसी समय एक व्यक्ति ने द्वार खटखटाया, तुरन्त ही एक दूसरी प्रौढ़ा निकलकर बोली—आज बड़ी देर की चौधराइन !

वृद्धा—कल पंचायत न थी ।

प्रौढ़ा—किस बात की ?

वृद्धा—अरे वही रजनीकांत के बारे में, जो एक खेली को अपने यहाँ रखे हुए है ।

प्रौढ़ा—वह तो अपने को विवाहिता कहती है । मारे गर्व के किसी से बात नहीं करती । उसका श्रद्धार तो नव-विवाहिताओं को भी मात करता है ।

वृद्धा—उसके समझने से क्या होता है ? जिस पर वह भूली बैठी है जब वही उसे कल न पूछेगा तो दूसरा उसे कौन सधवा पुकारेगा ?

प्रौढ़ा—तो कल क्या तँ हुआ ?

वृद्धा—चौधरी ने साफ कह दिया कि यदि विरादरी से सम्बन्ध रखना है तो उससे विवाह मत करना । विवाह करोगे तो जातिच्युत कर दिये जाओगे ।

प्रौढ़ा—तो क्या अभी विवाह नहीं हुआ है ?

वृद्धा—अभी कहाँ ।

एक-सौ पच्चास

जीवन का शाप

प्रौढ़ा—तो क्या उसे निकाल देगा ?

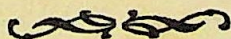
वृद्धा—निकाले या स्थान दे, हमलोगों से इससे क्या प्रयोजन ?

प्रौढ़ा—क्या उसने पंचायत की बात मान ली ?

वृद्धा—मानेगा नहीं तो क्या करेगा ? चौधरी की आज्ञा कौन टाल सकता है ? चौधरी ने उसे खूब फटकार बतायी । उन्होंने कहा—सदा खुराफात किया करता है । विधवाओं के विवाह के लिये लोगों को भड़काता रहता है । देखता हूँ तू कैसे विधवा विवाह करता है ?

प्रौढ़ा—अच्छा हुआ । अब नून, तेल, लकड़ी का भाव मालूम पड़ेगा । चली थी सधवा बनने, इधर की रही न उधर की । सामने रहती है, पर मारे घमण्ड के कभी बात भी नहीं करती थी । ऐसों का गर्व भगवान अवश्य चूर करते हैं ।

दोनों स्त्रियाँ इसी प्रकार बात करती हुई गंगा स्नान के लिये बढ़ गयीं । सौदामिनी समझ गयी कि यह टिप्पणी मेरे ही सम्बन्ध में है । उसे रजनीकांत पर बड़ा क्रोध आया । निश्चय किया कि आज विवाह का प्रसंग अवश्य छेड़ूंगी ।



एक-सौ एक्यावन

२५

रजनीकांत के सोकर उठते ही सौदामिनी ने फिर वही पुरानी बात छेड़ी ।

रजनीकांत ने कहा—तुम तो पागल हो गई हो । जब चाहोगी विवाह हो जायगा, घबड़ाने की क्या बात है ?

सौदा०—मैंने सुना है कि कल पंचायत में तुमने विवाह न करने का बचन दिया है ।

रजनीकांत सकपकाया, परन्तु अपने भावों को छिपाते हुए बात बनाकर बोला—तुम सदा ऐसा ही सोचा करती हो । रात ही पंचायत

एक सौ बावन

जीवन का शाप

धी और सुबह तुम्हारे यहाँ तार पहुँच गया। मैंने तो स्पष्ट कह दिया कि हम दोनों का विवाह हो गया। जिसकी इच्छा हो सम्बन्ध रखे नहीं तो अपने घर रहे। मैं किसी से क्यों डरूँ ?

सौदा०—तो क्या चौधराइन झूठ कहती थी ?

अब रजनीकांत को मालूम हुआ कि सौदामिनी को रत्ती-रत्ती खबर लग गयी है, झूठ बोलने से काम न चलेगा। बोला—उनके कहने से क्या होता है ? मैं जब तुम्हें निकालूँ और कुछ कहूँ तब कहना।

सौदा०—परन्तु बिना विवाह सम्बन्ध हुए समाज तो मुझे कुलटा कहकर पुकारता है। किसका-किसका मुँह बन्द करूँगी। यदि विवाह हो जाता तो किसी को ऐसा कहने का साहस न होता।

रजनी०—परन्तु जल्दी का काम शैतान का होता है।

सौदा०—तुम तो सदा ऐसा ही कहकर टाल देते हो।

रजनी०—यहाँ इस काम को पूर्ति में लोग बड़ा विघ्न डालेंगे।

सौदा०—जहाँ विघ्न न हो वहीं चलकर कार्य सम्पन्न करो।

रजनी०—अच्छी बात है। चलो, यात्रा के निमित्त चला जाय, जहाँ संयोग होगा रस्म अदा हो जायगी।

सौदामिनी ने आपत्ति न की। वह घर में पड़ी-पड़ी घबड़ा भी गयी थी। चित्त की शान्ति के लिये उसने इस विचार को उचित

एक-सौ तिरपन

जीवन का शाप

समझा । यहाँ पर सन्तानोत्पत्ति करना भी नहीं चाहती थी । तरह-तरह की बातें फैलतीं, अतः यात्रा की तैयारियाँ होने लगीं ।

पहिले पुरी की यात्रा हुई, बड़ा आनन्द आया । लौटती समय गयाजी ठहरने का निश्चय हुआ । प्रसव होने के पश्चात् विवाह सम्पन्न होने की बात पक्की होगयी । कच्चे महाल में एक छोटा-सा मकान चार रुपये किराये पर लिया गया । सौदामिनी के प्रसव का समय निकट आ गया था । प्रश्न उठा कि यदि यहाँ विवाह की बात छेंडी गयी तो लोग बुरा कहेंगे । अभी तो लोग स्त्री-पुरुष समझ कर भक्ति करते हैं, बात खुल जाने पर अपयश फैलेगा । फलतः यहाँ भी कलंक का टीका सिर लगाने के भय से सौदामिनी काँप गयी और विवाह कार्य न हो सका ।

कुछ ही दिनों बाद सौदामिनी ने पुत्र प्रसव किया, महल्ले वाली स्त्रियों ने बड़ी सहायता की । बच्चे का मुख देखकर सौदामिनी को बड़ा आनन्द हुआ, जीवन-भर का कष्ट भूल गया ।

जिस समय सौदामिनी सूतिका गृह में थी, रजनीकांत उससे बहुत खिंचा रहने लगा । बेचारी दिन-दिन भर भूखी पड़ी रह जाती, खाने तक को न पूछता । महल्ले की बुढ़िया बड़ी भलेमानस थी । यदि वह हर तरह से सौदामिनी की सहायता न करती तो शायद सौदामिनी जीवित न बचती ।

ज्यों-ज्यों तीन मास गया में बीत गये । बालक भी दो मास

एक-सौ चौवन

जीवन का शाप

का हो गया था। पुनः यहाँ से कहीं और चलने का विचार हुआ।
सौदामिनी ने पूछा—कहाँ चलोगे ?

रजनी०—घर।

सौदा०—तुमने अपनी प्रतिज्ञा तो पूरी की नहीं। यह बालक लेकर मैं कैसे जाऊँगी ?

रजनी०—इसे यहीं छोड़ दो।

सौदामिनी के हृदय पर मानो सैकड़ों विजलियाँ गिर पड़ीं, मस्तिष्क विचार-शून्य हो गया। वाक्-शक्ति लुप्त होती हुई-सी जान पड़ी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों से ऐसा प्रतीत होता था कि वे दया की भिन्ना माँग रही हों। उसने अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा—यह जघन्य कार्य मैं नहीं कर सकती।

रजनी०—तो तुम भी यहीं रह जाओ।

सौदा०—और तुम चले जाओगे? अकस्मात् ऐसी निष्ठुरता क्यों ?

रजनी०—जब चाहोगी आकर लिवा जाऊँगा। तुम्हें सदा के लिये थोड़े ही छोड़ जाऊँगा।

सौदा०—अगर आरम्भ में ही मेरी बात मान जाते तो ऐसी जटिल समस्या उपस्थित ही क्यों होती ?

रजनी०—तो क्या मैं जानता था ?

सौदामिनी अपनी दयनीय अवस्था पर फूटकर रो पड़ी। रोते-ही-रोते उसने कहा—मैं भी नहीं जानती थी कि पुरुष इतने विश्वास-

एक-सौ पचपन

जीवन का शाप

घाती और निष्ठुर होते हैं। मीठी बातों में मुझे फँसाकर तुमने मेरी यह दुर्दशा की। मुझे कहों भी मुँह दिखाने योग्य न रहा। पुरुष समाज की पाशविक लोला ही उसके पतन का कारण है। हम भोली-भाली स्त्रियों को पथभ्रष्ट बनाकर अपने को स्वच्छ और मार्ग-प्रदर्शक होने की घोषणा करते हैं। आप स्वयं अपने को सुधारक कहते आये और जो सुधार आपने किया वह मेरे समक्ष उपस्थित कर दिया। एक निस्सहाय अबला की ऐसी दुर्दशा करना आप जैसे सुधारक के लिये शोभा नहीं देता।

रजनीकांत को पहिले तो क्रोध आया, परन्तु उसके रोने पर दया आ गयी। बोले—सौदामिनो ! मुझे व्यर्थ ही कोस रही हो। मैं तुम्हें बुलाने नहीं गया था। तुम स्वयं आयी। मैंने तुम्हें शरण दी। दोनों ने अपने-अपने स्वार्थ की सिद्धि की। अब तक प्रतिज्ञा पूरी करने का अवसर नहीं मिला है, फिर भी मैं अपने बात पर अटल हूँ। काशी चलो, यदि तुम्हारी ऐसी ही जिद्द है तो वहाँ तुम्हारा मन रख दूँगा। इन सांसारिक ढकोसलों में क्या रखा है ?

पहिले तो सौदामिनी सहमत न हुई, पर अपने को निराधार पाकर काशी जाने पर राजी हो गयी।

प्रस्थान हुआ, परन्तु सौदामिनो का चित्त उदास था। न जाने क्यों उसे रजनीकांत से घृणा-सो होती जा रही थी। यदि कुछ आभूषण वहाँ छोड़ आई होती तो उससे सदा के लिये सम्बन्ध विच्छेद कर लेती।

एकसौ छप्पन

२६

अर्द्ध रात्रि का समय है, चारों ओर अन्धकार छाया हुआ है। आकाश बादलों से घिरा है, शीत भी ज़ोरों की पड़ रही है, तथापि इन बातों की परवाह न करते हुए एक पुरुष और एक स्त्री, नवजात शिशु को गोद में दबाये राजघाट के पीपे के पुल पर से जाते दिखाई पड़ रहे हैं। दोनों ही मौन हैं। स्त्री की आँखों से आसुओं की धारा बह रही है। रह-रहकर वह शिशु के कोमल मुख की ओर देखती और प्रेमविह्वल हो छातो से चिपका लेती है।

अकस्मात् इस मौनावलम्बन को तोड़ते हुए पुरुष ने कहा—

एक-सौ सत्तावन

जीवन का शाप

सौदामिनी, ममता छोड़ो। ईश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही पुनः यह सुख प्राप्त होगा और इसे तुम अपना कइ सकोगी। साम्प्रत हम लोगों के मध्य में यह शत्रु के समान है।

सौदा०—इसने क्या अपराध किया है? अपराधी तो हम दोनों हैं।

रजनी०—उसीका यह प्रायश्चित्त इस रूप में करना होगा?.

सौदामिनी को रजनीकांत के इस निष्ठुरता पर बड़ा क्षोभ हुआ। उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा—ऐसा प्रायश्चित्त अन्याय का द्योतक है। मैं कलेजे के टुकड़े को इस भाँति अलग नहीं कर सकती? इसके बदले मुझ पापिनी को मार डालो, परन्तु इसकी रक्षा करो।

रजनी०—सौदामिनी पागल न बनो, स्थिति पर विचार करो। यह बालक हम लोगों के लिये कलंक है।

सौ०—मैं उस कलंक को सहने के लिये तैयार हूँ। कलंक तो ईश्वर ने ही लगा दिया, उसको मिटा देना मनुष्य-शक्ति को सीमा के बाहर है। इसमें बालक का क्या दोष?

रजनी०—माना कि लोगों की धारणा हम लोगों की ओर से तुरी है, पर अभी तक उसका कोई सबूत तो नहीं था। अब तो यह कलंक का अभाण-पत्र है।

सौदा०—चाहे जो हो मुझसे यह पाप-कर्म नहीं हो सकता।

रजनी०—यदि तुमसे नहीं हो सकता तो बालक को मुझे दो।

एक-सौ अट्ठावन

मैं तुम्हारे लिये यह भी कर्म करने के लिये तैयार हूँ ।

सौदामिनी ने बालक को छाती से दबका लिया । रजनीकांत उसे छीन लेने का प्रयत्न करने लगा ।

उसने बालक को और जोर से दबाते हुए कहा—दया करो रजनीकांत ! मेरी एक प्रार्थना है । तुम मुझे अपने भाग्य पर भटकने के लिये छोड़ दो । बालक को लेकर घर जाओ । कोई पूछे तो कह देना, मैंने बालक को सड़क पर निराश्रय पड़ा हुआ पाया है । शिशु-हत्या के पाप से दोनों को मुक्ति मिलेगी ।

रजनी०—परन्तु तुम कहाँ जाओगी ?

सौदा०—यदि कहीं स्थान न मिलेगा तो गंगा माता की गोद तो सरलता से मिल सकती है । कोई स्थान न दे, पर गंगा माता मुझ पर दया करेंगी ही ।

रजनी०—सौदामिनी, होश में आओ । एक बच्चे के लिये इतना मोह । तुम जीवित रहोगी तो न जाने कितने बच्चों की माँ होगी ।

सौदा०—मुझे अपने से बढ़कर बच्चे का ध्यान है । अपने पाप के बदले में उस अवोध को क्यों दण्ड दूँ ? देखो कैसा प्यारा मुखड़ा है ? कैसा भोलापन है उसकी मुद्रा पर ? क्या मैं इतने दिनों तक इसे अपने खून से इसीलिये पाला है कि गंगा की गोद में समर्पण कर दूँ ?

एक-भौ उन्मथ

जीवन का शाप

रजनीकांत ने बालक का मुखड़ा देखा । उसे भी दया आई । एक ओर समाज का भय था, दूसरी ओर पुत्र का प्रेम । दोनों में संग्राम छिड़ गया ।

कुछ देर के बाद रजनीकांत ने कहा—मुझे क्या करने को कहती हो ?

सौदा०—बालक को घर ले जाओ ।

रजनी०—पर मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा ।

सौदा०—दूसरा उपाय ही क्या है ?

रजनी०—घर चलो, जो होगा देखा जायगा ।

सौदा०—कौनसा मुँह लेकर चलूँ ?

रजनीकांत ने सोचा, यह सीधे से न मानेगी । जब काम हो जायगा तो आप ही शान्त हो जायगी । प्रकट रूप में बोला—अच्छा, लाओ बालक को ले चलूँ, तुम बहुत देर से लिये हुई हो ।

निष्कपट हृदया सौदामिनी ने समझा रजनीकांत को भी अब दया आ गयी है, इसीलिये बच्चे को माँग रहा है । उसने बच्चे को दे दिया । रजनीकांत ने उसे लेते ही काँपते हुए हाथों से बालक को बिना आगा-पीछा सोचे गंगा माता की गोद में समर्पण कर दिया ।

सौदामिनी के मुख से सहसा एक चीख निकल पड़ी और साथ ही गिरकर मूर्छित हो गयी । योड़ी देर उसी अन्वस्था में पड़े रहने के पश्चात् उसकी मूर्च्छा भंग हुई । उसने कलपते हुए कहा—

एक-सौ साठ

जीवन का शास्त्र

नराधम ! यह विश्वासघात ! ले अपने पापों का फल देख !

इतना कहकर सौदामिनी स्वयं भी जल में कूद पड़ी। जल से एक विचित्र प्रकार की शब्द-ध्वनि निकली और साथ ही पानी के छींटे रजनीकांत के मुख पर पड़े। रजनीकांत किंकर्तव्य विमूढ़-सा खड़ा रहा। कुछ बोलते न बना !

कुछ दूर पर एक मनुष्य दिखाई पड़ा, पर रजनीकांत का हृदय इस समय इतना विचारपूर्ण था कि उसे उसकी ओर ध्यान तक न था।

कुछ देर तक खड़ा खड़ा रजनीकांत कुछ सोचता रहा। फिर गहरी सांस लेकर बोला—चलो अच्छा हुआ। जीवन निष्कण्टक हो गया।

मुख से तो कह गया कि अच्छा हुआ पर हृदय ने इसके विरुद्ध आन्दोलन किया। हृदय कहता था कि तुम नराधम ! विश्वासघातक हो ! अपने पापों का फल भोगना होगा। मनुष्य दण्ड न दे तो न सही, पर परमपिता परमात्मा से तुम्हारा यह विश्वास घात नहीं देखा जायगा। वह तुम्हें अवश्य दण्ड देगा।

रजनीकांत आगे बढ़ा। पुलके बाहर निकला ही था कि चौकीदार ने पुकारा—कौन है ?

रजनीकांत का हृदय धड़कने लगा। चौकीदार ने पूछा—तुम्हारे साथ की वह स्त्री कहाँ है जो बच्चे को गोद में लेकर गयी थी।

एक-सौ एकसठ

जीवन का शाप

रजनीकांत ने समझा था कि इस अन्धकारपूर्ण रात्रि में कोई न देखेगा, परन्तु चौकीदार ने जाती समय उसे देख लिया था। उसे जल की आवाज से यह भी पता चल गया था कि जल में कोई गिरा है। रजनीकांत कुछ उत्तर न दे सका। चौकीदार ने कहा— तुम हत्यारे हो। चलो थाने में।



एक-सौ बासठ

२७

जब सौदामिनी ने अपनी आँखें खोलीं तो अपने को एक बहुत ही सजे हुए कमरे में पलङ्ग पर पड़ी पाया । एक वृद्धा उसके सिरहाने बैठी थी । वृद्धा ने पूछा—बेटी कैसा जी है ?

सौदामिनी ने समझा कि मैं मरकर दूसरे लोक में आयी हूँ । उसकी आँखोंके सामने चक्कर-सा आ रहा था । उसने पुनः आँखें बंद कर लीं । रात की एक-एक बात उसे याद आने लगी । बालक की अन्तिम चीख ने हृदय को पुनः आन्दोलित कर दिया । आँख खुलते ही उसने घबड़ाकर पूछा—मैं कहाँ हूँ ?

एक-सौ तिरसठ

जीवन का शाप

वृद्धा—बेटी डरो नहीं, अब तुम बच गयी हो। बहुत पानी पी गयी थीं पर डाक्टर साहब की कृपा से उद्धार हो गया।

सौदा०—मैं यहाँ कैसे आयी ?

वृद्धा—मेरे मल्लाह ने तुम्हें बीच धारा में बहते हुए देखा। वह तुम्हें निकालकर मेरे पास लाया।

सौदामिनी को यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि मृत्यु ने भी उसको धोखा दिया। क्या गङ्गा माता ने भी मुक्त कलङ्किनी को स्थान देने में अपना तिरस्कार समझा ? यह अन्तिम वाक्य उसके मुँह से जोर से निकले।

वृद्धा ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा—बेटी, ऐसी कातर न हो। गङ्गामाता ने मेरी गोद सूनी पा तुम्हें मेरे पास भेज दिया। तुम्हें मैं अपनी पुत्री के समान रखूंगी।

सौदा०—आप कौन हैं ?

वृद्धा—मेरा नाम रजिया है। मेरे यहाँ तुम्हें किसी बात की तकलीफ न होगी।

सौदामिनी ने रजिया वेश्या का नाम बहुत सुना था। आश्चर्य से बोली—तो मैं रजिया वेश्याके घर में हूँ ?

रजिया—बेटी इसमें अश्चर्य की क्या बात है ? खुदा की ऐसी ही मर्जी थी। मेरे लिये तुम्हारा बड़ा भारी सहारा रहेगा।

सौदामिनी ने पुनः आँखें बन्द कर लीं। उसके हृदय-प्रदेश

एक-सौ चौंसठ

जीवन का शाप

में तर्क-वितर्क उठने लगे। सोचने लगी—अभी तक वेद्यालय नहीं देखा था। भाग्य यहाँ भी घसीट लाया। यह मुझे अपनी लड़की बनाना चाहती है, देखूँ ईश्वर क्या २ दिखाता है?

वह सोच ही रही थी कि वृद्धा ने कहा—‘या तुम्हारे साथ कोई बच्चा भी था?’

सौदामिनी ने आश्चर्य से पूछा—आपको कैसे मालूम?

वृद्धा—रजनीकांत नाम का एक व्यक्ति पीपे के पुत्र पर पकड़ा गया। चौकीदार ने उसे एक स्त्री तथा बच्चे के साथ पुत्र पर गाते देखा था। लौटने पर उसे अकेला पा सन्देह हुआ। उसने उसे पुलिस के सुपुर्द कर दिया। तलाशी लेने पर उसकी जेब में गया से कांशी तक के दो टिकट मिले और एक नवजात शिशु की टोपी। पुलिस ने उसे हिरासत में ले लिया। उसपर शिशुहत्या के अभियोग का मुकदमा चलने वाला है।

सौदामिनी का हृदय प्रतिद्विंसा की ज्वाला से धधक उठा। रजनीकांत ने उसे कहीं का न रखा था। बोली—आप मुझे अपनी पत्नी बनाने के लिये तैयार हैं इसलिए मैं आप से कुछ भी छिपा न रखूँगी। इस रजनीकांत ने मुझे अपनी बातों में फँसा कर अधर्म के पाश में फँसाया और अन्त में मेरे नवजात शिशु को गङ्गामाता की गोद में अर्पण कर दिया। दुःख तथा क्रोध के आवेश में मैं भी क्रूढ़ पड़ी। अच्छा हुआ। ईश्वर अन्यायी नहीं।

एक-सौ पैंसठ

जीवन का शाप

उसे अपने पापों का फल शीघ्र ही मिल जायगा ।

रजिया ने देखा, सौदामिनी, के मुख पर घृणा तथा क्रोध की अस्फुट आभा झलक रही है । उसे यह शङ्का हुई कि बहुत खोद-विनोद करने से कहीं उसके हृदय पर अधिक चोट न लग जाय । बोली—बेटी अभी आराम करो । फिर बातें होंगी । नहीं तुम्हारी तबीयत कहीं और खराब न हो जाय ।

सौदा०—नहीं मैं अच्छी हूँ । मुझ जैसी पापिनियों के लिए नर्क में भी स्थान नहीं । आप घबड़ावे नहीं । चला था बेचारा समाज सुधार करने ? अपना ही सुधार न कर सका, तो भला समाज को क्या सुधारेगा ? चला था विधवा विवाह कराने ? मेरे भविष्य पर कालिमा पोतकर, क्या वह सुखी रह सकता है ? कदापि नहीं ।

रजिया सब कुछ समझ गयी, बोली—बेटी जैसा उसने किया है, खुदा उससे समझेगा ।

सौदा०—मैं अपनी आँखों के सामने उसका सर्वनाश देखना चाहती हूँ । नराधम ने मेरे कलेजे के टुकड़े को मुझसे पृथक् किया । हिन्दू समाज ने मेरा तिरस्कार किया । जो समाज पुरुषों का हर तरह से साथ देता है और स्त्रियों को सदा दोषी ठहराता है, उसकी उन्नति असम्भव है । समाज ने मुझे कलङ्किनी करार दिया और वह चाण्डाल शुद्ध बना रहा । जिस समाज का ऐसा न्याय है, जिसकी वेदी पर नित्य ही मुझसी अबलाओं तथा दुधमुँह बच्चों का बलिदान हुआ करता है,

एक-सौ छियासठ

जीवन का शाप

जिसके नियम इतने कठोर हैं कि निस्सहायों को सहारा न देकर दर-दर का भिखारी बना देते हैं, उस समाज पर क्या ईश्वर की अनुकम्पा हो सकती है ?

रजिया—बेटी ! इतनी दुखी न हो । तुम्हारे लिये दूसरे द्वार भी खुले हैं जहाँ तुम्हें स्वतन्त्रता मिल सकती है । इसी हिन्दू समाज के नृशंता-पूर्ण व्यवहार ने मुझे भी हिन्दू से मुसलमान बनने को बाध्य किया । आवेश में कोई काम कर बैठने से पीछे पड़ताना पड़ता है । मैं चाहती हूँ कि फिर हिन्दू धर्म ग्रहण कर लूँ, पर रास्ता बन्द है । ढोंगियों ने उसे जकड़ रखा है । स्वामी दयानन्द ने वह मार्ग निकाला है जो समस्यानुकूल है और जिससे सबका कल्याण हो सकता है, परन्तु धर्म के ठेकेदार इस शुभ-कार्य में अड़झा लगा ही देते हैं । वह वैदिक धर्म सबको समान स्थान देता है । आगे तुम्हारी मर्जी । मैं धार्मिक मामले में कोई नाजायज दबाव नहीं डालना चाहती ।



एक-सौ सड़सठ

२८

रजिया काशी की प्रसिद्ध वेइया थी। गायन-कला में उसकी समता करने वाली कोई न थी। उसने अपना जीवन धर्मिक रीति से व्यतीत किया था। विषय-वासना के नाम पर पाप अर्जन करने उसके लिये असह्य था। युवावस्था में संयम से रहने के कारण वृद्धावस्था में भी उसके मुख पर कांति थी। उसका घर गुणियों तथा धर्मिकों का सभास्थल था न कि बदमाश व शोहर्दों की क्रीड़ा भूमि। एक-एक रात गाने का तीन-तीन चार-चार सौ पाती, पर सभी धर्म-कार्य में व्यय कर देती। रजिया ने लाखों रुपये कमाये

एक-सौ अड़स

जीवन का शाप

और खर्च भी किये, पर सभी धर्म-कार्य में । गरीबों की परिवरिश करने में उसे बड़ी प्रसन्नता होती । अपने वृद्धावस्था के लिये कुछ बचा रखने की बात उसने कभी सोची ही नहीं । अब कुछ वर्षों से उसकी आय बहुत कम हो गयी थी । उसे कोई कन्या भी न थी जिसका उसे सहारा होता । कभी-कभी उसे अपनी गरीबी पर दुःख होता, पर उसे इस बात का हर्ष होता कि उसने जीवन संयम से काटा है । इस समय रजिया को एक लकड़ी की आवश्यकता थी, जिसके सहारे वह अपनी वृद्धावस्था के दिन काट सके । सौदामिनी उसे बड़े संयोग से मिली । उसने सोचा, यदि सौदामिनी का सहारा मिल जाता तो बुढ़ौती बड़े सुख से कट जाती । अतः वह उसे अपने ढाँचे में ढालना चाहती थी, परन्तु रजिया का दयालु हृदय सौदामिनी को इस पाप-वृत्ति में फँसाने के लिये सहमत नहीं होता था । रजिया की एक वृद्धा दासी थी । वह कुबड़ी थी और इसी नाम से पुकारी जाती थी । कुबड़ी बड़ो चतुर और नीति कुशल थी । रजिया ने अपने धर्म-संकट की बात कुबड़ी से कही । कुबड़ी ने उसकी भर्त्सना करते हुए कहा—माजकिन, धर्म ही के पीछे तो तुम्हारी यह दुर्गति हुई है फिर भी नहीं सोचतीं । तुम्हारा किया न होगा । इस बीच मैं तुम मत बोलना मैं सब ठीक कर लूँगी ।

सौदामिनी को यहाँ आये पाँच दिन हो गये थे । नाम को तो वह वेश्या रूप में थी, परन्तु यहाँ की सभी बातें विचित्र थीं ।

एक-सौ उन्इतर

जीवन का शाप

दुर्ग्यसनी लोगों का कहीं नाम न था। हाँ, प्रातःकाल रजिया मीठे-मीठे शब्दों में परमात्मा का भजन गाती थी। यद्यपि रजिया सुसलमान थी पर भजन हिन्दी के होते और हृदय पर उनका बड़ा प्रभाव पड़ता था। इन भजनों ने सौदामिनी पर बड़ा असर डाला। जिस समय रजिया गाने लगती सौदामिनी की ऐसी इच्छा होती कि इसके चरणों पर अपने को न्यौछावर कर दूँ।

रात्रि का समय था। नौ बजे होंगे। सौदामिनी पलंग पर पड़ी थी। घर में कोई न था। आज रजिया कहीं निमंत्रण में गयी थी। मकान में सन्नाटा पाकर सौदामिनी का चित्त बड़ा उद्धिग्न था। वह अपने पतितावस्था और भविष्य निर्माण पर तर्क-वितर्क करने लगी। परन्तु घण्टों बीत जाने पर भी वह कुछ निश्चय न कर सकी। अन्त में व्यग्र होकर परमेश्वर की याद करने लगी। रजिया के नित्य प्रति के गाने का एक पद—करम गति टारे नाहिं टरे,—को जोर-जोर से गाने लगी। वास्तव में इस पद ने उसके जलते हुए हृदय को शान्ति दी। सौदामिनी गाने में मस्त थी कि कुबड़ी आकर उसके सिरहाने बैठ गयी। जब गाना समाप्त हुआ तो कुबड़ी ने तारीफ करनी शुरू की। वाह बीबी वाह! आप तो बड़ा अच्छा गाती हैं। मालकिन को भी मात कर दिया। मालकिन के साथ अभ्यास क्यों नहीं करती? मैंने तो ऐसा मीठा गला ही किसी का नहीं देखा।

एक-सौ सत्तर

जीवन का शाप

इतना कहकर वह सौदामिनी की देह दवाने लगी। सौदामिनी ने अपने गाने पर लज्जित होकर कहा—क्यों बनाती हो ? मैं भला गाना-बजाना क्या जानूँ और गाने-बजाने की मुझे जरूरत ही क्या ?

कुबड़ी—जरूरत हो या न हो पर हुनर तो है। पास रहेगा तो काम ही देगा।

सौदा०—मुझे इसकी रोटी थोड़े ही खानी है।

कुबड़ी—सब काम रोटी ही के लिये थोड़े किया जाता है। इससे अपना भी चित्त बहल जाता है और दूसरे भी प्रसन्न होते हैं। ऐसा अच्छा स्वर पाकर, अगर आपने गाने का अभ्यास न किया तो कुछ न किया। मैं बुढ़ी हो गयी फिर भी जिस समय गाने लगती हूँ, मालूम होता है स्वर्ग में बैठी हूँ।

सौदामिनी ने सोचा कुबड़ी बात तो ठीक कहती है। गान-विद्या के समान मोहिनी-शक्ति अन्य किसी भी विद्या में नहीं। मैं ही कैसी उद्विग्न थी, ज्योंही गाने लगी, सारी चिन्तायें आप-से-आप दूर हो गयीं। बोली—अच्छा गाओ तो सुनूँ।

कुबड़ी—मैं मुफ्त नहीं गाती। आप कुछ दें तो गाऊँ।

सौदा०—मेरे पास क्या धरा है जो तुम्हें दूँ। मैं तो आप पराये घर पड़ी हूँ।

कुबड़ी आप ऐसा क्यों कहती हैं ? मालकिन तो आपको अपनी

एक-सौ एकहत्तर

जीवन का शाप

लड़की समझती हैं । अब तो यह आप ही का घर है ।

सौदा०—नहीं कुबड़ी, मैं यहाँ अधिक नहीं रह सकती । जो सुनेगा वह क्या कहेगा ? सभी एक स्वर में कहेंगे वेश्या हो गयी ।

कुबड़ी—तुमसे वेश्या होने को कौन कहता है ? फिर हमारी मालकिन कितनी धार्मिक हैं, यह तो देखती ही हो । वेश्या कर्म न करे तो भी वह वेश्या ही कही जाय यह कितना अन्याय है ? भला बताओ तो कितने गृहस्थ इतना धर्म-कर्म करते होंगे ?

सौदामिनी अपनी बात पर कुछ लज्जित हुई और बोली—
नहीं कुबड़ी मेरा मतलब अम्मा को दोष देने का नहीं, फिर भी कहा है 'काजर की कोठरी में कैसहू सयानो जाय काजर की रेख लागिहै वै लागिहै ।' तुम्हीं बताओ यहाँ देखकर मुझे लोग क्या कहेंगे ?

कुबड़ी—मालकिन ने तुम्हारी प्राण-रक्षा की है । बेटी बनाकर रखना चाहती हैं । तुम्हारे धर्म पर भी किसी तरह का दबाव नहीं डाल रही हैं फिर भी ऐसा आश्रय छोड़कर चली जाओ तो नादानो है । तुमसे वेश्या होने को तो कोई कहता नहीं, रह गयी नाम-धराई सो इसी दशा में कौन तुम नामवरी पा लोगी ? जहाँ जाओगी लोग उँगली दिखायेंगे ही । तुम्हें सती कहकर कौन पुकारेगा ?

सौदामिनी कुबड़ी की बात से तिलमिला उठी । बात कटु थी, परन्तु थी सत्य । संसार में वह चाहे जहाँ जितना धर्म-कर्म करे, पर कुलटा की उपाधि सर्वत्र उसके साथ लगे रहेगी । पिता का

एक-सौ बहत्तर

जीवन का साप

आश्रय त्यागकर जो सर्वमाश हुआ वह सब देख चुकी थी, अब एक माता उसके लिये अपनी गोद में शरण देने के लिये प्रस्तुत है, इस आश्रय को छोड़कर संसार में कहाँ भीख माँगती फिरगी ? इसमें बदनामी अवश्य थी, पर सुख था और साथ-ही-साथ धार्मिक-जीवन व्यतीत हो सकता था। सौदामिनी ने चाहे पुण्य किया हो वा पाप, चाहे दुनिया उसे कुलटा क्यों न कहे, पर अभी तक उसने धार्मिक-जीवन ही व्यतीत किया था। एक की होकर रही थी और उसीको अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था। सोचने लगी—अब अगर इस घर से निकली तो और न जाने क्या भोगना होगा ? न जाने कितनी ठोकरें खानी पड़ेगी।

कुवड़ी ने देखा मंत्र काम कर रहा है। बोली—क्या बुरा मान गयीं ?

सौदा०—नहीं बुरा क्यों मानूँगी ? ठीक ही कहती हो। मेरे लिये इस दुनिया में कहाँ ठिकाना है ?

कुवड़ी—बेटी दुखी क्यों होती हो ? यहाँ रहने पर दूधों कुल्ला करोगी। हमारी मालकिन जैसी सीधी तो शायद ही कोई मिले।

सौदा०—इसमें तो सन्देह नहीं।

कुवड़ी—तब विचार किस बात का है ?

सौदा०—कुछ भी नहीं।

कुवड़ी—रहोगी न।

सौदा०—जाऊँगी कहाँ ?

एक-सौ तिहत्तर

२९

दूसरे दिन सबेरे कुवड़ी ने रजिया से कहा—मालकिन ! नयी बीबी बड़ा अच्छा गाती हैं, इनका स्वर बड़ा सुरीला है, इन्हें आप गाना बजाना सिखाइये ।

सौदामिनी को रजिया स्वयं गान-विद्या की शिखा देने लगी । सौदामिनी केवल भजन सीखती । उसने इस बात की प्रतिज्ञा करा ली थी कि वह दूसरों के सामने गाने के लिये वाध्य न करेगी । सौदामिनी स्वभाव से ही बड़ी चतुर थी । तीन ही मास के परिश्रम से वह गायन-कला में रजिया से भी आगे निकल गयी । रजिया

एक-सौ चौहतर

जीवन का शाप

कहीं गाने न जाती, इसलिये सौदामिनी को भी इस बात का भय न था कि किसी के सामने उसे गाना पड़ेगा। हाँ, वह एकांत में गा-बजाकर अपने चित्त को अवश्य बहला लिया करती।

रजिया के यहां इतने सुख का साधन होने पर भी रजनिकांत के प्रति उसके हृदय में जो द्वेषाग्नि प्रज्वलित हो रही थी, शान्त न हुई। जब उसने रजिया से इतना सुना कि उसने सब बातें ठीक-ठीक स्वीकार कर लीं, फलतः तीन वर्ष कठोर कारावास का दण्ड मिला है, तो उसके सत्य कह देने पर सौदामिनी को बड़ी दया आयी, पर कोई वश न था।

रजिया सौदामिनी को पुत्री के समान मानती थी। जहाँ जाती उसे अपने साथ ले जाती। अब उसे अपना सारा पिछला कष्ट भूल-सा गया था। रजिया गाने-बजाने के साथ-साथ उसे धार्मिक शिक्षा भी दिया करती और एक वेश्या से धर्म की बातें सुनकर सौदामिनी को बड़ा आश्चर्य होता।

दशहरा का अवसर था। चारों ओर दुर्गापूजन की धूम थी। बंगालियों के यहां कई दिनों तक बड़े समारोह के साथ यह पर्ववाली मनाई जाती है। नाच-गाने भी हुआ करते हैं।

एक दिन रजिया अपने एक पुराने परिचित के यहाँ गाने गई। सौदामिनी भी साथ गयी। यों तो रजिया कहीं न जाती थी, परन्तु इन बंगाली ढाबू से उसने अतुल सम्पत्ति पाई थी, अस्वीकार न एक-सौ पचहत्तर

जीवन का शाप

कर सकी। हजारों आदमियों की भीड़ थी। लगभग बारह बजे रजिया का गाना प्रारम्भ हुआ। चारों ओर से वाहवाही होने लगी। रजिया की तारीफ सुनकर सौदामिनी को भी अनपेक्षित प्रशंसा करने की इच्छा उत्पन्न हुई। इसी बीच रजिया ने उससे कहा—
बेटी ! देवी के सामने भजन माने में क्या संकोच ? तुम भी कुछ सुनाओ ।

सौदामिनी बड़े धर्म-संकट में पड़ी। एक ओर लज्जा उसे दबा रही थी और दूसरी ओर वाहवाही की आशा उसे अपनी ओर खींच रही थी।

रजिया की बात सुनकर वृद्ध बंगाली बाबू ने भी बड़ा आग्रह किया। सौदामिनी को अपना व्रत तोड़ना पड़ा। उसने अपने हृदय को कड़ा किया। सोचा—वैश्या पुत्री तो कही ही जाऊँगी। फिर क्यों न देवी के सामने एक गीत गाकर लोगों को मुग्ध करूँ ?

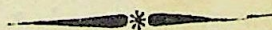
सौदामिनी उस समय एक श्वेत सिल्क की साड़ी पहिने थी, फिर भी बिजली के प्रकाश में एक विचित्र प्रकार की ज्योत्स्ना उसके शरीर से निकल कर लोगों को मुग्ध कर रही थी। गाना प्रारम्भ हुआ। सौदामिनी ने समा बाँध दिया। लगभग दो घण्टों तक उसने भजन-ही-भजन गाये। जिस समय गाना प्रारम्भ होता लोग ऐसे शान्त हो जाते कि सूई गिरने का शब्द भी सरलता से सुना जा सकता था। लोगों की इच्छा रहते हुए भी सौदामिनी को रजिया

एक-सौ ब्रिहत्तर

जीवन का शाप

की आज्ञा से गाना बन्द कर देना पड़ा । महोत्सव की समाप्ति के बाद दर्शकों ने अपने घर का रास्ता लिया ।

अब से सौदामिनी को एक विचित्र धुन सवार हो गयी । दुनिया में नाम के लिये लोग क्या नहीं करते ? दुनिया में नाम करने के लिये दानी दान देकर फकीर हो जाते हैं । अमीर लोग केवल राय-बहादुरी और सौ बहादुरी के लिये अपना सर्वस्व लुटा देते हैं । योद्धा नाम के लिये हँसते-हँसते अपनी बलि दे देते हैं । फिर ऐसा सुयोग पाकर सौदामिनी नाम क्यों न कमाये ? इस समय उसे नाम कमाने की शक सवार थी । उत्सव में उसकी जैसी प्रशंसा हुई थी उससे वह फूली न समाती थी । सबसे अधिक प्रशंसा कुवड़ी और रजिया किया करतीं । अब आये दिन किसी-न-किसी राजा रईस के यहाँ से उसे बुलावा आता और वह जाकर धन तथा यश दोनों अर्जन करती । उसे जितनी धन की लिप्सा न थी, उससे कहीं अधिक यश की लालसा थी । अब इस घर में उसका आदर पहिले से बहुत बढ़ गया । इसी तरह सालों बीत गये ।



एक-सौ सतहतर

३०

राजा भिखारीदास के यहाँ आज सुलेमानी वेश्या का गाना होने वाला है। बड़े-बड़े रईसों का जमघट है। भैरो भी काशी से आया था। सुलेमानी की उसने बड़ी प्रशंसा सुनी थी। वह भी महफिल में अपने एक रईस मित्र के साथ आकर डट गया। सुलेमानी वेश्या ने बड़े हाव-भाव से महफिल में प्रवेश किया। भैरो सुलेमानी को देखते ही अवाक् रह गया। यह वही उसकी पूर्व परिचिता सौदामिनी थी। यह क्या परिवर्तन? क्या मेरे अस्वीकार करने से इसने वेश्यावृत्ति धारण कर ली। भैरो बड़ी कठिनाई से

एक-सौ अठहत्तर

जीवन का यात्रा

लकिये का सहारा लिये बैठा रहा ।

सौदामिनी की गान-विद्या की निपुणता पर भैरो को अतीव आश्चर्य हुआ । अकस्मात् सौदामिनी की भी दृष्टि भैरो पर पड़ी ।

भैरो के देखते ही उसकी मुद्रा में पृथ्वी-आकाश का अन्तर पड़ गया । वह सिर दर्द का वहाना कर घर चली गयी ।

दूसरे दिन सबेरे ही भैरो सुलेमानी का पता लगाता कोठे पर पहुँचा । कुबड़ी ने सौदामिनी को एक व्यक्ति के आने की सूचना दी ।

सौदामिनी प्रसन्नतापूर्वक ऊपर से उतरी, पर भैरो को देखते ही उसके होश उड़ गये । अचञ्चल से मुख झिपाकर वहीं बैठ गयी । भैरो ने उसको सान्त्वना-पूर्ण शब्दों में कहा—बहिन तुम्हें क्या कमी थी जो ऐसा करने की आवश्यकता पड़ी ? जब से तुम चली आयी हो, घर मिट्टी होता जा रहा है । एक तरफ पिताजी तड़प रहे हैं तो दूसरी ओर माताजी चारपाई तोड़ रही हैं । सालों तक तुम्हारी खोज करने के पश्चात् हम सब निराश हो गये । अब दर्शन होने पर तुम्हें दूसरे धर्म में दीक्षित और पतन की ओर अप्रसर होते देख रहा हूँ । कैसी विडम्बना है भगवान की ? तुम्हें पतन के इस गहरे कूप में ढकेलने वाला पापी कौन है ?

लज्जा और रज्जानि ने सौदामिनी को मौन रहने के लिये बाध्य किया । आँखों से आसुओं की अविरत धारा बहने लगी । उत्तर देने का साहस नहीं हुआ । परन्तु भैरो के समझाने के लिये शतत प्रयत्न एक-सौ उन्यासी

जीवन का शाप

करने पर उसकी जिह्वा खुली ।

उसने अपनी कसूर कहानी आद्योपान्त कह सुनायी । अन्त में अस्फुट शब्दों में वह बोली—विश्वास करना अथवा न करना तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है, परन्तु सौगन्ध-पूर्वक कहती हूँ कि मैं न तो मुसलमान हुई हूँ और न रजनीकांत के अतिरिक्त अभी तक मेरा और किसी से अनुचित सम्बन्ध हुआ है । मैं मुसलमान के यहाँ रहती हूँ इसीलिये लोग मुझे मुलेमानी कहकर पुकारते हैं । वेस्यावृत्ति करती हूँ, इसीलिये मुझपर कोई विश्वास नहीं करता ।

भैरो—जो कुछ हो चुका उसे भूल जाओ और अपने घर वापस चलो ।

सौदा०—अब मेरे लिये वहाँ स्थान कहाँ ? मेरा सर्वनाश मेरे वमण्ड के कारण हुआ । घर न छोड़ती तो ऐसा क्यों होता, पर अब एक अच्छा आश्रय मिल गया है, किसी तरह जीवन के शेष दिन काट लूँगी ।

भैरो—तुम्हारे सर्वनाश का कारण मैं हूँ । यदि मैं तुम्हारी बात मान जाता तो क्यों यह दिन देखना पड़ता ?

सौदा०—नहीं, भूलते हो भैरो ! ईश्वर की इच्छा प्रबल है । उसी के संकेत से सृष्टि-क्रम चल रहा है । जो कुछ वह करता है, अच्छा करता है । मैं इसी अवस्था में सन्तुष्ट हूँ । यदि मेरे लिये तुम्हारे हृदय में कुछ भी स्थान है तो मैं तुमसे अनुरोध करूँगी

एक-सौ अस्सी

जीवन का शाप

कि तुम अब से ऐसी काम करो जिससे मेरे समान अन्य विधवाओं का सर्वनाश न हो। इन सुधारकों से तो और भी डर लगता है। रजनोकांत ने मुझे इस परिस्थिति में छोड़ दिया कि मेरे लिये इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग ही न था।

भैरो—यदि वह धूर्त मिलता तो उससे प्रतिशोध लिये बिना न रहता। उसने ही मुझे विधवा विवाह का पाठ पढ़ाया और उसकी यह काली करतूत !

सौदा०—शान्ति धारण करो भैरो ! अपने कर्मों का फल वह भोग रहा है और भोगेगा। परमात्मा उसे स्वयं दण्ड देगा। कलुषित हृदय वाले व्यक्ति पर हाथ छोड़कर अपनी आत्मा को कलुषित बनाने का विचार त्याग दो।

भैरो को सौदामिनी के इस उच्च विचार पर आश्चर्य हुआ। और साथ ही श्रद्धा भी हुई। सौदामिनी को घर वापस चलने के लिये भैरो ने बहुत आप्रह किया, परन्तु उसने नहीं से हों नहीं किया। उदासीन हृदय से भैरो ने विदा माँगी। सौदामिनी कुछ न बोली, परन्तु जाते-जाते उसने अवरुद्ध कण्ठ से इतना अवश्य कहा—कमला का ख्याल रखना।



एक-सौ एक्यासी

३१

भैरो ने घर पहुँचकर लालाजी को सौदामिनी के पतन की सूचना दी। लालाजी और सुशीलादेवी को यह समाचार सुनकर हार्दिक वेदना हुई। लालाजी को तो इतना क्रोध आया कि यदि सौदामिनी उनके सामने होती तो शायद उसका गला घोटकर मार डालते, परन्तु भैरो ने उन्हें बहुत समझाया और कहा कि यह सब हमारी सामाजिक कुरीतियोंका परिणाम है। समाज विधवा-विवाह की आज्ञा न देकर उन्हें पथ का भिखारी बनाता है। समाज यदि यह प्रतिबन्ध हटा दे तो ऐसी घटनायें कभी न हों। इन सब के दोषी हम

एक-सौ बयासी

जीवन का शाप

हैं। विधवाओं का कोई दोष नहीं। आप वृद्ध हैं, दुनिया देख चुके हैं। शान्ति से काम लीजिये।

भैरो के समझाने से यद्यपि उन्हें धैर्य हुआ, परन्तु लालाजी के हृदय की ज्वाला शान्त न हुई। सौदामिनी के पतन से लालाजी के हृदय में दृढ़ विश्वास हो गया कि जब तक समाज-सुधार न होगा नित्य ही ऐसी घटनायें घटती रहेंगी। लालाजी ने भैरो से कहा अब मेरा अन्तिम समय है। तुम्हारा विवाह हो जाय तो मैं पौत्र का मुँह देख लूँ।

भैरो—आप तो मेरा व्रत जानते ही हैं।

लाला—जानता हूँ। तुम विधवा विवाह करना चाहते हो। अच्छा मैं तुम्हारे मन की ही बात कहूँगा और वह यह कि बहू को अपनी जीवन-संगिनी बनाओ। मैं समझूँगा कि श्रीकांत ही दूसरा कलेवर धारण करके आया है।

भैरो का हृदय अलौकिक आनन्द से ओत-प्रोत होगया। मुखाकृति पर मुस्कराहट की रेखा दौड़ गयी।

लाला के आवरण को हटाते हुए भैरो ने कहा—समाज के बन्धन को तो आप जानते ही हैं। क्या समाज की व्यंगोक्तियों को सहन करने के लिये आप तैयार हैं।

लाला—समाज की वेदी पर एक कन्या का बलिदान हो चुका। अब भी समाज का मुँह देखता हुआ दूसरी का बलिदान होने दूँ? मैं अमर नहीं होकर आया हूँ। एक बाल-विधवा बहू की रक्षा का एक-सौ तिरासी

जीवन का शाप

भार कौन लेगा ? मैं जानता हूँ कि तुम जीवन-पर्यन्त शुद्ध आचरण-पूर्वक उसकी रक्षा करने के योग्य हो, पर इससे दोनों के जीवन का कोई लक्ष्य न रहेगा और ऐसी दशा में न जाने किसकी क्या गति हो ? इसलिये व्यतीत की चिन्ता छोड़कर भविष्य का विचार करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ और तुम दोनों को एक सूत्र में बाँध देना चाहता हूँ ।

सुशीला देवी ने इस प्रस्ताव पर अपनी कोई राय न दी । कमला तो हृदय से यही चाहती ही थी । अतः वैदिक रीति से विवाह होने की बात निश्चित हो गयी ।

सम्बन्धियों ने बहुत आपत्ति की और विघ्न डालने में भी कोई प्रयत्न नहीं छोड़ रखा, परन्तु लालाजी ने किसी की कुछ भी परवाह न की । विवाहोत्सव धूमधाम से हुआ, परन्तु न जातिवाले ही सम्मिलित हुए और न लालाजी ने किसी से विशेष आग्रह ही किया । कहने लगे—क्या जहाँ मुर्गा नहीं बोलता वहाँ सबेरा नहीं होता । ये जाति के भुक्खड़ न खायेंगे तो क्या कोई काम ही न होगा ? भोजन के अतिरिक्त इन जातिवालों से और किस सहायता की आशा की जा सकती है । आज दिन कोई विपत्ति आ पड़े तो सहानुभूति प्रदर्शन करने बड़बड़े हँसी उड़ायेंगे । सौदामिनी चली गयी, इनका कुछ नहीं ले गयी, पर सिवाय हँसी उड़ाने के और क्या सहायता कर दी ? मुझे किसी की परवाह नहीं ।

एक-सौ चौरासी

जीवन का शाप

विवाह हो गया। सुशीला तटस्थ थी। किसी काम में उन्होंने भाग न लिया। लालाजी ने बड़े उत्साह से सब कार्य किया। कमला और भैरो की प्रसन्नता का वारापार न था।

रात्रि के समय एकांत में भैरो ने कमला से पूछा—कहो, प्रसन्न हो न ?

कमला स्त्री-सुलभ लजा से बोली—प्रसन्न क्यों न होऊँगी ? आराध्य देव को पाकर कौन स्त्री उल्लसित न होगी ?

विवाह के पश्चात् कमला बहुत ही प्रसन्न चित्त रहने लगी। वह सास-ससुर की बड़ी सेवा करती और भैरो को नित्य ही नये शृङ्गार तथा निष्कपट प्रेम से प्रसन्न रखती। लालाजी तथा सुशीलादेवी दोनों ही उससे बड़े खुश रहते तथा आशीर्वाद दिया करते।

कुछ ही दिनों में कमला गर्भवती हुई। समय पर एक पुत्र उत्पन्न हुआ। लालाजी की पौत्र के सुख की इच्छा भी पूर्ण हुई। अब घर में शान्ति और प्रसन्नता तथा लक्ष्मी का पूर्ण वास था। बालक के आगमन से जो कमी थी वह भी पूरी हो गयी।

वृद्ध दम्पति के लिये संसार में ईश्वर का भजन तथा बाज-कीड़ा का आनन्द लेने के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य न था।

इस प्रकार तीन वर्ष तक सब सुखों का आनन्द उठाकर दोनों तीन मास के आगे-पीछे परजोक सिधारे। भैरो ने अन्तर्वेष्टि-संस्कार बड़े ही समारोह से किया।

एक-सौ पचासी

उपसंहार

दुनिया अपने रंग में मस्त रहती है । किसी को एक दूसरे की चिन्ता नहीं । संसार में सौदामिनी की-सी न जाने कितनी विधवायें वेद्व्या-वृत्ति करने लग जाती हैं । कमला की-सी न जाने कितनी युव-तियाँ अधखिली अवस्था में ही वैधव्य की कठोर शृङ्खलता में आबद्ध हो जाती हैं । भैरव से कितने ही युवक विधवा-विवाहादि करके सुधार करने का प्रयत्न करते रहते हैं । दुनिया में किसी को अपने ही से अवकाश नहीं जो दूसरे की चिन्ता करे । हाँ, समाज की उठती हुई चक्षिक लहरों का साथ दे देना और फिर घर में चुप बैठा रहना

एक-सौ छियासी

जीवन का शाप

ही आजकल की दुनिया है ।

भैरो को ईश्वर की दया से किसी बात की कमी नहीं । लक्ष्मी हाथ बाँधे खड़ी रहती है । इस समय सन्तान भी दो हैं । व्यापार में उत्तरोत्तर वृद्धि है । फिर ऐसी अवस्था में यदि वह सौदामिनी को भूल जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं ।

राधेकांत के स्वर्गवास हुए पाँच वर्ष बीत चुके थे । हरद्वार में कुम्भ मेला था । भैरो भी सकुटुम्भ स्नान के लिये हरद्वार पहुँचे । बड़े आनन्द से कुम्भ स्नान हुआ । एक सप्ताह वहीं रहना स्थिर हुआ ।

रात लगभग दस बज गये थे । भीड़ क्रमशः घटती जा रही थी । सामने नदी कल-कल करती तीव्रगति से बहती चली जा रही थी । भैरो संध्या से ही एक सीढ़ी पर बैठे-बैठे नदी के जल-प्रवाह को दृष्टांत हो देख रहे थे । नदी का कलकल गान उनकी हृत्तन्त्री को भ्रुकृत कर रहा था । उन्हें अतीत की याद आ रही थी । कमला का प्रेम क्षण-क्षण पर हृदय में सुन्दर राग उत्पन्न कर रहा था । इस समय उन्हें यह याद न रहा कि मैं कहाँ हूँ और धर्मशाला पहुँचने का समय हो गया अथवा नहीं । सहसा पीछे से किसी ने उनकी आँखें मूँद ली । भैरो ने मुस्कुराते हुए कहा—पहचान गया, तुम मन्हें की अम्माँ हो, अब छोड़ो ।

कमला ने हँसकर हाथ हटा लिया । वह हँसी नदी की कलक

एक-सौ सत्तासी

जीवन का शाप

ध्वनि से कम सुखदायी न थी। भैरो के हृदय की कलियाँ खिल उठीं।

कमला ने पूछा—इतनी देर क्यों हुई? धर्मशाले में मैं तुम्हारी राह देखती-देखती थक गई।

भैरो ने मुस्करा कर कहा—थक गई तो आओ बैठ जाओ, सुस्ता लो।

कमला—तुम्हारा दर्शन कर थकावट दूर हो गई। अब तो उठो, क्या सोच रहे हो?

भैरो—कुछ नहीं, आज यहाँ से उठने का जी नहीं चाहता। नदी कैसी प्रसन्न है? कैसा राग अलाप रही है? कैसी प्रसन्नतापूर्वक अपने प्रियतम समुद्र के दर्शन के लिये चली जा रही है। क्या सभी स्त्रियाँ पति के घर जाने में ऐसी ही प्रसन्न होती हैं?

कमला—यदि यह विश्वास हो कि वहाँ समुचित आदर होगा?

भैरो—तुमको तो जब मैंने गाढ़ी पर देखा था, प्रसन्न न थीं।

कमला को आसँ सजल हो आर्थी। बोली—प्रियतम उन बीती हुई बातों को जाने दो।

भैरो—बहुत अच्छा अब तो प्रसन्न हो।

कमला—इसका भी प्रमाण देना होगा?

भैरो—कभी भाई साहब की याद आती है या नहीं?

कमला—वह देवता थे, तुम मेरे हृदयेश्वर हो। उनकी पूजा करती हूँ, तुमसे अनुराग करती हूँ। उनकी आज्ञा थी तुमने पाजन

एक-सौ अट्ठासी

करने में सहायता दी ।

भैरो—क्या वास्तव में वे तुम्हें पुनर्विवाह की आज्ञा दे गये थे ?
यदि ऐसा है तो वास्तव में वह देवता थे ।

कमला कुछ और कहना ही चाहती थी कि सहसा गाने की मनो-
मुग्धकारी ध्वनि कर्णगोचर हुई। भैरो ने कहा—यह तो सुना हुआ स्वर
मालूम होता है । कितना सुन्दर गाना है ? चलो देखें, वह ध्वनि कहाँ
से आ रही है ?

दोनों स्वर का लक्ष्य कर चले । थोड़ी ही दूर पर एक भिच्छुका
बैठी गा रही थी—‘करम गति टारे नाहिं टरे ।’—भिच्छुका युवती
थी, परन्तु उसकी आकृति शीतला के दाग से विकृत हो गयी थी ।
मुख पर बड़े-बड़े चकोटे पड़ गये थे । उसके वस्त्र फटे और मलीन थे ।
भैरो ने उसे स्वर से पहचानकर कमला से कहा—अरे यह तो सौदा-
मिनी है ।

भिस्वारिणी के कानों तक भैरो के ये शब्द पहुँच गये । चकपका-
कर देखा तो सामने भैरो और कमला को पाया ।

भैरो ने पूछा—बहिन, यहाँ कैसे ?

सौदामिनी ने सिर नीचाकर कहा—अपने किये का फल भोग
रही हूँ ।

भैरो—तुम्हारी यह दशा कैसे हुई ?

सौदा०—दुःख में मित्र भी शत्रु हो जाते हैं । ज्योंही शी

एक-सौ नवासी

जीवन का शाप

ने कृपा की छुतहे अस्पताल पहुँचा दी गयी। ईश्वर के यहाँ ही मुझ अभागिन के लिये स्थान न था, फिर दूसरा कौन बात पूछता संसार में कहीं स्थान न मिला। अच्छी थी तो बड़े-बड़े राजे महारचरणों पर मस्तक रखते थे, अब जिसके सामने खड़ी होती हूँ वृणा से मुँह फेर लेता है। यहाँ गंगा तट पर पड़ी रहती हूँ। ईश्वर का गुण गाती हूँ, रुखा सूखा भोजन मित्र ही जाता है। इतना कहते वह फूटकर रोने लगी।

भैरो ने उसे सांत्वना दी। उसे साथ कानपुर लिवा गये कमला को भी उसपर बड़ी दया आयी। सौदामिनी ने अपना शेष जीवन बच्चों को सेवा तथा ईश्वर के भजन में व्यतीत किया। एबार रजनीकांत के दर्शन की लाजसा यावज्जीवन उसके हृदय में बनी रही। भैरो के बहुत पता चज्ञाने पर इतना ही माजूम हो सका कि उन्होंने जेल से निकलते ही सन्यास ग्रहण कर बदिकाश्रम की यात्रा की। उसके पश्चात् उनका कोई पता नहीं चज्ञा।

